दीवान ✆6911P.P.
स्टेशनरी एवं
फोटो कापी
मुंगेली नाका - बिलासपुर

बिलासपुर (के कार्यक्रम - जीवन विद्या)

बिलासपुर - जीवन विद्या कार्यक्रम

a) → जेल
b) → आशा अभियान (तालापारा)
c) → मालविका स्टील

No. Cobra

NEEL ®
SAGAR

(1)

माननीय हर्ष मंदर जी
आयुक्त, बिलासपुर संभाग.

नित्य उत्सव कामना।

आपके प्रेरणा से आदर्श प्रथम श्रेणी जिला जेल बिलासपुर में 15 से 22 फरवरी तक 'जीवन विद्या अध्ययन शिविर' का आयोजन हुआ। 25 शिविरार्थी भाग लिए। शिविर का समय प्रातः 9 से साढ़ेबारह एवं 2 से साढ़े चार रहा।

शिविर में अध्ययन के निम्न बिंदु रहे –

(अ) सभी मनुष्य में जीवन बल, जीवन शक्ति. जीवन लक्ष्य समान है एवं सभी मनुष्य जीवन और शरीर का संयुक्त साकार रूप है। शरीर सीमीत शक्ति व बल सम्पन्न है जबकि जीवन अक्षय बल व शक्ति सम्पन्न है।

(ब) प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही न्याय का याचक, सही करने का इच्छुक व सत्य वक्ता होता है। परंपरा में न्याय, सही कार्य-व्यवहार व सत्य बोध न होने के कारण मनुष्य गलती और अपराध करता है।

(स) मानव का मानव से सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों (विश्वास, स्नेह, सम्मान आदि) का निर्वाह, परस्पर मूल्यांकन व उभय तृप्ति होना ही न्याय है।

(द) प्राकृतिक नियम का पालन ही सही कार्य, एवं सामाजिक नियम का पालन ही सही व्यवहार है।

"प्रकृति में उत्पादन के अनुपात में खनिज, वनस्पति व जल का उपयोग व उत्पादन में सहायक होना" ही प्राकृतिक नियम है।

"स्व धन, स्व नारी/पुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार" ही सामाजिक नियम है।

इन नियमों के पालन से मनुष्य निरंतर सुखी अन्यथा दुःख व विरोध की पीड़ा से ग्रस्त है।

(ई) सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व का स्वरूप है। यह

(कृपया पृ. 2 पर देखें)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सहअस्तित्व के रूप में नित्य वर्तमान है। अस्तित्व ही सत्य है।

शिविर में अध्ययन की विधि-चर्चा, प्रश्न-उत्तर रही। सभी शिविरार्थी को एक-एक मुद्दा स्वीकृत होने पर ही आगे के मुद्दों पर विचार किया गया।

यहाँ भी मुझे यही अनुभव हुआ कि प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास) और सह-अस्तित्व है। सभी मनुष्य इन तथ्यों के बोध के लिए प्रयासरत है। प्रत्येक मनुष्य अखण्ड समाज में जीना चाहता है तथा सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना चाहता है। पर आज की परिस्थिति में खण्ड-खण्ड समुदाय व संकुचित भीति त्रय में जीने के लिए विवश हैं, फलतः गलती व अपराध का प्रकाशन है।

शिविर में आपके गरिमामय उपस्थिति की अपेक्षा रही है। आपके उपस्थिति से शिविरार्थीयों के प्रयास व जिज्ञासा का मूल्यांकन होने पर सभी संतुष्ट होते। साथ ही मेरी प्रस्तुति का मूल्यांकन भी होता, जिससे मेरे उत्साह में वृद्धि होती।

शिविर के आयोजन में आपकी प्रेरणा प्रमुख रही है। साथ ही जेल के अधिकारियों व कर्मचारियों का सहयोग प्रसंशनीय है। शिविरार्थी व अन्य कैदियों के जिज्ञासा व सहयोग से मुझे सुख हुआ है।

धन्यवाद

आपका

साधन

द्वारा- श्री ए. नागराज शर्मा
कटारे धर्मशाला
पो० - अमरकण्टक
जिला - शहडोल (म.प्र.)

संलग्न-
परिशिष्ट-1 - शिविरार्थीयों के नाम
परिशिष्ट-2 - शिविरार्थीयों की टिप्पणी

जीवन विद्या ज्ञान

मेरा नाम गोविन्द उर्फ लालाराम सूर्यवंशी ग्राम लखमा थाना सरकंडा का रहने वाला हूँ। जो कि मास्टर जी आदर्श प्रथम श्रेणी जिला जेल बिलासपुर में आये हुए थे। महाचार्य जी दुनिया में महान ज्ञानी के रूप में हैं। जो हम लोगों के सामने प्रकट हुआ है। महाचार्य जी ज्ञान का मार्गदर्शन कराया। मैं जेल के अन्दर रहूँ या जेल के बाहर कहीं जाऊँ रहूँ हर व्यक्ति को यही सुझाव दूँगा कि परिवार में इज्जत से रहना, व्यवहारिकता न्याय, रीत संग, सत्य, कृपा, प्रकृति लाभ हानि, उत्पादन इत्यादि ऐसे हमें ज्ञान दर्शन कराया। अगर मेरे को यह ज्ञान बाहर में रहता तो जो भी गलत काम किया हूँ वह गलत काम नहीं होता। यह ज्ञान मेरे शरीर के अन्दर भिन गया है कलेक्टर साहब से अनुरोध है कि जेल में जो भी प्रगति हुआ है और किसी जेल में नहीं हुआ है। कलेक्टर साहब अनुरोध करता कि महाचार्य जी को एक सप्ताह और रोका जाये ताकि हमें ज्ञान और पूरी पूरी हो जाये

गलतियों पर ध्यान न दे कर आगे बढ़ने की कोशिश करें।

गोविन्द सूर्यवंशी

नाम :- श्री मानू साधन कुमार भट्टाचार्य
श्री मानू शिक्षक गुरु जी से
प्रार्थना है कि जो शब्द पढ़ाते हमें
मानव सम्बन्ध के बारे में और व्यवहार के प्रति
तथा जानना पहचानना और आत्मा के प्रति समाज
प्रवचन प्रवचन कितने प्रकार कि मनुष्य और अन्य पर
शब्द पढ़ाये सिखाये हैं जो हमारे दिल में मन में सफलता और सुद्धता
निर्मल ज्ञान अच्छा लगा इसी प्रकार पढ़ाने सिखाने महिने में आकर
उपदेश शिक्षा देने कि कृपा करें। यही मेरा करबद्ध प्रार्थना है।
जो कि आगे चलकर हमारे जीवन कि सफल हो।
मुझे इस सुझाव में मुझे इतना आनन्द आया ~~और~~ कि मैं गाँव
में रहूं या कही भी जगह रहूं कि मैं
किसी भी व्यक्ति को ज्ञान का सागर के
बारे मे भट्टाचार्य जी ~~समझाया और~~ है इसके
बारे में ~~इ~~ समझाया है उसे मैं हर व्यक्ति
को मैं इसके बारे में ज्ञान को सिखाऊंगा।
और बताऊंगा।

अर्जी
चरनलाल कल्याण
22-2-98

जीवन विद्या शिविर

मनुष्य ५८ स्थिति में जीते हैं। लेकिन कैसे
जीते हैं इस बात के पता ~~कुछ~~ मनुष्य के अंदर
जानकारी नहीं है। अगर इसे सभी मनुष्य
जाने और पहचाने और माने तो दुख की
कोई प्रश्न आने की जरूरत ही नहीं ऐसे
मेरे समझ में आया है। मैं एक इच्छा के शिविर
को सभी जगह चलाना चाहिए ताकि न्याय
तथा सत्य को जान कर सभी लोग सामाजिक
तथा स्वावलंबी बने इस के लिए मैं आप लोगों का
आभारी हूं। 7 दिन के में मेरा अनुभव है कि मेरे परिवार
तथा गांव को समझ लूंगा
इतना समझ में आया है यह
निरंतर चलता रहे।

आदर्श जेल में के ज्ञान
श्रद्धेय जी से प्राप्त हुआ

आपका शुभेच्छु राही
गजेन्द्राराम भारतद्वाज नजाग
कनेरी थाना चाटापारा
जिला बिलासपुर (म.प्र.)

"जिवन विद्या"

इस विषय पर मैं पढ़ा तो मुझे एसा प्रतित हुआ कि, अगर इस विद्या को पूरे हिन्दुस्तान में प्रत्येक पुरुष एवं नारी को पढ़ाया जाय तो वास्तव में उन्हें अपने बारे में एवं न्याय के बारे मे एवं पुरे समाज के बारे में ज्ञान हो सकता है। या समझ सकता है।

मैं इस विचार को जान भी गया, मान् मान भी गया और पहचान भी गया अगर इसके बारे में कुछ लम्बा समय तक पढ़ाई चले तो और ज्यादातर रूप में समझ ~~सके~~ सकते हैं और लोगों को समझा कर सकते हैं।

मुझे उम्मीद है कि इस विद्या को समझने के बाद कोई भी व्यक्ति एक दुसरे पर हिन्सा नही करेगा शोषण नही करेगा। और यदि विचार संदेश के लिए पूरे देश में अंधकार में उजाला का दिया जल सकता है।

नाम - राजू पि राजकुमार लहड़गा मरदुरा

पूज्य गुरुवर के चरण स्पर्श

आदर्श केन्द्रीय जेल बिलासपुर

मे आपको तत्वाधान मे सात दिन का शिविर चला उसमे मैं निरन्तर भाग लिया और आगे जीवन मे अधिक और शिविर किये जायेंगे उसमे आवश्यक रूप से भाग लेने का प्रयास करूंगा जेल के अन्दर और बाहर जीवन विद्या का [illegible] मे हर पुरुष, नारी व बालक बालिकाओं को जीवन विद्या के अध्ययन के बारे मे सलाह दूंगा और सलाह के अनुसार स्कूल व कालेजो मे जीवन विद्या को एक पाठ आवश्यक रूप से पढ़ाया जाय ताकि वर्तमान मे होने वाली असमाजिक तत्व न होवे ताकि उनमे व्यवसाय, व्यवहार, विचार अनुभव ये चार आयाम समाज मे आवेगी

सेवकराम केशरवानी

जीवन विद्या अध्ययन शिविर

सेवा में

आदरणीय गुरु जी सादर चरण स्पर्श स्वीकार हो और गुरु जी मुझे आपके द्वारा जीवन के मार्ग पर चलने की नयी दिशा मिली है उस को मैं शब्दों नहीं लिख सकता लेकिन ताल मेल अगर कोई भी रखता है और अपने जीवन के साथ साथ पालन करे तो न डर रहेगा न किसी प्रकार की परेशानी मनुष्य को कभी नहीं आयेगी और गुरु जी व मेरा दिमाग दो साल से सुन है मन में कुछ और है और करता कुछ और गुरु जी दुनिया में बहुत लोगों ने मेरे साथ अन्याय किया है आपसे मिलने के बाद मेरी दिमागी हालत ठीक है मैं कोसिस करूंगा की आपकी शिक्षा पर अमल करूं विक्रम बहादुर सिंह

जिला जेल बिलासपुर

M. P.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर

यह जीवन विद्या संसार को एक न्याय तथा सत्य के मार्गदर्शन करा कर लोगों को सामाजिक और स्वालंबी बना देने वाला विद्या है। परिवार से लेकर पूरे विश्व तक में सुख तथा शान्ति को ब्रह्म लोक से लाकर मृत्यु लोक को भी स्वर्ग लोक बना देगा। जिस आदमी के विचार तथा अनुभव में जीवन विद्या का आरम्भ किया उसके मैं बार-बार आभार व्यक्त करता हूँ। और श्री माननीय महाचार्य जी आपका भी बहुत-2 आभारी हूँ और आपसे मेरा निवेदन है कि आप बीच-2 में आकर यह शिविर लेते रहें।

P.T.O.

मैं चाहे बाहर रहूं या जेल के अन्दर रहूं इस मार्ग से कभी भी विचलीत नहीं होऊंगा और आप लोग इस मार्ग में मुझे चलने के लिए आशिर्वाद प्रदान करने की कृपा करें।
ये 7 दिन के शिविर अच्छा लगा। ये विचार बच्चा भवान [illegible] की निरंतर चलता रहे। आपका शुभचिंतक राही.

करणदास बंधन
ग्राम/ डाकघर पो. आ.
जलगानी थाना पण्डरिया
तहसील लोरमी जिला
बिलासपुर (म. प्र.)

प्रभारी
22. 2. 98
प्रथम केन्द्रीय आदर्श जिला जेल बिलासपुर (म.प्र.)

जीवन विद्या ज्ञान शिविर

जीवन विद्या ~~पह~~ एक ऐसा शिविर है कि जो बाहर से आए हुए मास्टर जी आया रहा वह एक बहुत बड़ा ज्ञानी के रूप में हम लोगों के सामने प्रकट हुआ ज्ञान के योगी है इस ज्ञान में हमें रास्ता का मार्ग दर्शन कराया जेल के अन्दर रहूं या जेल के बाहर रहूं हर व्यक्ति को यही सुझाव दूंगा कि जैसे परिवार में रहना व्यवहारिकता व्यापार प्रगति साथ रूपया लाभ हानि उत्पादन इत्यादि है. जैसे ज्ञान दर्शन कराया अगर मेरे को यह ज्ञान बाहर में मिलता तो जो भी गलत काम किया हूं वह गलतनी करता अभी मेरेको यह ज्ञान पूरी तरह से शरीर के अन्दर नहीं [redacted] है कि मैं यही चाहता हूं कि यह शिविर को और आगे बढ़ाने की कोशिश करे ~~जो~~ जो बाहर से मास्टर आया था उसी मास्टर को साथ हो साथ ~~मास्टर को~~ और ज्ञान का केन्द्रीय जिला जेल बिलासपुर में हो और अर्पित जो अधिकारी विद्या केन्द्र में 15-2-97 को शिविर लगाया था और 22-2-97 को ~~आ रहा है अनको काम से कम~~ उसको आगे बढ़ाए

ध्यान के संपूर्ण हो जायेगा। कालेकर कालेकर साहब से मैं
यही कहूंगा कि जो जेल में भी कर रहे हो और किसी जेल में
उन्नती नहीं हुआ है. कालेकर साहबजी जो जीवन विद्या
शिविर वाले मास्टर जी को भेजे है. मैं आपका आभारी हूं मैं यही
चाहता हूं कि साथ ही साथ लगातार एक सप्ताह और आगे
आगे बढ़ा दिया जाए। श्री गुप्ता जी से मेरा यही प्रार्थना है कि
इस शिविर को बढ़ाने की कोशिश करे।

शिवराम
चन्द्राकर

जीवन विद्या अध्ययन शिविर दि. 15/2/97 से दिनांक 22/2/97 तक

दिनांक 15/2/97 से 22/2/97 तक "जीवन विद्या अध्ययन शिविर" का आयोजन रखा गया जिसमे भट्टाचार्यजी द्वारा यह बताया गया कि- मानव वास्तविकता में क्या है मानव का मानव के प्रति क्या संबंध होना चाहिये एक मनुष्य का अपने परिवार के प्रति अर्थात अपने माता-पिता, अपनी पत्नी, एवं बाल बच्चो के प्रति क्या कर्तव्य एवं व्यवहार होना चाहिये। इन बातों पर बहुत ही सुंदर एवं सरल तरीके से

मानव एवं दिव्य मानव। जिन्हें
हम स्वयं अपने उपर
विचार, व्यवहार एवं अनुभव
लगाकर पहचान सकते हैं।
प्रकृति के साथ हमारा संबंध
एवं अस्तित्व के बारे में बताया
गया।
अंत में मैं यही कहूंगा कि
इस तरह की ज्ञान शिविर का
आयोजन बार-बार रखा जाय
ताकि हम अपने आप को समझ
सके एवं ज्ञान की वृद्धि हो। तथा
हम जेल में हैं ऐसा हमें अनु-
भव न हो इतने दिनों तक मुझे ऐसा लगा कि
मैं हर क्षेत्र में स्वतंत्र हूं मैं अध्याचार्य जी का हृदय
से आभारी हूं जिन्होंने हमें इतनी
अच्छी रवाली बतायी। साथ ही सुपरी-
टेंड साहब, जेलर साहब, कमिश्नर साहब
को भी।
अपराधि दराई सोई

मनुष्य अपने विचार व्यवहार एवं अनुभव को जब पहचान जाता है तो न तो वह किसी को हानि पहुंचायेगा या तो उसे किसी से भय होगा

जब लोग हमारा समर्थन करते हैं तब हम कहते हैं कि यह हमारा सौभाग्य है परन्तु जहां हमारी आलोचना होती है तब हम समझते हैं यह हमारा दुर्भाग्य है।

वास्तव में इसी का नाम भाग्य है।

हमें यह भी बताया गया कि इस सृष्टि (सत्ता) में केवल पांच प्रकार के ही मनुष्य हैं। १. राक्षस मानव, (२) पशु मानव (३) मानव (४) देव

प्रकाश डाला गया।

मनुष्य का समाज के प्रति एवं प्रकृति के प्रति जो संबंध हैं उन्हें बताया गया।

एक आदर्श मनुष्य में क्या-क्या गुण व्यवहार एवं व्यवसाय होना चाहिये यह बताया गया।

मनुष्य जब अपने आप को (स्वयं) को सही तरिके से समझ जाय तो न तो कानून की आवश्यकता है और न ही न्याय कि क्योंकि परिवार, समाज का एक छोटा रूप है जिसमे अलग अलग आयु अलग अलग लिंग तथा वंश एक साथ रहते हैं।

दिनांक १५से२२फरवरी सन् १९९८

आदर्श प्रथम श्रेणी जिला जेल बिलासपुर

"जीवन विद्या - अध्ययन"

विगत १५ से २२ फरवरी ९८ तक आदर्श प्रथम श्रेणी जिला जेल पाठशाला में सात दिवसीय जीवन विद्या शिविर प्रशिक्षण कार्य जेल में निरुद्ध विचाराधीन एवं बन्दीयों की लगभग एक हजार में २६ व्यक्ति जीवन विद्या का ज्ञान अर्जन किया, इस शिविर का मुख्य वक्ता श्री साधन भट्टाचार्य, अमरकंटक आश्रम जिला शहडोल से पहुंचकर जानकारी दी गयी। उक्त आशय में अभ्यास जीवन में व्यवस्था, परिवार में व्यवस्था, मानव सम्बन्ध, समाज में व्यवस्था, अर्थ शास्त्र ज्ञान, परिवार मूलक स्वराज्य मानव रूप, प्रकृति में व्यवस्था, सामाजिक नियम, अस्तित्व में व्यवस्था,

(४)

कस्बों, शहरों में पहुंच कर
नागरिकों से सहयोग ले-देकर
वनकी जीवन और पालन
करने कृत संकल्प रहूंगा।
जानकारी अनुसार लगभग
अट्ठाईस वर्षीय साधन कुमार
भट्टाचार्य ने बिलासपुर के
जिला-संभाग आयुक्त श्री
हर्ष मन्दर से प्रेरणा पा आयुक्त
महोदय, सर्वप्रथम जेल में निरुद्ध
लोगों की विवेक में चेतना लाये
जाने शिविर रखने स्वीकृति
दी गयी, इस कार्यक्रम में शांति
प्रदाय करने जेल अधीक्षक
डॉ. के. के. गुप्ता जी की भूमिका
अहम माने जाने में रही।
खास अनुभव अनुसार शिविर शिविर में
निरुद्ध लोग अच्छे व्यवहार रख शिक्षा
प्राप्त की गयी। हस्ताक्षर रामानन्द तिवारी
आ-२५५८८ वासी बिलासपुर

मुद्दा में साधकों ने पूर्ण प्रेरणा [illegible] में उपस्थित लोग ज्ञान अर्जन की गयी।

एक भेंट में वक्ताओं ने राष्ट्र, समाज, परिवार, कानून, न्याय, व्यवहार, अनुसार सरल, सहज और सुलभ रूप से मानव जीवन में पालन करने की मूल उद्देश्य समान अधिकार, समान अस्तित्व मर्यादा बनाये रहने जन-जन में कल्याणकारी नीति पालन किये की बात कहा गया।

श्रीमान, साधन महाचार्य के उपरोक्त मुद्दों में विद्यार्थी ने पत्रे वाली जीवन के पूर्व एक क्षेत्र में बीते वर्ष १९६२ से पत्रकारिता कार्य में सम्बन्ध रह कर जितनी ज्ञान अर्जित करते में कमी रही उससे बहुत ही सुलभ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

निशुल्क प्राप्त किया हूँ।
मैं श्रीमान जी के सेवा भाव से पूर्ण संतुष्ट हो कर कर्तव्य पालन अभ्यास अनुसार करते मानवीय जीवन में अमल करके लोगों से सम्पर्क साध कर सेवा भाव पूरी कर लोगों तक शांति एवं सुख दायी जीवन यापन करने निरन्तर प्रयास जारी रखूंगा।
अन्त में विद्यार्थी गुरु श्री महाचार्य जी के अमूल्य ज्ञान का सहृदय आभारी मानता हूँ।
श्री मान जी के प्रेरणा से प्राप्त अभ्यास और पुनः पुनः पठन कर स्वयं और परिवार, समाज, गाँव,

—ः— जीवन विद्या ज्ञान —ः—

जीवन विद्या शिविर एक ऐसा शिविर है जो मानव के हर एक पहलू से जुड़ा हुआ है हर हर इन्सान को इसे भलि भांति से आगे बढ़ाने के लिए तन मन धन से जुड़ जाना चाहिए। मेरी दृष्टी से जीवन विद्या का अध्ययन समाज, परिवार, और सरकार जो अपना अनुयायी समझता इन्ही लोगों के मध्य इनका (शिविर) अध्ययन बहुत जरूरी हैं ताकि लोग अपना खुद महत्व समझे और एक दूसरे के प्रति क्या करना है क्या नहीं करना हैं। खुद ही समझे

लगता था कि दुनिया में ऐसा कोई इन्सान नहीं हैं जो इस संसार के मानव को कुछ सिखाए, किन्तु जीवन विद्या के गुरूजनों से पता चलता है कि पृथ्वी पर मानव हैं जो सही दिशा ज्ञान को देता है। इस विद्या का प्रसंशा करना अनंत है मानव इस विद्या को समझकर सरकार का संविधान को अलग कर सकता।

मैं गुरू महाचार्य अधीक्षक महोदय, आयुक्त कमिश्नर महोदय, कलेक्टर महोदय का आभारी हूँ जेल में इस तरह अनमोल शिक्षा का अध्ययन प्राप्त करवाएं (दिलवाई) हैं।

सुझाव → जीवन विद्या शिविर का अध्ययन निरन्तर चलता रहे मैं शिविर में मात्र एक दिन ~~सम्मिल~~ सम्मिलत हुआ हूँ जिससे मुझे बहुत बड़ा ज्ञान प्राप्त हुआ है।

विरतीक कुमार
(मिरी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या अध्ययन शिविर

श्रीमान एस. के. भट्टाचार्य द्वारा संचालित यह अध्ययन शिविर ज्ञान अवस्था मनुष्य जीवन के लिए अति ही महत्वपूर्ण शिविर है। मैं इस शिविर में दिनांक 15.2.97 से 22-2-97 तक उपस्थित रहकर अध्ययन किया हूँ तथा एक दिन दिनांक 20-2-97 को मुझे पेशी में जाने के कारण अनुपस्थित रहा। मैं बाहर में बी एस सी. द्वितीय वर्ष का अध्ययन रत विद्यार्थी था। शिविर की महत्वपूर्ण बात बिंदु से लिखित है—

1. यह शिविर सभी जगहों में विकसित होना चाहिए अर्थात प्रत्येक ग्राम और शहरों में यह शिविर चलना चाहिए
2. यह शिविर मुख्य तौर पर शासकीय कर्मचारी विशेषकर पुलिस विभाग में होना चाहिए, जो देश की रक्षक होकर देश की भक्षक का कार्य करते हैं। यदि इस शिविर का उन्हें अध्ययन करा दिया जाय तो वे मानव संबंध को समझकर वे सही कार्य करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।
3. यह शिविर सभी जेलों में भी होना चाहिए
4. शिक्षा विभाग में एक पीरियड जीवन विद्या का होना चाहिए
5. जीवन विद्या शिविर में मुझे कुछ मुद्दा बहुत विशेष प्यार लगा जैसे जीवन जीने की विधि, मानव संबंध, परिवार व्यवस्था, मनुष्य के भेद, आदि इन मुद्दों को यदि मनुष्य अपने जीवन में समझकर अमल करे तो शायद किसी भी प्रकार की अपराध नहीं होगा, यह मेरा विश्वास है।
6. यह शिविर किसी भी प्रकार की धर्म, राजनीति, प्रजाति पर किसी भी प्रकार की ठेस नहीं पहुँचाती बल्कि धर्म विभिन्नता और प्रजाति विभिन्नता से जो अपराध होती है उसे विशेष समाधान दे सकती है।
7. इस शिविर में मुझे अध्ययन के फलस्वरूप मनुष्य जीवन जीना सिखा दिया इसके लिए ही संचालित कर्ता का मैं आभारी हूँ, और यह शिविर आगे भी यहाँ चलाया जावे।

संतोष कुमार जांगड़े बी.

पुत्र राम जांगड़े

"जीवन - विद्या - अध्ययन
शिविर"

"15 फरवरी से 22 फरवरी"
तक"

श्री साधन भट्टाचार्य जी द्वारा जीवन विद्या अध्ययन सिविर एक सप्ताह का हमारे आदर्श जिला जेल बिलासपुर में आयोजन हुआ।

श्री भट्टाचार्य जी द्वारा बताये गये जीवन व्यवस्था से लेकर मानव के प्रकार; अस्तित्व में व्यवस्था तक स्वयं के जीवन को अच्छा बनाना परिवार को अच्छा बनायेजाना समाज को समझना, हित में काम करना प्रेरणा मिला इतना अध्ययन करने से मन को संतुष्टि मिली, आनन्द प्राप्त हुआ।

इस प्रकार का सिविर आदर्श जिला जेल में बार बार आयोजन हो सभी विचाराधीन बंदी भाग लें अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करें।

श्री साधन भट्टाचार्य जी द्वारा अमूल्य समय निकाल कर जीवन विद्या के बारे में बताये में इनके आभारी हैं

रामगोपाल पैकरा
s/o श्री डोकरी राम
आदर्श जिला जेल बिलासपुर

जीवन विद्या

दिनाँक 16.2.97 से आदर्श जिला जेल बिलासपुर में एक जीवन विद्या शिविर आयोजन किया गया जो 3 दिन तक चला आज 19.2.97 से फिर से शिविर प्रारंभ होगा। उक्त शिविर में जिला आदर्श जेल के 25 बंदियों ने भाग लिया।

आज देश के अनेक शहरों में भाग्य विधाता वैसे ही बिक रहे हैं जैसे कि हाट मेले थोक मवेशी बाजारों में मोल भाव कर बिकते हैं। आज कल के राजनीति के आदमी को इसी स्तर का बनाया है। दूसरी ओर प्रकृति में केवल आदमी में ही समझदारी जैसी बात है, लेकिन एक समझदारी मानवीयता पूर्ण नहीं होने से आदमी स्वयं को दुखी बनाये जा रहा है। वह लगातार सुख पाने इस ओर दौड़ रहा है।

मनुष्य ने अपने द्वारा रचित ईश्वर को ~~[illegible]~~ तथा इस विश्व के प्रकृति को जानने का प्रयास तो किया पर स्वयं को जबकि वह दोनों का द्रष्टा है, जान नहीं पाया। परन्तु अब मनुष्य परिभाषित हो गया है व्यवस्थापित हो गया है, जीवन विद्या के माध्यम से इस बात को हृदय संगम किया जा सकता है। इन सभी बातों को आदमी से आदमी बनाने की विद्या वैद्य श्री शर्मा जी द्वारा इस मार्ग को उद्घाटित किया है।

जीवन नाम की भी कोई चीज होती है मनुष्य जीव व शरीर का रूप है। शरीर रासायनिक भौतिक रचना के रूप में विज्ञान द्वारा प्रमाणित हो चुका है कि जीवन जागृत पूर्ण परमाणु है।

जीवन विद्या का परिणाम ही समाधान है, सुख शांति संतोष आनंद कैसे मिले इसी धुरी के चारों ओर आदमी का जीना-मरना है। आदमी जीवन और शरीर का साकार रूप है, एक ही परमात्मा में हम सब डूबे भीगे, घिरे होते हैं। जो धारण किया जाता है वही धर्म है।

संस्कार ही समझदारी और समझदारी ही संस्कार है सम्बंधों को पहचानना और वैसा जीना ही आदमी का संस्कार और समझदारी है। हम मरजगार होते हैं। तो तो प्रकृति अपनी ~~काम~~ भी रही है- मनुष्य के कुछ किए बगैर यह सब कुछ चल रहा है। प्रत्येक इकाई क्रिया कर रही है। सब संतुलित होकर चल रहा है। ~~सब प्रत्येक इकाई क्रिया कर रही है~~- जीवों से ज्यादा पेड़ पौधे/आदमी से ज्यादा जानवरों की संख्या है। सम्बंधों की पहचान है कि पानी भी पेड़ पौधों को पहचानता है, इसलिए वहाँ पानी गिरता है। पेड़ पौधे जीव आदमी सभी मिलकर प्रकृति हैं, ये चार अवस्था के रूप में होते हैं। ये एक दूसरे के पूरक भी हैं। इस प्रणाली की व्यवस्था को, समझने के बाद ही व्यक्ति आदमियत के साथ जी सकता है। अव्यवस्था के चलते इसलिए आदमी जीने के क्रम में परेशान है। प्रकृति सिर्फ मनुष्य ही अपने धर्म से हट कर चल रहा है।-

मनुष्य हर परिस्थिति में जीता है

स्वयं में, शरीर के साथ, परिवार के साथ, समाज के साथ प्रकृति, अस्तित्व में। उपरोक्त सभी स्थितियों में से किसी भी परिस्थिति का अभाव होने पर मनुष्य दुखी होता है और इसके विपरीत परिस्थितियों में सुखी होता है। ~~जीवन में एक क्रिया बल और एक क्रिया शक्ति होती~~ है। अक्षय बल और अक्षय शक्ति साथ-2 होती है- इसके साथ क्रिया तथा विरोध भी होते हैं।- मन हमेशा चंचल है और किसी भी कार्य को करने के लिए हमेशा आगे रहता है। अर्थात किसी सम्भव और असम्भव विचार को सोचना तथा उस पर अमल नहीं करना मन कहलाता है

(3)

व्यवहार में मूल्य - समाज के द्वारा अनेक मूल्यों के आधार पर 2 भागों में बांटा जा सकता है - स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम, वात्सल्य, ममता, सम्मान, विश्वास, स्नेह ये सभी स्थापित मूल्य हैं सम्बन्धों में स्थापित रहता है तथा सुख का अनुभव होता है।

शिष्ट मूल्य, सौम्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता, स्पष्टता, ममता, सम्मान, विश्वास, स्नेह के द्वारा शिष्ट मूल्य की क्रिया में उदारता, आदर, सौजन्यता तथा निष्ठा के साथ समाज मूल्य की प्रक्रिया का संचार है।

माननीय परम श्रद्धेय श्री साधन भट्टाचार्य के निर्देशन में जीवन विद्या का शिविर जेल में लगाया जा रहा है इससे निश्चित रूप से बंदियों के जीवन में प्रभाव पड़ेगा मेरा यह विश्वास है कि आज 25 बंदी इस शिविर में भाग ले रहा है आने वालों सालों में अधिक से अधिक बंदी इस आकर्षित होंगे तथा इसका लाभ एक अच्छा आदमी बनने के लिए उचित मार्ग खुलेगा। श्री साधन जी आपने नि: स्वार्थ सेवा भाव से आदमी को आदमी बनाने का जो कार्य कर रहे हैं ये अपने आप में गर्व की बात है,

मैं माननीय अधीक्षक महोदय से प्रार्थना करूंगा कि यह शिविर हर वर्ष चलाया जाए कम से कम एक माह का जिससे यहां निरुद्ध बंदी एक अच्छे आदमी बन कर जीवन व्यतीत कर सके तथा इससे निश्चित रूप से अपराधों में रोकथाम आवेगा।—

लेख —

डॉ. मधुसूदन तम्बोली
(अधिवक्ता)
उ-प्रदेश जिला जेल

माननीय हर्ष मंदर जी
आयुक्त, बिलासपुर संभाग.

नित्य उत्सव कामना।

आपके प्रेरणा से आदर्श प्रथम श्रेणी जिला जेल बिलासपुर में 15 से 22 फरवरी तक 'जीवन विद्या अध्ययन शिविर' का आयोजन हुआ। 25 शिविरार्थी भाग लिए। शिविर का समय प्रातः 9 से साढ़े बारह एवं 2 से साढ़े चार रहा।

शिविर में अध्ययन के निम्न बिंदु रहे :-

(अ) सभी मनुष्य में जीवन बल, जीवन शक्ति, जीवन लक्ष्य समान है एवं सभी मनुष्य जीवन और शरीर का संयुक्त साकार रूप हैं। शरीर सीमीत शक्ति व बल सम्पन्न है जबकि जीवन अक्षय बल व शक्ति सम्पन्न है।

(ब) प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही न्याय का याचक, सही करने का इच्छुक व सत्य वक्ता होता है। परंपरा में न्याय, सही कार्य-व्यवहार व सत्य बोध न होने के कारण मनुष्य गलती और अपराध करता है।

(स) मानव का मानव से सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों (विश्वास, स्नेह, सम्मान आदि) का निर्वाह, परस्पर मूल्यांकन व उभय तृप्ति होना ही न्याय है।

(द) प्राकृतिक नियम का पालन ही सही कार्य, एवं सामाजिक नियम का पालन ही सही व्यवहार है।

"प्रकृति में उत्पादन के अनुपात में खनिज, वनस्पति, व जल का उपयोग व उत्पादन में सहायक होना" ही प्राकृतिक नियम है।

"स्वधन, स्व नारी/पुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार" ही सामाजिक नियम है।

इन नियमों के पालन से मनुष्य निरंतर सुखी अन्यथा दुःख व विरोध की पीड़ा से ग्रस्त है।

(ई) सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व का स्वरूप है। यह

(कृपया पृ. 2 पर देखें)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

सह अस्तित्व के रूप में नित्य वर्तमान है। अस्तित्व ही सत्य है।

शिविर में अध्ययन की विधि चर्चा, प्रश्न-उत्तर रही। सभी शिविरार्थी को एक-एक मुद्दा स्वीकृत होने पर ही आगे के मुद्दों पर विचार किया गया।

यहाँ भी मुझे यही अनुभव हुआ कि प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य बौद्धिक समाधान, भौतिक समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास) और सह-अस्तित्व है। सभी मनुष्य इन तथ्यों के बोध के लिए प्रयासरत है। प्रत्येक मनुष्य अखण्ड समाज में जीना चाहता है तथा सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना चाहता है। आज की परिस्थिति में खण्ड-खण्ड समुदाय व संकुचित नीतियों में जीने के लिए विवश है, फलतः गलती व अपराध का प्रकाशन है।

शिविर में आपके गरिमामय उपस्थिति की अपेक्षा रही है। आपके उपस्थिति से शिविरार्थीयों के प्रयास व जिज्ञासा का मूल्यांकन होने पर सभी संतुष्ट होते। साथ ही मेरी प्रस्तुति का मूल्यांकन भी होता, जिससे मेरे उत्साह में वृद्धि होती।

शिविर के आयोजन में आपकी प्रेरणा प्रमुख रही है। साथ ही जेल के अधिकारियों व कर्मचारियों का सहयोग प्रसंशनीय है। शिविरार्थी व अन्य कैदियों के जिज्ञासा व सहयोग से मुझे सुख हुआ है।

धन्यवाद

आपका

हिमान

द्वारा श्री ए. नागराज शर्मा
कटारे धर्मशाला
पो.- अमरकण्टक
जिला - शहडोल (म.प्र.)

संलग्न-
परिशिष्ट-1 - शिविरार्थीयों के नाम
परिशिष्ट-2 - शिविरार्थीयों की टिप्पणी

जीवन विद्या शिविर दिनांक - 4-6-97 से

वार्ड नं० 8 दिनांक 11/6/96 तक

1. उदराज S/o शिवमंगल सिंह
2. रामनाथ S/o मुकुन्द
3. पवनकुमार S/o श्यामसुन्दर
4. धरमसिंह S/o बाबासिंह
5. अजितकुमार S/o दुखीराम
6. संतोष मसीह S/o जयंथ मसीह
7. चंद्रकुमार S/o मेहरामल
8. सेतिलराव S/o नीलकंठराव
9. रामगोपाल S/o पुनीराम
10. हरिभाऊ S/o अमृतराव
11. भुनेश्वर S/o चमार सिंह
12. तुलाधार सिंह S/o बहादुर सिंह
13. राजेन्द्र सिंह S/o सहस्त्रराम
14. बल्गूराम S/o रामाधार
15. गोकुल S/o खोल बहरा
16. राम सिंह S/o झगरूसिंह
17. धरनीधर S/o धनीगीरि
18. नरेशकुमार S/o रामलाल

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

वार्ड नं० 7

1. संभूराम S/o कुंधराम
2. मनराखन S/o भागवली
3. जगन्नाथ S/o सीताराम
4. छन्नीलाल S/o आत्माराम

1. रामनाथ उर्फ रामाधार पिता मुकुन्द
अनुभव - शिविर अच्छा लगा इस नितिपर चल रहा हूँ
और आगे भी चलूँगा। सुधार आ गया हूँ
2. उदयराज पिता शिवमंगलसिंह - जीवन विद्या
ज्ञान अच्छा लगा जीवन के बारे जानकारी
मिलने इस रास्ता में चलूँगा कोई परेशानी नहीं होगा
इस शिविर जानकारी से गलत काम नहीं करूँगा परिवार
सदस्यों से व्यवहार अच्छा करूँगा।
3. रामसिंग पिता रूपसिंह मैं महाचार्य जी के
शिविर में भाग लिया वार्ड २ के शिविर में
भाग लिया हूँ पहले शिविर में कुछ समझ आया
बाद दूसरा शिविर में और अच्छा समझ गया हूँ
मैं अपने गाँव को किसी तरह से लोगों का
बुराई नहीं करूँगा न ही बुराई सुनूँगा परन्तु
समझाने का प्रयास करूँगा।
4. पुनीलाल पिता आत्मा राम - जीवन के विषय
में सुनने से शिविर अच्छा लगा इससे जीवन में
सुधार ला सकूँगा ऐसा मुझे अनुभव हुआ।
5. धरनीधर पिता धनीगिरि - ~~शिवि~~ शिविर अच्छा
लगा, मानव का पाँच प्रकार होते हैं ज्ञान मिला
हमारी जीवन इस मार्ग में चलने से सफल होगा।
6. बोन्दूराम पिता दुलार प्रसाद - जीवन में जो
परिवार का बरताव समझाया अच्छा लगा समझ
में आ गया। मैं अपने बच्चों और परिवार
को समझा सकूँगा।
7. नरेश कुमार पिता श्रीराम लाल - अच्छे से समझ
समझ में नहीं आया समझने का कोशिश जारी है
समझ जाने से अपने गाँव में प्रचार करूँगा
इसी प्रकार परिवार में भी व्यवहार करूँगा पूर्ण
ज्ञान होते तक शिविर में आऊँगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(७) राम सिंह पिता बुधराम - मैं सभी शिविर में भाग ले रहा हूँ मुझे कुछ समझ आ गया आगे मैं समझने और समझाने का काम करूंगा। मैं स्वयं में जीना चालू कर दिया हूँ।

(८) जगन्नाथ साहु पिता सीताराम साहु - शिविर बहुत अच्छा लगा - जीवन परिवार के बारे में जानकारी हुई। अब अपने बच्चों और परिवार को अच्छे चलने सिखाऊंगा। आगे और भी शिविर चलना चाहिये।

दिनांक १५-५-९७ जीवन विद्या शिविर

शिविर

15	5	97 से
21	5	97

भाग लेने वालों के नाम -

१ प्रकाश S/o कोमल
२ रामसिंह S/o संगुसिंह
३ जानसिंह S/o सुकलालसिंह
४ ईश्वरलाल S/o सेतराम
५ नरेश मिश्रा S/o
६ संतोष ध्रुव S/o मेघुराम
६ दयाराम S/o हीरालाल
८ अनिल S/o लक्ष्मीनारायण
९ राजूसिंह S/o बलदेवसिंह
१० अंजोरी S/o रंगलाल
११ वीरेन्द्र मसीह S/o संत मसीह
१२ बलराम कश्यप S/o जगदीश
१३ नरेश S/o रामलाल
१४ सीताराम S/o दशराम
१५ अर्जुन श्रीवास S/o जगन्नाथ
१६ बाबूसंत मसीह S/o शान्ति मसीह
१६ राजेन्द्र साहू S/o सहसराम
१८ चन्द्रकुमार S/o मेहरामल
१९ करुणदास S/o धरमदास
२० दर्शनदास S/o अरूपदास
२१ रमेशर S/o बोधीराम
२२ मनोज शर्मा S/o भागीरथी
२३ भागीरथी S/o महावीर
२४ बल्लू (कमलेश्वर) S/o जियालाल
२५ गणेश S/o जिवरारवन
२६ संतोष बागड़िया
२६ डॉ० रा० प्र० सिंह

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक १६-५-९८

(१) जुनास S/o कोमल
(२) रामसिंह S/o झंगुसिंह
(३) ज्ञानसिंह S/o सुकलाल
(४) ईश्वरलाल S/o सेतराम
(५) संतोष ध्रुव S/o मेघुराम
(६) राजूसिंह S/o बलदेवसिंह
(७) फंजोरी S/o रंगलाल
(८) वीरेन्द्र मसीह S/o संत मसीह
(९) सीताराम S/o दसराराम
(१०) अर्जुन अधिवास S/o जगन्नाथ
(११) बाबू सन्त मसीह S/o शांति मसीह
(१२) करुणादास S/o चरणदास
(१३) दर्शनदास S/o अनूपदास
(१४) रमेशर S/o बोधीराम
(१५) भागीरथी S/o महावीर
(१६) बल्लू (कसेरवा) S/o जियालाल
(१७) गणेशराम S/o जिवराखन
(१८) संतोष बागड़िया
(१९) डा० रा० प्र० सिंह

(२०) मनराखन S/o भागबली
(२१) रामानंद तीवारी
(२२) विनोद S/o रामकुमार
(२३) शंभूराम S/o कुंवराम
(२४) अमित S/o कोदूराम
(२५) शिवराम S/o भागवत
(२६) सेवकराम S/o

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक १७-५-९७

1. फुलारा S/o कोमल
2. रामसिंह S/o रूंगुसिंह
3. ज्ञानसिंह S/o सुकलाल
4. ईश्वर लाल S/o सेतराम
5. नरेश मिश्रा S/o जिवनलाल
6. संतोष ध्रुव S/o मेघुराम
7. राजूसिंह S/o बलदेवसिंह
8. अंजोरी S/o रेंगलाल
9. नरेश कुमार S/o रामलाल
10. सीताराम S/o दशराम
11. बाबू सन्त मसीह S/o शमि मसीह
12. करणदास S/o धरमदास
13. रमेश्वर S/o बोधीराम
14. भागीरथी S/o महावीर
15. बल्लू (कमलेश्वर) S/o जियालाल
16. गणेशराम S/o जिवराखन
17. डा० रा० प्र० सिंह

18. मनराखन S/o भागबली
19. रामानंद तिवारी
20. विनोद S/o राम कुमार
21. शंभूराम S/o बुधराम
22. अमित दुबे S/o कोदूराम
23. खिलावराम S/o भागवत
24. सेवकराम S/o छेदीलाल

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनाँक १८-५-९८

1. जुनाश S/o कोमल
2. रामसिंह S/o संगुसिंह
3. जानसिंह S/o सुकलाल
4. ईश्वर लाल S/o सेतराम
5. नरेश मिश्रा S/o जिवनलाल
6. संतोष ध्रुव S/o मेघुराम
7. राजूसिंह S/o बलदेवसिंह
8. अंजोरी S/o रंगलाल
9. वीरेन्द्र मसीह S/o संत मसीह
10. नरेश कुमार S/o रामलाल
11. सीताराम S/o दरसराम
12. अर्जुन श्रीवास S/o जगन्नाथ
13. बाबू सन्त मसीह S/o शनि मसीह
14. करनदास S/o धरमदास
15. दर्शनदास S/o अनुपदास
16. रमेशर S/o बोधीराम
17. बबलू कमलेश्वर S/o जियालाल
18. गणेशराम S/o जिवराखन
19. डा० रा० पु० सिंह

~~20~~

20. मनराखन S/o भागबली
21. रमानंद तीवारी
22. ~~विमो~~ विनोद S/o रामकुमार
23. शंभूराम S/o कुंवराम
24. अमित कुमार S/o कोदूराम
25. सेवकराम S/o होरीलाल

26. संतोष कुमार S/o फुसऊ
26. रामसुजान S/o रामदीन

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(२८) शोभाराम S/o किरद
(२९) मुरारी सिंह S/o माखन सिंह
(३०) अर्जुनराम S/o धनाराम

दिनांक १०-५-९८

(१) जुनास S/o खेमल
(२) रामसिंह S/o रंगुसिंह
(३) मानसिंह S/o रूकलाल
(४) ईश्वरलाल S/o सतराम
(५) नरेश मिश्रा S/o जीवनलाल
(६) संतोष धुव S/o मेघुराम
(७) राजूसिंह बघेल S/o बलदेव सिंह
(८) अंजारी S/o रंगलाल
(९) वीरेन्द्र मसीह S/o संतमसीह
(१०) नरेश कुमार S/o रामलाल
(११) बाबू सन्त मसीह S/o दानि मसीह
(१२) राजेन्द्र साहू S/o सहसराम
(१३) चन्द्रकुमार S/o मेहरामल
(१४) करणदास S/o धरमदास
(१५) रमेश्वर S/o बोधीराम
(१६) भागीरथी S/o महावीर
(१७) बब्लू कमलेश्वर S/o जियालाल
(१८) गणेशराम S/o जिवराखन
(१९) डा० स० प्र० सिंह

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक १९-५-९८

२१ रामानंद तिवारी
२२ विनोद S/o रामकुमार
२३ शंभूराम S/o बुधराम
२४ अमित कुमार S/o कोदूराम
२५ शिवराम S/o भागवत

२६ संतोष S/o फुसऊ
~~२७~~
२७ अर्जुनराम S/o धनाराम

२८ अशोक S/o सत्यनारायण
२९ मोतीलाल S/o नैनदास
३० रविकुमार S/o विजय कुमार
३१ सुरेश कुमार S/o कालीकाप्रसाद

दिनांक २०-५-९८

१ जुगाधा S/o केजमल
२ रामसिंह S/o कुंवरसिंह
३ जगसिंह S/o कुन्जलाल
४ ईश्वर लाल S/o संतराम
५ नरेश मिश्रा S/o जीवनलाल
६ संतोष धुव S/o मेघुराम
७ अंजोरी S/o रंगलाल
८ वीरेन्द्र मसीह S/o संत मसीह
९ नरेश कुमार S/o रामलाल
१० सीताराम S/o दरसराम
११ बाबू संत मसीह S/o भक्ति मसीह
१२ चन्द्रकुमार S/o मेहरामल
१३ करणदास S/o धरमदास

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(१४) रमेश्वर S/o बोधीराम
(१५) भागीरथी S/o महावीर
(१६) बल्लू ए कमलेश्वर S/o जियालाल
(१७) गजेन्द्रराम S/o जिवराखन
(१८) डा० रा० प्र० सिंह

---

(१९) मनराखन S/o भागवली
(२०) रमानंद तिवारी S/o
(२१) विनोद S/o रामकुमार
(२२) संभूराम S/o बुधराम
(२३) अमित कुमार S/o कोदूराम

---

(२४) अर्जुनराम S/o धनाराम

---

(२५) मोतिलाल S/o नैनदास
(२६) सुरेश S/o कालीकाप्रसाद

---

(२६) अजयकुमार S/o
(२७) लक्ष्मणसिंह S/o जालिमसिंह
(२८) बबलू S/o ईसलाम

दिनांक २१-५-९८

१५-५-९८ से आज तक जीवन विद्या शिविर में सामिल होने वालो का नाम

(१) जुनाश S/o कोमल
(२) रामसिंह S/o संगुसिंह
(३) जानसिंह S/o सुक्कलाल
(४) ईश्वरलाल S/o सेतराम
(५) नरेश मिश्रा S/o जिवनलाल
(६) संतोष ध्रुव S/o मेघुराम
(७) दयाराम चौहान S/o हीरालाल
(८) अनिल शुक्ला S/o लक्ष्मीनारायण
(९) राजूसिंह बघेल S/o बलदेव सिंह
(१०) अंजोरी S/o ईगलाल
(११) वीरेन्द्र मसीह S/o संत मसीह
(१२) बलरामकश्यप S/o जगदीश
(१३) नरेशकुमार S/o रामलाल
(१४) सीताराम S/o परसराम
(१५) अर्जुन श्रीवास S/o जगन्नाथ
(१६) बाबू सन्त मसीह S/o शनि मसीह
(१७) राजेन्द्र साहू S/o सहसराम
(१८) चन्द्रकुमार S/o मेहरामल
(१९) करणदास S/o धरमदास
(२०) फुलिनदास S/o अनूपदास
(२१) रमेश्वर पटेल S/o बोधीराम
(२२) मनोज शर्मा S/o भागीरथी
(२३) भागीरथी S/o महावीर
(२४) बल्लू e कमलेश्वर S/o चिरमलाल
(२५) गणेशराम S/o जिवराखन
(२६) संतोष बागडिया
(२७) S/o रा[illegible] सिंह

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(२८) मनसाखन S/o भागवली
(२९) रामानंद तिवारी S/o
(३०) विनोद S/o रामकुमार
(३१) शंभूराम S/o बुधराम
(३२) अमितकुमार S/o कोदूराम
(३३) शिवराम S/o भागवत
(३४) सेवकराम S/o होरीलाल
(३५) संतोष S/o घुसऊ
(३६) रामसुजान S/o रामदीन
(३७) शोभाराम S/o चिरकराम
(३८) मुरारीसिंह S/o माखनसिंह
(३९) अर्जुनराम S/o धनाराम
(४०) अशोक कुमार S/o सत्यनारायण
(४१) मोतीलाल S/o नैनदास
(४२) रविकुमार S/o विजय कुमार
(४३) सुरेश S/o कालिकाप्रसाद
(४४) लक्ष्मणसिंह S/o जालिमसिंह
(४५) शेख बब्लू S/o ईसलाम

शिविर से लाभ

मैं पिछले दो शिविर में भाग लिया था जिसको पढ़कर तथा समझकर मैं श्री भागीराम तथा श्री रमानन्द तिवारी जी के सहयोग से वार्ड नं. १४ में (बुजुर्ग वार्ड) एक बार शिविर लगाया था जिसमें उन बुजुर्गों को बहुत ही अच्छा लगा है। तथा हम तीनों को बहुत मजा आया है अब हम तीसरे शिविर में भी भाग लिये हैं। और मैं इस अब इस जीवन विद्या से जो सुख पाया हूँ, को अपना तथा परायापन के भेद को मिटाकर बांटता रहूँगा और आप से आशीर्वाद पाने की जिज्ञासा करता हूँ।

आपका बुद्धू शिष्य
करणदास बघेल

३१-८-९७ अखिल विधान शिविर

आबादी 4 लाख

बात (1) स्वभाव को नहीं समझते

उन्नति = हर इकाई (कुत्ता, बिल्ली, गोबर है)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

शिविर ...

जेल

① श्री राम सिंह - दाउद का रेकार्ड तोड़ने की कामना खत्म हो गई। इस पूरे अपराध लाइन में जनता का भला करने की प्रवृत्ति होती है। (ज्यादा हो गई है)

② मुनाजि - स्वयं के सुधार से समाज का सुधार होता है। मैंने ही यह स्वीकार।

③ नरेश - और शिविर हो, समझें, और देखो, समझ में आता है, दोहराना भी ठीक लगता है, जीवन में तकलीफ नहीं

④ विनोद - अच्छा लगा, अमल करूँगा। बुरा कार्य विचार व्यवहार ~~बंद~~ बंद हुआ।

⑤ रामसिंह - कुछ विचार में मुश्किल मिली, अच्छा व्यवहार स्वीकार हुआ।

⑥ संतोष जी - अच्छी बात सीखने मिली करने का मन हुआ

⑦ भागीरथी - संबंध समझने में कुछ ही होते हैं सही समझते हैं गलती निकल जाती है

⑧ अर्जुन श्रीवास - सब अच्छा लगा, और शिविर हो। माता पिता संबंध ... अच्छा लगा।

⑨ चन्द्रकुमार :- आत्मा की शांति, दिमाग स्थिर हुआ है सही सोचने पर काबू हुआ। व्यवहार में सुधार हुआ है, सम्बंधों का पता चला है।

⑩ ईश्वर लाल पटेल —

① लक्ष्मण - अच्छा लगा। और कई शिविर जब तक उतार लें।

② मुन्ना - अगला शिविर करेंगे। इस बार आज पहली बार आया।

③ बालकवीन्द्र प्रकाश - अच्छा लगता है। पहली बार आज आए।

④ बाबू सिंह ... - ठीक लगा। अपराध नहीं करेंगे, अब ठीक रहेंगे। अब और शिविर करेंगे।

⑤ राजसिंह बघेल = व्यवहार में परिवर्तन हो जाते हैं। ऐसा कोई ज्ञान ... फेंका हुआ लगा। अब परिवर्तन चाहिए। ... करेंगे। व्यवहार में परिवर्तन हुआ।

⑥ सीताराम - कुछ समझ में आया। सम्बंध की बात अच्छी लगी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(17)

जेल

नरेन्द्र कुमार मिश्र — अपराध का कारण — अपराधों का मूल्यांकन नहीं होने पर। यह हमें स्वीकार नहीं होता है
जनप्रतिनिधियों को निरंतर जरूरी। शिविर में रहें। अनौपचारिक हो।

(18) सच बहुत हद तक स्वीकार, कभी नहीं भूलता

त्रिलोकी — पहली बार

(19) (20) अनंत — अच्छा लगता है

मनराखन लाल — बुरी भावना, बदला लेने की भावना खत्म हो गई

(*) (21) श्यामसुन्दर भास्कर — जीवन - शरीर की जरूरत, तम्बाकू गुड़ाखू छोड़ा, व्यवहार पहले से अच्छा हुआ। ज्यादा समय का शिविर ठीक है।

(*) (22) संतोष — मानव लक्ष्य की, जीने की कला की समझ में आया। पहले वाले शिविर के बाद मानसिक तनाव दूर हो गया।

(23) मोतीलाल - बदला लेने की भावना है।

(**) (24) करनदास - तीनों शिविर किया, लेकिन [illegible] रहा है। यहाँ बाहर इसे करते हैं और भेजा जाता है।

(***) (25) रामेश्वर - शिव जो बताते हैं, वह मानते हैं, मैं पालूंगा।

(26) राम सुजान दुबे — विचार में सुधार, गाली व्यवहार में कमी

(27) कमलेश्वर — सही गलत की समझ आई है, दुःख - दुःख का [illegible] जानने की जरूरत [illegible] सही मूल्यांकन समझ में आया। और शिविर करेंगे।

(***) (28) (29) रमानंद तिवारी - (*) पहले शिविर —
3-4 [illegible]

(**) अजित कुमार दुबे — व्यवहार में परिवर्तन

(**) (30) गोविंद — हर शिविर में स्पष्टता बढ़ रही है। अब दूसरों को समझा सकते हैं [illegible] कार्यक्रम को करेंगे।

जीवन विद्या शिविर

भाग लेने वालों का नाम - वार्ड नं०

1. जुनास 29
2. रामसिंह - 29
3. ज्ञानसिंह - 28
4. ईश्वर लाल पटेल -36
5. नरेन्द्र मिश्रा -37 - 12वी
6. संतोष ध्रुव 29
7. दयाराम चौहान -26
8. अनिल लुकड़ा - 21
9. राजुसिंह बघेल - 28
10. अंजोरी - 50 —
11. वीरेन्द्र सिंह - 35 —
12. बजराम कश्यप 27 —
13. नरेशकुमार 20 . 10वी
14. सीताराम - 28 —
15. अर्जुन श्रीवास - 35 —
16. चार्लीसन मसीह - 28 —
17. राजेन्द्र साहू - 21 12वी
18. चन्द्र कुमार - 24 4वी
19. करनदास - 35 BA II *
20. दर्शनदास - 30 —
21. रामेश्वर पटेल - 25 7वी *
22. मनोज शर्मा - 30 —
23. भागीरथ - 25 5वी
24. कल्लू (कमलेश्वर) - 50 . 5वी
25. गणेश -30 5वी (लगभग) *
26. संतोष बागड़िया -12 8वी ?
27. डा. रा. प्र. सिंह -42 PhD }

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(3) जीवन विद्या शिविर में भाग लेने वालों की जानकारी—

बाहर से आये हुए सम्माननीय व्यक्तियों के द्वारा जीवन विद्या शिविर भाग लेने में निरुद्ध बंदियों के द्वारा जीवन विद्या शिविर. दोनों के शिविर में भाग लेने वालों की कुल संख्या 229 में से 82 रिहा, 12 जेल ट्रांसफर तथा वर्तमान में 134 बंदियों/वि० बंदियों से जेल में निरुद्ध है, जिसमें से कुछ बंदियों ने दोबारा से अधिकबार भाग लिये जो निम्न है।

1. करतादास S/o धरमदास - 5 बार भाग लिया
2. गोवर्धनराम S/o शिवसमन - 5 -"-
3. रामदयाल S/o कुवरराम - 5 -"-
4. रामानन्द S/o रामनाथ - 4 -"- रिहा
5. अनिलकुमार S/o कोदूराम - 3 -"- रिहा
6. संतोषकुमार S/o फूलचंद - 2 -"- रिहा
7. रामगोपाल S/o डोकरी - 2 -"- रिहा
8. बेदूसिंह S/o गोवर्धनसिंह - 2 -"- जेल ट्रांसफर
9. ओमप्रकाश S/o बोधीराम - 4 -"-
10. कुमारीसिंह S/o माखनसिंह - 5 -"-
11. शोभाराम S/o फिरतु राम - 3 -"-
12. सीताराम S/o दरसराम - 2 -"- रिहा
13. मनराखन S/o भागबली - 4 -"-
14. शिवराम S/o भागवत 3 -"- रिहा
15. उदरामसिंह S/o शिवमंगलसिंह - 2 -"-
16. पुनीराम S/o आत्माराम - 2 -"- जेल ट्रा. सफर
17. हरप्रसाद S/o केशीलाल - 2 -"-

(4) एक वर्ष में (जीवन विद्या शिविर के बाद) बन्दियों / वि. बन्दियों के व्यवहार में हुए परिवर्तन (सुधार) निम्नलिखित है।

(i) आपसी लड़ाई-झगड़ा व मार-पीट होता था, वह अब नहीं के बराबर होता है अर्थात नहीं होता है।

(ii) गाली-गलौच तथा एक दूसरे के खिलाफ होती थी, जो अब ऐसा नहीं है।

(iii) एक आदमी अपने नहाने तक दूसरों को पानी नहीं देता था, यदि धोखे से (आदमी) कोई ले लेता तो उसे बहुत ही मार-मारा जाता था, अब ऐसा नहीं है।

(iv) रिहा होने वाले बंदियों से उसके सारे सामान (जूता, चप्पल, कपड़ा आदि) को छीन लेते थे, अब ऐसा नहीं होता है।

(v) मुलाकात में आये हुए सामान गेट किपरों के द्वारा बलपूर्वक छीन लिया जाता था, अब ऐसा नहीं होता है।

(vi) बैरक इन्चार्जों (राइटरों) का एक स्पेशल श. डास होता था, अब ऐसा नहीं होता है।

(5) कर्मचारियों तथा अधिकारियों द्वारा किया गया व्यवहार—

(i) कर्मचारियों तथा अधिकारियों के द्वारा जिस प्रकार अपने सबन्धीयो से व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार से आज बन्दियों से करते हैं।

(ii) मुलाकात समाज में हेरा-फेरी होता था, वह आज ऐसा नहीं है

(iii) पहले सप्ताह में दो बार बैरकों में तलाशी होता था, अब ऐसा नहीं होता है।

(iv) प्रति 15 दिन में बन्दियों का बैरक बदल दिया जाता था, अब ऐसा नहीं होता है।

(v) पहले 8.00 बजे से 11.00 बजे तथा 12.00 बजे से 4.00 बजे तक बैरक बन्द रहता था, अब ऐसा नहीं है।

(vi) छोटा सा कागज रखना मना था, आज काफी रख रहे हैं।

(vii) पहले बन्दियों में केवल राइटरों पर विश्वास किया जाता था, आज अधिकांश लोगों पर विश्वास किया जा रहा है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर जानकारी (जेल वाले केंद्र।

① दिनांक 3-5-97 से 10-5-97 तक वार्ड नं० 14 में जीवन विद्या शिविर आयोजित किया गया।

② दिनांक 24-5-97 से 31-5-97 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 6 में आयोजित किया गया।

③ दिनांक 4-6-97 से 11-6-97 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 8 में आयोजित किया गया।

④ दिनांक 17-6-97 से 25-6-97 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 15 में आयोजित किया गया।

⑤ दिनांक 11-7-97 से 18-7-97 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 7 में आयोजित किया गया।

⑥ दिनांक 29-7-97 से 5-8-97 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 5 में आयोजित किया गया।

⑦ दिनांक 5-2-98 से 13-2-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 6 में आयोजित किया गया।

⑧ दिनांक 14-2-98 से 24-2-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 5 में आयोजित किया गया।

⑨ दिनांक 25-2-98 से 6-3-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 13 A+B में आयोजित किया गया।

⑩ दिनांक 7-3-98 से 14-3-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 12 B में आयोजित किया गया।

⑪ दिनांक 31-3-98 से 15-4-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 7 में आयोजित किया गया।

⑫ दिनांक 28-4-98 से 13-5-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 8 में आयोजित किया गया।

⑬ दिनांक 14-5-98 से 25-5-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 16 में आयोजित किया गया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(14) दिनांक 26-5-98 से 9-6-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 15 में आयोजित किया गया।
(15) दिनांक 13-6-98 से 29-6-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 14 में आयोजित किया गया।
(16) दिनांक 3-7-98 से 16-7-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 1 में आयोजित किया गया।
(17) दिनांक 17-7-98 से 5-8-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 6 में आयोजित किया गया।
(18) दिनांक 10-8-98 से 26-8-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 8 में आयोजित किया गया।
(19) दिनांक 27-8-98 से 18-9-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 14 में आयोजित किया गया।
(20) दिनांक 22-9-98 से 9-10-98 तक जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 12B में आयोजित किया गया।

टीप — दिनांक 3-5-97 से 9-10-98 तक जीवन विद्या शिविर बन्दियों द्वारा आयोजित हुआ है।

दिनांक
23-2-98

प्रति,

श्रीमान् जेल अधीक्षक महोदय,
माननीय श्री डा. के.के. गुप्ता साहब.
आदर्श जिला जेल बिलासपुर (म.प्र.)

विषय :— जीवन विद्या शिविर को एक वर्ष चलते रहने के उपलक्ष्य में...

द्वारा - अष्टकोण अधिकारी जिला जेल बिलासपुर (म.प्र.)

महोदय,

हमारे लिए बड़े ही हर्ष की बात है कि आप इस आदर्श जिला जेल में हम बन्दियों के सुधार हेतु आप अनेकों कार्यक्रम रखे, जिसमें से जीवन विद्या शिविर दिनांक 15-2-97 से आज तक चल रहा है, जिससे हमारे आध्यात्म क्षेत्र में विकास हुआ और इस जीवन विद्या से हमें एक नयी दिशा मिली, वे हैं "निरंतर सुख से जीने की समझ" (ज्ञान) आप हमें निरंतर सुखी होने का अवसर दिये हैं। इसके लिए हम (जीवन को समझने वाले साथी) आपके ऋणी हैं।

अतः श्रीमान से हम निवेदन करते हैं कि ये जीवन विद्या शिविर का कार्यक्रम को निरंतर चलाते रहें। जिससे जेल के समस्त बन्दी भाईयों ने जेल जीवन शुभ अवसर का लाभ लेते रहें, तथा जो भी बाहर से आपके बंदीगृह में बन्दी बनकर आये, वे इस जेल से सुखी होकर जायें तथा बाहर जाकर जेल जीवन को परिचर्चा के रूप में व्यक्त कर सकें।

उपरोक्त सम्बन्ध में, निम्नलिखित जानकारीयाँ हैं —

(1) जीवन विद्या शिविर की जानकारी—

बाहर से आये हुए सम्माननीय व्यक्तियों के द्वारा जीवन विद्या शिविर —

(i) माननीय श्री साधन कुमार भट्टाचार्य जी के द्वारा दिनांक 15-2-97 से 21-2-97 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

(ii) माननीय श्री साधन कुमार भट्टाचार्य जी एवं माननीय श्री गणेश बागड़ीया जी के द्वारा दिनांक 27-3-97 से 3-4-97 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया।

(iii) माननीय श्री भट्टाचार्य जी के द्वारा दिनांक 15-5-97 से 21-5-97 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया

(iv) माननीय श्री भट्टाचार्य जी एवं माननीय बलवंत साहू जी के द्वारा दिनांक 21-12-97 से 27-12-97 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया।

(v) माननीय श्री भट्टाचार्य एवं माननीय श्री साहू जी के द्वारा दिनांक 26-1-98 से 30-1-98 तक जीवन विद्या शिविर का आयोजन किया गया है।

(2) जेल में निरुद्ध ~~[illegible]~~/ विचाराधीन बंदियों / बंदी के द्वारा जीवन विद्या शिविर —

(i) दिनांक 3-5-97 से 10-6-97 तक जीवन विद्या शिविर का कार्यक्रम करणदास, गनेशराम, शंभुदयाल तथा रामानन्द ने पहली बार वार्ड नं. 14 में शुरू किया शिविर आयोजक करणदास तथा सहयोगी में गनेशराम, शंभुदयाल तथा रामानंद रहे।

(ii) दिनांक 24-5-97 से 31-5-97 तक जीवन विद्या शिविर का कार्यक्रम ~~[illegible]~~ रखा गया।

(iii) दिनांक 4-6-97 से 11-6-97 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया।

(iv) दिनांक 17-6-97 से 25-6-97 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया।

(v) दिनांक 11-7-97 से 18-7-97 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया

(vi) दिनांक - 29-7-97 से 5-8-97 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया।

(vii) 5-2-98 से 13-2-98 तक जीवन विद्या शिविर लगाया गया।

(6) जीवन विद्या को समझने के बाद निम्नलिखित बातों के ज्ञान के सम्पन्न होता है।

(i) स्वयं के बारे में — जीवन में पाँच अक्षय बल तथा बल के क्रिया और जीवन में पाँच अक्षय शक्ति तथा शक्ति के क्रिया होता है। जब हम शरीर से अलग जीवन को समझते हैं तो हमें जीवन निम्न बिन्दु पर समझ में आता है।

जीवन की शक्ति अक्षय होता है।
जीवन अमर होता होता है।
जीवन जिम्मेदारी वाला होता है।
जीवन की आवश्यकताएँ असीमित होता है।
जीवन के ताकत अधिक होता है।
जीवन की गति तेज होता है।
जीवन प्रभावशील होता है।
जीवन निरंतर सुख चाहता है।

(ii) शरीर के बारे में — जब हम शरीर तथा जीवन (स्वयं) को अलग-अलग समझते हैं, तब हम शरीर को निम्न बिन्दुओं पर समझते हैं।

शरीर क्षय होने वाला है।
शरीर मरने वाला होता है।
शरीर के आवश्यकता सीमित होता है
शरीर स्वतः क्रिया करने वाला होता है।
शरीर के ताकत कम होता है।
शरीर के गति कम होती है।
शरीर के सुविधा सीमित होता है
शरीर प्रभाव हीन होता है।

(iii) परिवार व्यवस्था में — परिवार को निरंतर सुखी रखने के लिए निम्न बिन्दु जरूरी है।

न्याय सुलभता
उत्पादन सुलभता
विनिमय सुलभता — लाभ हानि मुक्त विधि से
स्वास्थ्य संयम
शिक्षा संस्कार

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

(iv) समाज व्यवस्था में — समाज में अभय होने हेतु नि सामाजिक नियमों का पालन करना होगा तभी अभयता सम्भव है और एक ग्राम सभा का गठन हो जिसमें ग्राम सभा का अधिकार दण्ड देने का नहीं है बल्कि एक दूसरे की मदद करने का अधिकार है निम्न समीति होना चाहिए-

शिक्षा-संस्कार समीति
स्वास्थ्य- संयम समीति
न्याय - सुरक्षा समीति
उत्पादन- कार्य समीति
विनिमय कोष समीति

(v) प्रकृति में व्यवस्था — प्रकृति के चारों अवस्थाओं के साथ (पदार्थ, प्राण, जीव तथा ज्ञानावस्था) हम न्याय करते हुए जीवन से चलते हैं तो निरंतर समृद्धि होते हैं। क्योंकि प्रकृति के व्यवस्था हमारे सदुपयोग के लिए बना है। प्रकृति में निम्न व्यवस्था है

पदार्थ अवस्था — मिट्टी, पत्थर, धातु हवा, पानी
प्राण अवस्था — पेड़, पौधा
जीव अवस्था — पशु-पक्षी
ज्ञान अवस्था — मनुष्य

(vi) अस्तित्व में व्यवस्था —

सत्ता	में सम्पृक्त	प्रकृति
व्यापक	घिरा हुआ	4 अवस्था
पारदर्शी	डूबा हुआ	
पारगामी	भीगा हुआ	
अखण्ड		
पूर्ण		
ईश्वर		
अनादि		
ऊर्जा		
आकाश		
असीम		
नियंत्रण		स्वनियंत्रित

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

शून्य – जो स्वयं में क्रिया नहीं पर सभी क्रियाएं जिससे आवेष्ठित एवं अभिलब्ध है, उसे शून्य कहते हैं।
व्यापक – सभी जगह पाया जाता है।
पारदर्शी – जिसके आर-पार दिखाई पड़ता हो।
पारगामी – हर चीज में पारगामी हो।
अखण्ड – जिसका विभाजन न हो।
पूर्ण – कोई परिवर्तन न हो।
ईश्वर – सभी जगह एकाग्रता अनुभव हो।
अनादि – जिसका जन्म-मरण न हो।
ऊर्जा – हर चीज में क्रियाशील हो, जो दिखाई न दे।
आकाश – जो हर जगह दिखाई दे।
असीम – जिसका कोई सीमा न हो।
नियंत्रण – जिसमें लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई, तथा ऊंचाई का नियंत्रित हो।

(7) मूल्यांकन — शिविर का मूल्यांकन निम्नलिखित है
अथवा कुछ साथियों की हैं
मूल्यांकन करने वालों के नाम
(1) करणदास S/o श्री धरमदास
(2) शंभूदयाल S/o श्री बुधराम
(3) गणेशराम S/o श्री जितशरण
(4) दशरथ S/o श्री चमारिया
(5) मनहरण S/o श्री भागवती
(6) गोकुला S/o श्री अजित

मूल्यांकन – करणदास S/o श्री धरमदास
मेरा स्वयं के मूल्यांकन निम्नलिखित हैं।
(1) चिन्ता छोड़कर चिन्तन करने लगा हूं।
(2) क्रोध करता था, अब क्रोध नहीं आता है।
(3) घृणा करना छोड़कर स्नेह करने लगा हूं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O

(4) संग्रह के भाव को विचार से निकाल कर, असंग्रह के भावना रखता हूँ।

(5) क्रिया में नियंत्रण करके अर्थात जेल नियमों के पालन करके स्वतन्त्र हूँ, जिसके कारण मेरे ऊपर जेल साथी (बंदी भाईयों) तथा कर्मचारी व अधिकारी विश्वास करते हैं, उस व्यवहार को पाकर मैं सुखी हूँ।

(6) रूप, बल, पद तथा धन में अस्थायी गुण है, इसे स्थायी करने पर दुखी होते हैं। इसे मैं स्थायी बिलकुल ही नहीं करूँगा।

(7) जीवन विद्या के सामान्य [illegible] या शिक्षित व्यक्तियों के पास कह कर या व्यक्त करके अपने को सुखी पाता हूँ।

(8) देवी देवता, भगवान, रसूल, ईश्वर, आदि के विचार से निर्भ्रम हो गया हूँ।

मूल्यांकन — गेन्दाराम S/o छोटे [illegible]

(1) [illegible] ऐसा अनुभव होता है कि मनुष्य जाग जाता है तो कुछ होता नहीं [illegible] ले जायेगा भी नहीं।

(2) सदा [illegible] होता है। [illegible] से हमेशा सुख अनुभव होता है।

(3) पहले बलवान होने का घमंड था, अब नहीं है।

(4) हर एक मनुष्य के जीवन एक है समझता हूँ इस साइंस के अनुसार [illegible] अवस्था से सम्बन्धपूर्ण व्यवहार चाहता हूँ।

(5) मुझे आजीविका को व्यवहार [illegible] में दुखी नहीं हूँ क्योंकि जीवन को कोई [illegible] नहीं है, कोई भी कल्पना [illegible] व्यवहार है, कहीं [illegible] व्यवहार है जीवन को [illegible] नहीं है।

जीवन विद्या मूल्यांकन

जीवन विद्या से मुझमें निम्न सुधार हुआ

1. मैं नशा गुड़ाखू, तम्बाकू का सेवन करता था, वह छोड़ दिया।
2. विरोधियों के प्रति हमेशा बदला लेने का भावना था वह नहीं है।
3. दूसरे के कार्य में मदद करने पर मन में संतोष का अनुभव करता हूँ।
4. पहले चिन्ता करता था अब कोई भी प्रकार की चिन्ता नहीं करता।
5. मेरे इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम होने पर क्रोध आता था वह अब नहीं है।
6. प्रकृति की व्यवस्था को हमेशा बनाये रखना चाहता हूँ।
7. जेल में या बाहर में सभी के साथ मिलजुलकर रहना चाहता हूँ।

दशरथ वल्द श्री घासीराम
ग्राम तेन्दुवा (जयरामनगर)
बिलासपुर (म०प्र०)

जीवन विद्या मूल्यांकन

जीवन विद्या से मुझमें निम्न सुधार हुआ
1) मैं पहले बहुत क्रोध करता था।
अब क्रोध नहीं करता हूं।
2) दूसरे के कार्य में मदद करने पर
मन में संतोष का अनुभव करता हूं।
3) पहले चिन्ता करता था अब चिन्तन
करता हूं
4) परिवार और समाज में व्यवहार करता
हूं और अजाय रहना चाहता हूं
5) जीवन विद्या शिविर में भाग लेता
तब से लालच नहीं करता हूं।
6) जेल में या बाहर में सभी के साथ मिल-
जुल के रहना चाहता हूं

मनहरनलाल S/o भागवती
ग्राम पंचपहरा पो० चोरही
थाना तखतपुर
जिला बिलासपुर
(म० प्र०)

२० जुलाई ९८

कार्यक्रम

जेल-बंदी

जीवन विद्या शिविर

दिनांक 5-2-98 से 13-2-98 तक वार्ड नं॰ 6 में चलायागया।

मुल्यांकन —

① भुजबल S/o नन्दू → मुझे जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा इसमें मानवीय समझ है मानव को इः स्थिति में जीना ठीक लगा है जीवन विद्या शिविर और भी लगना चाहिए

② चिरन्जीव S/o ~~नरसींग~~ नरसिंह → ये शिविर अच्छा लगा जीवन को समझना और स्वरूप से जीकर चलने का तरीका को समझकर मानव के पांच प्रकार को समझा शिविर और लगना चाहिए तथा भविष्य में और शिविर करेगा।

③ मथुरा S/o अजित – जीवन विद्या शिविर बहुत ही अच्छा लगा है सभी जगह स्वयं, शरीर, परिवार, समाज, प्रकृति तथा सह-अस्तित्व में जीना बहुत ही अच्छा लगा है। शिविर लगेगा तो और करूंगा।

④ संतोष S/o पालन → समाज में जीना, परिवार में जीना इः स्थितियों में समझकर जीना, प्रकृति में जीना मुझे बहुत अच्छा लगा है और शिविर लगना चाहिए तथा मैं और भी शिविर करूंगा।

⑤ मनहरण S/o फिरंगी → जीवन विद्या शिविर में परिवार में जीना तथा समाज में जीना अच्छा लगा नियम समझकर प्रकृति में चलना सीखा और न्याय पूर्वक व्यवहार करना सीखा तथा स्वयं को समझना शिविर निरंतर चलना चाहिए तथा भविष्य में सभी शिविर में भाग लूंगा।

⑥ दिलहरण S/o बहोरिक → ये शिविर मेरा दुसरा तीसरा शिविर है। जीवन तथा शरीर को अलग-अलग ढंग से समझा तथा पूरा जीवन के स्थिति/परिस्थिति को समझा हूँ शिविर हमेशा लगना चाहिए जैसे मैं समझा हूँ उसी प्रकार सभी को समझने का अवसर मिलना चाहिए। और भविष्य

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मैं जब तक जेल में हूं तब तक शिविर करता रहूंगा
मैं अपने आसपास के लोगों को शिविर के सम्बन्ध में समझाता हूं। जेल से छूटने के बाद शिविर को समझाता रहूंगा।

(7) गंगाराम S/o अवधराम → ये शिविर अच्छा लगा नियम को खूब अच्छा समझा मन से तन, तन से धन को चलाना सिखा न्याय समझा, परिवार में जीना समझा शिविर लगाना चाहिए समाज में जीना समझा, शिविर में और भी मैं भाग लूंगा।

(8) वेदराम S/o प्रेमलाल → मैं शिविर में दो दिन आया हूं अभी ठीक से नहीं समझा हूं। और शिविर लगाना चाहिए तथा मैं उस शिविर में भाग लूंगा।

(9) पुनदास S/o चरनदास → मैं शिविर अच्छा लगा, जीवन विद्या के सभी स्थिति नियम, न्याय, समता है और शिविर लगना चाहिए और शिविर करूंगा।

(10) महेतरू S/o चमेलिया → जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा
५: स्थिति स्वयं, शरीर, परिवार, समाज, प्रकृति, अस्तित्व में जीना सीखा पहले मान के चलता था, अब जान के चलूंगा

न्याय तथा नियम को समझा हूं। और शिविर लगाना चाहिए

(11) गोवर्धन S/o बिहारीलाल → मैं शिविर में परिवार व्यवस्था समझा हूं, जीवन को समझा हूं समाज व्यवस्था को समझा हूं ये शिविर बहुत अच्छा लगा और लगाना चाहिए तथा मैं शिविर करने का आशा करता हूं।

(12) दशरथ S/o घासीराम → ये शिविर मेरा तीसरा शिविर है मैं जीवन विद्या शिविर के माध्यम से स्वयं जीवन तथा शरीर के अंतर को समझा मानव पांच प्रकार के व्यवस्था को समझकर अगर जीता है तो निरंतर सुख होता है। ये समझ में आता है। मेरे जीवन में निम्न परिवर्तन हुआ :-
(1) मेरे इच्छा के विरुद्ध कोई भी काम न होने पर क्रोध आता था वह अब नहीं है। (2) विरोधियों के प्रति हमेशा बदला लेने का भावना था वह नहीं है। (3) मैं नशा, गुड़ाखू तम्बाकू का सेवन करता था वह छूट गया (4) चिंता अधिक करता था अब मन में संतोष है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(13) गणेश प्रसाद / रामेश्वर प्रसाद ये तीन ~~[illegible]~~ शिविर है
मैं पहले झगड़ा करता था ~~[illegible]~~ अब नहीं झगड़ता शरीर
और जीवन में अलग-अलग अन्तर समझ में आया

वार्ड नं० 5

जीवन विद्या शिविर

दिनांक ...... से 24-2-98 तक

मूल्यांकन

(1) शत्रुहन S/o कुजल :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा पहले अशांत रहता था शिविर के बाद शांत रहता हूँ नियम को समझा हूँ और शिविर लगना चाहिए तथा मैं पुनः शिविर में भाग लूंगा।

(2) जगदीशप्रसाद S/o त्रिवेणी यादव :→ शिविर बहुत ही अच्छा लगा समाज में जीना तथा प्रकृति में जीना समझा और शिविर लगना चाहिए जिसमें मैं और भी भाग लेता रहूँ।

(3) रमेलाल S/o झगरू :→ शिविर मुझे अच्छा लगा सभी दिन के शिविर को समझा हूँ और शिविर लगना चाहिए।

(4) बइहाकुमार S/o रामलाल :→ मेरा दूसरा शिविर है जीवन के संबंध तथा शरीर को अलग-अलग समझा हूँ परिवार तथा समाज व्यवस्था को समझा ये शिविर सभी के लिए हमेशा लगना चाहिए तथा सभी वार्डों में लगना चाहिए तथा मैं और शिविर में भाग लूंगा।

(5) गोपेराम S/o कारोसा :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा शुरू में समझता हूँ बाद में कुछ भूल जाता हूँ। शिविर चलना चाहिए शिविर को समझने की कोशिश करता हूँ। शिविर में भाग लेने की इच्छा है।

(6) कन्हैयालाल S/o सालिकराम :→ जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा मैं पूरा-पूरा समझा हूँ स्वयं, शरीर, परिवार, समाज, प्रकृति तथा अस्तित्व में जीना अच्छा समझा हूँ। शिविर और लगाना चाहिए तथा शिविर में फिर से भाग लूंगा।

(7) गजराज S/o दुकालु :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा मेरा तीसरा शिविर है पहले लगाते होते थे उसे भुलाने लगा हूँ पहले चिन्ता करता था अब चिन्ता कम करता हूँ मैं अपने परिवार को समझा सकता हूँ। अपने आसपास में चर्चा करता हूँ। व समझाता हूँ। शिविर से समझा हूँ कि दूसरे को दुख देने से खुद को भी दुख होता है। शिविर लगना चाहिए प्रत्येक वार्ड में तथा मैं और भी भाग लूंगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(8) पंचराम S/o कलेश्वराम :→ जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा। कर्तव्य पालन करना सिखाया, सभी जगह अच्छा लगा इस शिविर से परिवार तथा जीवन को समझा हूँ और शिविर हर वार्ड में लगाना चाहिए और शिविर में भाग लूँगा।

(9) बंशी S/o रामलाल :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा शरीर तथा जीवन अलग-अलग समझा हूँ शिविर के सभी प्रकार से बहुत अच्छा लगा तथा नियम को अच्छा तरीका से समझा हूँ। और शिविर लगाना चाहिए तथा मैं और भी भाग लूँगा।

(10) गुहाराम S/o मुरितराम :→ शिविर के आखरी दिन आया हूँ तथा नियम को सुनकर समझा हूँ तो मुझे अच्छा लगा शिविर लगना चाहिए।

(11) धनपाल S/o लखन :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा, जिसमें सुना वह सभी अच्छा प्रकृति व्यवस्था तथा नियम व चरित्र को समझा हूँ। शिविर लगाना चाहिए और शिविर में मैं भाग लूँगा।

(12) बेदराम S/o धनाराम :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा शरीर तथा जीवन दोनों को अलग-2 समझा हूँ। अस्तित्व व्यवस्था को भी अच्छा समझा हूँ शिविर और लगाना चाहिए और शिविर करूँगा।

(13) रामप्रसाद S/o धरमदास :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा शरीर में जीना अच्छा लगा परिवार, समाज, अस्तित्व में व्यवस्था अच्छा लगा तथा बुद्धि में बोध का ज्ञान हुआ शिविर लगाना चाहिए तथा मैं और भाग लूँगा

(14) श्यामचंद S/o देवप्रसाद :→ मैं मेरा दूसरा शिविर है निरंतर सुख से जीने के लिए समझा हूँ बौद्धिकता तथा भौतिकता में अच्छा समझा हूँ शिविर लगाना चाहिए जिसके बाद सुन रहा हूँ मेरा मानस में वृद्धि हो रहा है। मैं बार-बार शिविर में भाग लूँगा।

कार्ड नं. 13 A+B

जीवन विद्या शिविर
दिनांक 25-2-98 से 6-3-98 तक

(1) फुलेश्वर S/o सरयू :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा परिवार में जीना बहुत अच्छा लगा मुझे शिविर की जरूरत नहीं है मैं सभी को समझ गया हूँ।

(2) शंकर S/o रामलाल :→ जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा जीवन तथा शरीर के सम्बन्ध में समझा, समाज को समझा, परिवार को भी समझा निरंतर सुख से जीने को समझ आया जीवन विद्या शिविर लगना चाहिए और मैं शिविर में भाग लूंगा।

(3) भागसिंह S/o मंगल :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा का स्थिति/परिस्थिति समझ में आया है और शिविर लगाना चाहिए तब मैं और भाग लूंगा।

(4) अजयसिंह S/o जलेश्वर सिंह :→ दस दिन शिविर किया समाज के बारे में समझा परिवार जीवन के बारे में तथा जीवन चक्र को समझा हूं और शिविर लगाना चाहिए रहूंगा तो और शिविर करूंगा।

(5) सुजन S/o रामावतार :→ जीवन विद्या शिविर दस दिन से सुना है। जीवनचक्र समाज, परिवार के बारे में सभी जानकारी हो गई। शिविर लगना चाहिए और मैं भाग लूंगा।

(6) छतेराम राठौर S/o हेतराम :→ मानव जीवन तथा शरीर के सम्बन्ध में सत्यानुभूति प्राप्त हुआ कि मानव को इस संसार में कैसे तरह से जीना चाहिए अनुसरण निरंतरता बना रहे का समझ आया समाज, परिवार, प्रकृति व्यवस्था

अस्तित्व में जीना सिखा और प्रशिक्षण चाहिए तथा आगे हमें शिविर सत्संगति मिलते रहना चाहिए।

(7) ब्रजभूषण S/o सुखदेवराम :→ जीवन विद्या शिविर में मैंने भाग लेकर जीवन के बारे में जाना कि हमें किन परिस्थितियों में चलना चाहिए जिससे हम निरंतर सुखी रह सकें इसका गहन अध्ययन किया व जाँचा मनुष्य किन परिस्थितियों में जीता है इसका भी अध्ययन किया एवं प्रकृति में हम किस प्रकार जी सकते हैं प्रकृति व्यवस्था किस प्रकार से है उसमें हमें कैसे निर्वाह करना चाहिए अध्ययन किया सारी बातों से हमें पता चला कि आज तक हम जीवन के सम्बन्ध में जानते नहीं थे इसलिए दुखी व परेशान रहते थे, हम चाहते हैं कि जीवन विद्या शिविर नियमित चले और उसमें हम अध्ययन करके आने वाले पीढ़ी को व समाज को जीवन के बारे में बताएं जिससे मैं समाज, परिवार, सभी जीवन विद्या अध्ययन कर निरंतर सुखी रहें।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक 4-5-98 से 14-5-98 तक

जीवन विद्या शिविर वार्ड - 12 B

(1) विनोद S/o रामचरण :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा, प्रकृति व्यवस्था, समाज, परिवार, स्वं तथा शरीर में व्यवस्था क्या जीवन समझाई और शिविर लगाना चाहिए तथा मैं भाग ले सकूं।

(2) शैलेन्द्र S/o गंगाराम → जीवन विद्या शिविर मुझे बहुत अच्छा लगा मैं चाहता हूँ कि ऐसा शिविर हर दम लगते रहें जिसमें मैं उपस्थित होकर और भी जीवन को समझूं जिसमें इस शिविर में जीवन, शरीर, परिवार, समाज, प्रकृति, अस्तित्व में जीना समझा तथा निरंतर सुख पाने का रास्ता समझाई।

(3) दाऊलाल S/o बुधराम → जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा समाज, परिवार, में, सम्बन्ध अपने जीवन को समझा नियम को समझा पहले मैं नशा करता था अब वह नशा छूट गया है। निरंतर सुख से जीने का रास्ता समझा और शिविर लगना चाहिये तथा मैं फिर से शिविर करूंगा।

(4) रामदास S/o घुरऊ → जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा जीवन, परिवार, सम्बन्धों के बारे में मानव प्रकार, नियम को समझा इसके समझने से हमेशा के लिए सुख लगता है और शिविर लगना चाहिए और शिविर में भाग लूंगा।

(5) भागबली S/o मंगल → ये मेरा दूसरा शिविर है और अच्छा लगा जीना समझा परिवार के संबन्ध को दः स्थिति / परिस्थिति में (अपराध) वह बहुत गलत, नासमझी के कारण समझा पहले बकता था गलती होता है समझदारी गलती नहीं होता है समझा बहुत अच्छा है और शिविर लगना चाहिए तथा और शिविर में भाग लूंगा।

(6) पंचराम S/o कलेशराम → जीवन विद्या शिविर मुझे बहुत ही अच्छा लगा प्रकृति, परिवार, शरीर, मुझे समझ में आया और शिविर लगना चाहिए तथा और शिविर में भाग लूंगा।

- मजूर हो गया ।

(4) भागरिथी S/o सुखरू → जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा प्रकृति परिवार में व्यवस्था शरीर, मानव प्रकार को समझा मुँह से गाली निकलता था, वह अब नहीं निकलता है, बिड़ी बहुत पीता था उसे कम कर दिया हूँ छोड़ने की प्रयास कर रहा हूँ और शिविर लगाना चाहिए तथा मुझे शिविर करने का अच्छा है।

(8) इतवारा S/o कमलसिंह → जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा मानना जानना जीवन, शरीर, प्रकृति की व्यवस्था को समझकर निरंतर सुख की रास्ता समझ में आया और शिविर लगाना चाहिए मैं शिविर में भाग लूंगा।

(9) मुनवा S/o ललवा → जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा ये मेरा पहला शिविर है छः: स्थिति परिस्थिति को पूरा समझता हूँ इस के अलावा जीवन विद्या तथा शरीर के तथा नियम, स्वास्थ्य, संयम को समझता हूँ। जीवन विद्या शिविर में भाग लेने से पहले (अपराध) सोचता था वह अब नहीं है पहले नशा करता था उसे छोड़ दिया हूँ मेरा जो भ्रम था क्रिया, ढाकी, मिरचाई हर तरह की विचार मानकर भ्रम होता था उसे अब जानकर निर्भ्रम हो रहा हूँ। और शिविर लगाना चाहिए तथा और मैं शिविर में भाग लूंगा सुक्ष्म में रहा शिविर से निरंतर सुख का स्थापित जब तक नहीं हो जायेगा, तब तक मैं शिविर में भाग लेता रहुंगा इस शिविर को अपने आस-पास के लोगों को समझाता हूँ।

(10) अमरसिंह S/o धासीराम → ये मेरा पहला शिविर है, जीवन विद्या शिविर मुझे बहुत ही अच्छा लगता है शिविर के माध्यम से मैं जीवन और शरीर को समझा स्वयं में छः स्थिति / परिस्थिति स्वयं में व्यवस्था शरीर में व्यवस्था परिवार में व्यवस्था समाज में व्यवस्था प्रकृति में व्यवस्था एवं सह-अस्तित्व के व्यवस्था में जीने को समझकर मानव के साथ संबंध में व्यवहार, स्थापित कर निरंतर सुख होता है ये जाना, मानव के पाँच प्रकार को समझकर मैं ये जाना कि मैं किस प्रकार के मानव के अंतर्गत जीवन यापन कर रहा हूँ, जीवन एवं पशु और, पशु और मानव के अन्तर को जाना। प्रकृति के व्यवस्था में 4 प्रकार के अवस्था प्राण, पदार्थ, जीव, ज्ञान अवस्था को समझा एवं अपने कर्तव्य क्या जाना हूँ कि प्रकृति के व्यवस्था में किस प्रकार व्यवस्था बनाकर नियम से जीते हैं, ये समझा और आगे शिविर में भाग लेता रहुंगा। और दूसरों को शिविर के बारे में बताता रहुंगा।

सहसराम S/o जिवरखन :- जीवन विद्या शिविर मेरा समझने में आता है। मैं स्व: स्थिति/परिस्थिति को समझना और मानव के सात सम्बन्ध, प्रकृति, समाज, सह-अस्तित्व के बारे में जाना। जीवन विद्या शिविर मुझे बहुत ही अच्छा लगता है। जीवन विद्या शिविर हमेशा लगता रहे जिससे मैं और भाग ले सकूं, जीवन विद्या शिविर से क्रोध, चिन्ता करता था वह दूर हो गया।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० (7)
दिनांक 31-3-13-4-98

① उमेंद्र सिंह S/o हीरासाय :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा चरित्र के सम्बन्ध में समझा, शरीर के बारे में समझा, जीवन के बारे में समझा है जीवन विद्या शिविर और लगना चाहिए और मैं शिविर में भाग लूंगा।

~~② हरप्रसाद S/o~~

② बलराम कादरी S/o भुवाचन :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा जीवन और शरीर को अलग - अलग समझा परिवार को, समाज को, प्रकृति, सह अस्तित्व को पूर्ण रूप से समझा प्रकृति के प्रत्येक अवस्थाओं को समझा है। शिविर और लगना चाहिए और मैं भाग लूंगा।

③ हरप्रसाद S/o दुखनलाल :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा जीवन और शरीर को अलग - अलग समझा छः स्थिति परिस्थिति में परिवार में जीना को समझा, समाज में जीना और प्रकृति में व्यवस्था को समझा तथा सह-अस्तित्व में जीना समझ में आया, भाग्य कहाँ से मिलता है वे जाना मैं जीवन विद्या शिविर और करना चाहता हूँ।

④ मनराखन S/o भागबली :— मैं चाहता क्या हूँ सुख और सुविधा जीवन के लिये सुख शरीर के लिये सुविधा छः स्थिति परिस्थिति स्वयं में जीना, शरीर में जीना, परिवार में जीना, समाज में जीना, प्रकृति में जीना तथा सह-अस्तित्व में जीना को समझा ~~मानना~~ जानना, मानना में जिस चीज को जानते हैं वह बदलता नहीं जानना सत्य होता है और मानना बदल जाता है और असत्य भी हो सकता है। जीवन में मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा बल होता है और मन के क्रिया आस्वादन, वृत्ति के क्रिया तुलनायें छः प्रकार के होता है चित्त के क्रिया चिन्तन चार प्रकार से बुद्धि क्रिया बोध चार प्रकार से नियम न्याय धर्म सत्य, परिवार में जीना में सात सम्बन्ध को समझा, समाज में जीना में 18 मूल्य को समझा सीमित मनुष्यों की संख्या जीवन विद्या शिविर अच्छा

ये शिविर मेरा 12 शिविर है जीवन विद्या द्वारा मेरे व्यवहार में बातचीत में नम्रता, लेनदेन में खान पान आदि में बहुत सुधार हुआ।

(5) श्यामलाल S/o पोलई :- जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा। शरीर और जीवन को अलग-अलग रूप में समझा। परिवार में जीना, समाज में जीना समझ में आया, मानव के साथ सम्बंध को समझा हूं। मैं और शिविर करना चाहता हूं।

(6) हरिनाम S/o घिरपाल :- जीवन के और शरीर के बारे में जानकारी हुआ, परिवार में व्यवस्था को समझा, प्रकृति के व्यवस्था में चार अवस्था प्राण, पदार्थ, जीव एवं ज्ञान अवस्था को समझा हूं। अस्तित्व के बारे में शक्ति समझ में आया। जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूँ।

(7) मुरारी सिंह S/o माखन सिंह :- सुख में जीने का तरीका समझाये है ये समझा हूं। मैं हर शिविर में भाग लेता हूं और इस जीवन विद्या शिविर में सुनने और पढ़ने से मुझे बहुत शांति और सुख मिला मैं सदा शिविर में भाग लेता रहूंगा।

(8) अशोक कुमार S/o जयलाल :- मैं जीवन और शरीर को अलग-अलग समझा हूं। परिवार में जीना, समाज में जीना, स्वयं में जीना, प्रकृति में जीना समझ में आया। मुझे जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा मैं और जीवन विद्या शिविर करना चाहता हूं।

(9) सीताराम S/o रामाधार (कैदी) मुझे जीवन समझ में आया और शरीर को समझा, परिवार में व्यवस्था को समझा; मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूं।

- जेल महानिदेशक को

अब तक के सम्पूर्ण कार्यक्रम एवं उसके परिणाम.

12 Circle जेल

Love letter from D.M.

यह चिट्ठी मात्र सम्बोधन नहीं है
बल्कि जीने की कला है।

मानसिक आवश्यकता

Bilaspur के कितने कैदी परिणाम हो सकते हैं।

यदि २-2 एकसाथ 10 दिन का

शामदयाल मार्कण्डे

ग्राम - जौलगांव

थाना - बेंदरिया

पो - बरमपुर

तह - लोरमी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

श्री भोलाराम व. मोतीराम मूल्यांकन (१) शिविर

मैं ता. ८।९-९८ को जेल आया फिर मैं जीवन विद्या शिविर में भाग लिया ता. २१ से २६।१०।९८ को अमरकंटक वाले साधन कुमार गुरु जी इस जीवन विद्या से मानव व्यवहार परिवार प्रकृति के साथ जीने का मार्ग दर्शन बताया उसे सुन समझ कर जाना और अपने में पहले से ही व्यवहार परिवार प्रकृति एवं समाज में जीने की कुछ समझ और स्वंय में सुधार बना कर चलता था उसमे कुछ कमी को इस विद्या के माध्यम से पूरा समझ कर मुझे विश्वास हुआ ~~था~~ कमी को सुधार में ध्यान रखुगा ॥

(१) द्वि पहला शिविर स्कूल वार्ड में लगा ता. २०।११-९८ से ३. ता. को समाप्त हुआ मैं प्रयास में लगा हूँ बोलने के लिए मैं भी जीवन विद्या ~~पढ़~~ पढा सकु

(२) यह है की मैं पहले से ही शाकाहारी भोजन मेरा खान पान है।

(३) मेरे पास गांजा भांग तम्बाखु पान या कोई प्रकार का नशा नहीं है

(४) और मैं अपने वाणी द्वारा अशब्द नहीं बोलने का सुधार किया हूँ

(५) ~~मैं~~ शारिरिक तथा मानसिक या वाचिक द्वारा किसी को कष्ट देना नहीं चाहता हूँ।

(६) हम सब मानव एक समान है उसके साथ ताल मेल बनाकर अच्छी तरह एंव आदर सम्मान बना कर रखुंगा और जिसे मैं निरंतर सुख से जी सकुं।

(7) व्यवहार में आज अपने को लोग जांच कर जल में पानी कोई भी दे देता है मुझे लाईन का जरूरत नहीं पडता ना मेरे साथ अशब्द बात भी नहीं करते हैं।

(८) मैं समझता हु दो का समझदारी ही में सुख का अनुभव है ॥

वा. भोलाराम
ता. ३।११।९८ को मूल्यांकन दिया

श्री रविशंकर कुर्रे S/o श्री धनाऊराम 20-11-98 से 30-11-98 तक

① हम जीवन विद्या को नहीं जानते थे जेल आने के बाद ही समझा मुझे अच्छा लगा शिविर मे सत्य बात बताई गई मैं जो शिविर मे भाग लेने के बाद खुद बोलता हूं और आगे बोलता ही रहूंगा शिविर लूंगा साथ ही साथ अपने जीवन मे उतारने का प्रयास करूंगा

② तीसरा शिविर के बाद व्यवहार मे काफी बदलाव आया जीवन विद्या शिविर मे मुझे काफी सम्मान मिला अपशब्द का प्रयोग बंद हो गया मैं अपने सम्मान के लिये दूसरे का आदर व सम्मान करता हूं बदले मे उत्पन्न भाव मे खुशी मिलती है यह मुझे अनुभव होने लगा

③ यह की :- मैं पहले मन से कार्य करता था अब सोच समझ कर कार्य करता हूं यह क्षमता मेरे मे जागृत हुई है।

④ विचार मे भी काफी परिवर्तन आया भेद भाव नहीं करता हूं मानव सभी समान समझता हूं व्यवहार विश्वास के साथ जीने मे सुख समझता हूं

⑤ नशा के बारे मे :- परिवार को छोड़ सकता हूं तो इसका एवं निष्ठापूर्वक छोड़ सकता हूं ये प्रयास किया छोड़ दिया

⑥ कोई भी छोटा मोटा गलती किसी के होने पर गुस्सा करता था अब बिलकुल नहीं करता हूं मुझे शांति मे सुख अनुभव होने लगा है।

⑦ पहले अन्य कोई हमसे दुरव्यवहार करता था अपशब्द बोल देते थे उन अज्ञान मानव भाईयों को शिविर मे समझाया उनसे अपनों मे काफी प्रचार प्रसार हुआ अब हमें गुरुजी के भाव (संज्ञा) से संबोधित करते हैं उनके साथ ही हमारा भी व्यवहार सम्मान के रूप मे बदल गया

[signature] 1-12-98 हस्ताक्षर

जीवन विद्या शिविर दिनाँक 20-11-98 से 30-11-98 [illegible]

1) माधव S/o गुजा → ये शिविर अच्छा लगा, ये मेरा पहला शिविर है, इसके अन्तर्गत जो शिक्षा दिया गया बहुत ही अच्छा लगा एवं व्यवस्था कुछ कुछ समझ मे आया, ये शिविर निरन्तर चलना चाहिए। जब भी ये शिविर लगेगा मै भाग लूगा।

(2) श्यामकुमार S/o रोपणराम → ये मेरा पहला शिविर है इस शिविर से मुझे ज्ञान मिला एवं समझ मे आया कि जीवन के साथ शरीर का क्या संबंध है। मै सिमित सुविधा समझा, इसी अनुसार मे अपना जीवन यापन करूंगा ये शिविर जब भी लगेगा मै भाग लुगाँ।

(3) लक्ष्मीकान्त तिवारी S/o उमाकान्त तिवारी → ये मेरा पहला शिविर है, जीवन और शरीर को अलग-अलग समझा, तथा व्यवस्था में स्वयं को शरीर को परिवार को समाज को अस्तित्व व्यवस्था को समझा, संबंध न्याय तथा नियम मानव के प्रकार व्यवहार समझ मे आया, मेरे व्यवहार मे परिवर्तन हुआ अब मै नियम से लाइन मे रह कर अपना राहत लेता हुँ, क्रोध नही करता हु एवं खुसी का अनुभव कर रहा हुं ये शिविर जहां भी लगे मै भाग लुगां एवं जेल से निकलने के बाद अन्य भाइयों को जीवन विद्या को समझाऊगा।

(4) आगरसाय S/o हरिराम → ये मेरा पहला शिविर है परिवार एवं संबंध को समझा तथा व्यवसाय को समझा, जीवन और शरीर को अलग-अलग समझा न्याय को समझा यहां से निकल कर मै परिवार को नियम पूर्वक क्रोध को त्याग कर सही नियम पूर्वक चलाऊगा, जिससे मेरा परिवार सुखी एवं आत्म निर्भर हो सके ये शिविर जब भी लगेगा - मै भाग लुगां।

(5) शुद्दू राम S/o मंगीराम → ये शिविर अच्छा लगा शरीर और जीवन अलग अलग समझा परिवार समझ मे आया मै पहले अनजान मे गाली गलौज करता था जिसका मुझे अफसोस है। अब ये सारी बाते छोड़ चुका हु एवं जीवन विद्या का अनुकरण कर अपना सँबंध सही रख कर जीवन यापन करुगां ये शिविर जब भी लगेगा मै भाग लुगां।

(6) परमेश्वर S/o श्री राम सेवक → ये मेरा पहला शिविर है, मै समझता हुं यह शिविर व्यापक रूप से चलना चाहिए। मुझे परिवार व्यवस्था, न्याय व्यवस्था प्रकृति व्यवस्था समझ मे आया, मै अपने वार्ड में भी जीवन विद्या का चर्चा करता रहता हुं यहां से निकलने के बाद समाज के भाईयों को इस संबंध मे चर्चा करुगाँ एवं जीवन विद्या के अन्तर्गत जो अन्य भाई प्रशिक्षित हो कर कार्य कर रहे है उनसे सम्पर्क बनाऊगां एवं इस अभियान को व्यापक बनाने का प्रयत्न करुगाँ।

(7) दिलीप S/o मुन्डाराम → ये मेरा पहला शिविर है, जीवन और शरीर अलग-अलग समझा परिवार एवं संबंध, समाज व्यवस्था समझ में आया ये शिविर जब भी लगेगा मै भाग लुगां एवं मेरे व्यवहार में भी शान्ति का अनुभव कर रहा हु।

(8) पवन साय S/o जयकरन → ये मेरा पहला शिविर है। मुझे परिवार व्यवस्था समाज एवं प्रकृति व्यवस्था समझ मे आया, न्याय समझ मे आया इस विद्या का अनुकरण मै जीवन भर करता रहुगां जब भी ये शिविर लगेगा मै भाग लुगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(9) सेवकराम S/o विसम्भर → ये मेरा पहला शिविर है अच्छा लगा. संबंध परिवार, न्याय प्रकृति व्यवस्था समझ मे आया जीवन और शरीर को अलग-अलग समझा।

(10) घनसाय S/o जनीराम → ये मेरा पहला शिविर है ये शिविर अच्छा लगा मुझे परिवार व्यवस्था समाज व्यवस्था एवं शरीर और जीवन को अलग अलग अन्तर से समझ मे आया। बाहर निकल कर अन्य साथीयों से चर्चा करुंगा फिर शिविर जब भी लगेगा मैं भाग लुंगा।

(11) झाड़ू मंडल S/o हण्डा मंडल → ये मेरा पहला शिविर है। परिवार व्यवस्था समाज व्यवस्था एवं शरीर और जीवन को अलग-अलग समझा मैं अन्य साथीयों के साथ चर्चा करुंगा एवं जब भी ये शिविर लगेगा मैं भाग लुगाँ।

(12) लगान सिंह S/o चैतराम → ये मेरा पहला शिविर है परीवार व्यवस्था समाज व्यवस्था समझ में आया शरीर और जीवन समझ मे आया। मैं बाहर निकल कर इस विद्या का प्रचार करुगाँ एवं परिवार के अन्तर्गत रह कर परिवार के साथ सही संबंध स्थापित कर जीवन यापन करुगाँ एवं जब भी ये शिविर लगेगा मैं भाग लुगा।

(13) विजय S/o दुजराम → ये मेरा पहला शिविर है अच्छा लगा मुझे परिवार एवं समाज व्यवस्था समझ मे आया इसी के अन्तर्गत मै अपना गुजर बसर करुंगा जब भी ये शिविर लगेगा मै अवश्य भाग लुगाँ।

(14) कुमारसाय S/o जगमोहन → ये मेरा पहला शिविर है अच्छा लगा परिवार एवं शरीर के संबंध में समझ मे आया व्यवहार मे सुधार हुआ जब भी ये शिविर लगेगा मैं भाग लुगाँ।

दिनांक 20.11.98 से 28.11.98 तक वार्ड क्रमांक सात में जीवन विद्या लगाया गया। प्रस्तुत है, प्रशिक्षार्थीयों का मुल्यांकन।

[1] रामहरी आ. रिखीराम:- यह शिविर मुझे अच्छा लगा। मेरे हिसाब से आदमी [लोभ] लालच क्रोध, मोह त्याग दे तो वह निरन्तर सुखी हो सकता है। इस शिविर ने मुझे बहुत प्रभावित किया, जब भी ये कार्यक्रम आयोजित होगा। मैं भाग लूंगा। गृहस्थाश्रम चलाने के लिए मुख्य रूप से रोटी कपडा और मकान की आवश्यकता होती है। इस विद्या के अनुसार चलने से ये जरूरत की चिजे आसानी से सुलभ हो सकती है।

[2] चैतुराम आत्म कन्हैया:- यह मेरा पहला शिविर है, ये शिविर अच्छा लगा इस शिविर से मुझे ये शिक्षा मिला जब आदमी, आदमी को जानले व्यवस्था को जानले तो सारी अशांति दुर हो जाएगा, एवं मनुष्य क्रमशः विकास की ओर अग्रसर होगा, ये शिविर जब भी लगेगा, मैं अवश्य भाग लूँगा।

[3] दाऊ आ. चिरपालसिंह:- ये मेरा पहला शिविर है, ये शिविर अच्छा लगा, मैं अब व्यवस्था को समझ गया हुँ. [समाज व्यवस्था, परीवार व्यवस्था] एवं इसी अनुसार ही चलूँगा, मेरे अंदर सारी बाते चित्रित हो रहा है, जिसे मैं व्यक्त नहीं कर पारहा हुँ. कोशिश करुँगा और मुझे विश्वास है, एक दिन व्यक्त करने में कामयाब हो जाऊँगा। मनुष्य जीवन विद्या को ढंग से जान ले, तो सारी समस्या का हल हो जाएगा।

[4] चन्दुलाल आ. कार्तिकराम:- ये शिविर मुझे अच्छा लगा ये शिविर में भाग लेने के बाद मैं शान्ति का अनुभव कर रहा हुँ, ये समझ में आया सह अस्तित्व में रहने से बहुत कुछ समस्या का समाधान हो जाएगा, ऐसा मेरा समझ है, मैं जीवन विद्या का पूर्ण जानकारी प्राप्त करना चाहता हुँ, जब भी ये शिविर लगेगा। मैं भाग लूंगा।

[5] सम्मारु आ. मनबोध:- जीवन विद्या अच्छा लगा, ये मेरा पहला शिविर है, अब जीवन विद्या में भाग लेने के बाद मुझे अहसास हुआ मेरे पहले का विचार बहुत गलत था, एवं समाज, देश के बहुत सारे मनुष्य जीवन तो जीते हैं, लेकिन जीवन से अपने आप से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ हैं, ये शिविर जब भी लगेगा मैं अवश्य भाग लूगाँ।

[6] आजुराम आ. लैनु:- जीवन विद्या अच्छा लगा, ये मेरा पहला शिविर है इस विद्या से बहुत ही सुख का अनुभव कर रहा हूँ, मैं अब परिवार व्यवस्था के अन्तर्गत जीवन यापन करुँगा, ये शिविर जब भी लगेगा, मैं अवश्य भाग लूंगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

[7] बद्री s/o अवध :- ये शिविर अच्छा लगा, ये मेरा पहला शिविर है. मुझे व्यवस्था के बारे में पूर्ण जानकारी नहीं हुआ, लेकिन कुछ कुछ समझ में आया, मैं आज इसी व्यवस्था का अनुकरण करुगाँ। एवं जीवन विद्या जानकारी के लिए जब भी शिविर लगेगा मैं भाग लुँगा।

[8] मनाहरराम s/o परसराम :- ये शिविर अच्छा लगा, ये मेरा पहला शिविर है. समाज व्यवस्था, मुझे समझ में आया, सम्बन्ध समझ में आया, अस्तित्व समझ में आया। अब मैं व्यवहार बनाकर रखुगाँ। एवं सभी से आत्मीयता पूर्वक व्यवहार करुगाँ। जब भी शिविर लगेगा, मैं भाग लूगाँ।

[9] भागवत प्रसाद s/o बैसाखु :- ये मेरा दुसरा शिविर है, परीवार समझ में आया, न्याय समझा, नियम समझा, व्यवहार समझ में आया, मैं हमेशा जीवन विद्या का अनुकरण करुगाँ। एवं आस पास के लोगों के साथ इस व्यवस्था का चर्चा करुगाँ।

[10] रामायणदास s/o परसनदास मानीकपुरी :- मुझे जीवन विद्या शिविर में पढ़कर मेरे जीवन में परिवर्तन हुआ, व्यवस्था में जीना जो कि हर मानव का चाहत सुख है, सुख से जी सकता हुँ, न्याय से व्यवहार बनाकर रखना, समाज में किस तरह से चलना है, यह मैं समझ गया परीवार को भी किस तरह से चलाना है, और चलना है, यह मैं समझ गया, और मैं समझता रहुगाँ, और अन्य लोगों को भी समझाता रहुँगा।

वार्ड नं. 5 जीवन विद्या शिविर दिनांक 13-10-...

29-10-98 से 30-10-98 तक

(1) तीजराम S/O जोहर साय → शिविर मे मेरा ये पहला दिन था मुझे अच्छा लगा मैं नियमित रूप से शिविर में भाग लूगा ये शिविर हमेशा लगनी चाहिए

(2) केदराम S/o धनराम → ये शिविर मुझे अच्छा लगा पहले मैं अक्रोश मे आ जाता था अब अक्रोश नही करूगा व्यवहार मे सुधार लाऊगा अपने परिवार एवं समाज में जिवन विद्या अनुसार चलके अपना जीवन यापन करुगां।

(3) प्रेम साय S/O बधना → ये शिविर मुझे अच्छा लगा मैं पहले किसी भी बारे मे सोच नही सकता था अब थोड़ा सा मुझ में परिवर्तन हुआ है. इस शिविर भाग लेने के कारण मैं अब गुस्सा नही करुगा अपने व्यवहार में परिवर्तन लाऊगां जब भी शिविर लगे मैं इस शिविर मे अवश्य भाग लूगां।

(4) मोगी मुखीया S/O छटू मुखीया → ये शिविर मुझे अच्छा लगा मैं तो अनपढ़ हूं अब मुझे ज्ञान हो रहा है कि मैं भी बहुत कुछ कर सकता हूं मैं अब जेल में साक्षर बनुगा यहा पढ लिख कर जिवन विद्या का और अध्ययन करुगा ये शिविर मुझे अच्छा लगा मैं शिविर जब भी लगे उसमे अवश्य भाग लूगां।

(5) मंगलु S/O बैजनाथ → ये शिविर मुझे अच्छा लगा मुझे अब लगने लगा कि जीवन विद्या से ही अपने को सुखी रख सकते है और समाज को भी मनुष्य को वास्तविक ज्ञान दे सकते हैं। मेरे मे जो गुसैला पन था वो शिविर मे आने से कम हुआ ये शिविर और लगना चाहिए।

(6) गनेश S/o राम खिलावन → ये शिविर मुझे अच्छा लगा अब मैं अपने जीवन मे सुधार लाना चाहता हूं अब मैं स्वयं मे परिवार मे जीना चाहता हुं ये शिविर जब भी लगे इसमे मैं भाग लूगां।

(7) भागवत S/O बैसाखुराम → ये शिविर अच्छा लगा, अब मै अपने जीवन मे सुधार लाना चाहता हु अब मैं स्वयं मे परिवार मे जीना चाहता हु. ये शिविर जब भी लगे इसमे भाग लुगां दूसरे को दुख दूगा तो मेरे को भी दुख मिले अर्थात नही देना चाहिए जीवन विद्या ही अपनाना है क्यो की इसी में निरंतर सुखी हो सकता है। ये शिविर निरंतर लगना चाहिए।

(8) मेलाराम S/O मोतीराम → जीवन विद्या से ज्ञान मिला कि परिवार एवं समाज में वास्तविक ज्ञान क्या है ये मुझे समझ मे आया मै इसी आधार पर जीवन यापन करना चाहता हुं मै निरंतर सुखी होना चाहता हूं निति व्यवहार जीवन विद्या मे बताया गया है ये मनुष्य जाति का सही विकास कर सकता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

विजय वर्मा
अध्यक्ष
ग्रामीण ज्योति संस्था पथरिया
पो०- पथरिया
जिला - बिलासपुर (म.प्र.)
पिन - 495335

date -
स्थान -

1. गणेशराम
2. करणराम
3. शामू
4. हरप्रसाद सेवक
~~सालिक~~
5. सालिकराम

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर - वार्ड नं० 6

क्र०	दिनांक	नाम व पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रवेश	वार्ड नं.
1	5-2-98	भुजबल S/o नन्दू	40	10वी	कृषि	1-1-96	6
2	से	चिरंजीव S/o नरसिंह	25	8वी	मजदूरी	19-1-98	6
3	13-2-98	मथुरा S/o अजित	34	3री	कृषि	1-1-96	6
4	तक	संतोष S/o पालन	27	8वी	दुकानदारी	6-1-98	6
5	वार्ड 6 में	मनहरण S/o फिरंगी	35	6वी	मजदूरी	1-2-98	6
6		गंगाराम S/o अवधराम	38	3री	कृषि	9-12-97	6
7		बेदराम S/o प्रेमलाल	40	अनपढ़	कृषि	21-1-98	6
8		फूलदास S/o चंदरमन	45	अनपढ़	कृषि	12-1-97	6
9		महेन्द्र S/o कसीया	45	अनपढ़	कृषि	12-2-96	6
10		गोवर्धन S/o बिहारीलाल	25	4थी	कृषि	5-11-97	6
11	वार्ड नं० 5	शत्रुहन S/o कुंजल	37	4थी	कृषि	15-10-96	5
12	में 14-2-98	जगदीशप्रसाद S/o त्रिवेणीप्रसाद	51	9वी	कृषि	8-2-98	5
13	से	रामेलाल S/o फागू	27	अनपढ़	कृषि	29-12-96	5
14	24-2-98 तक	गोकोराम S/o भरोसा	45	2री	कृषि	4-10-97	5
15		कन्हैयालाल S/o सालिकराम	40	10वी	कृषि	14-2-98	5
16		पंचराम S/o कलेशराम	35	5वी	कृषि	28-1-98	5
17		बंशीराम S/o रामलाल	27	अनपढ़	मजदूरी	19-2-97	5
18		गुहाराम S/o सुखनराम	27	अनपढ़	कृषि	28-4-95	5
19		धर्मपाल S/o लखमू	50	11वी	ड्राइवर	20-10-97	5
20		बेदराम S/o धनाराम	22	साक्षर	मजदूरी	28-6-96	5
21		रंजनप्रसाद S/o धरमदास	30	5वी	कृषि	4-7-95	5
22		श्यामचन्द S/o देवप्रसाद	42	4थी	कृषि	22-8-96	5
23	25-2-98	फलेश्वर S/o सरधू	26	7वी	कृषि	2-12-97	13
24	से 6-3-98 तक	शंकर S/o रामफल	34	4थी	कृषि	9-2-98	13
25		भागसिंह S/o मंगल	23	4थी	कृषि	12-9-97	12
26		अजयसिंह S/o फलेश्वर	32	8वी	कृषि	18-2-98	12
27		रंजन S/o रामावतार	25	5वी	~~कृषि~~ मजदूरी	1-1-98	13
28		छबेराम S/o हेतराम	33	11वी	कृषि	20-1-98	13
29		कुलभूषण S/o सुखदेराम	27	11वी	~~कृषि~~ मजदूरी	16-2-98	13
30	7-3-98	विनोद S/o रामायण	28	12वी	मजदूरी	2-4-97	12
31	से	शैलेन्द्र S/o गंगाराम	24	12वी	कृषि	2-2-97	12
32	14-3-98	दाऊलाल S/o बुधाराम	35	अनपढ़	कृषि	4-9-97	12
33	तक	रामदास S/o धुरऊ	35	अनपढ़	कृषि	6-8-97	12

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

पता	रिहा / जेलग्रा०
ग्रा० पचबहरा पो० बेलसरी तह० तखतपुर जि० बिलासपुर	
मु० पो० तोरवा नाका बिलासपुर	रिहा
ग्रा० पचबहरा पो० बेलसरी तह० तखतपुर जिला बिलासपुर	
मु० खैरखन पो० इतापकल लोरमी बिलासपुर	
मु० गाड़ामोर पो० सारागांव तह० सक्ति बिलासपुर	रिहा
मु० पो० भालूखोंधरा तह० लोरमी बिलासपुर	
मु० पो० कोयलारी कला कुण्डा मुंगेली बिलासपुर	
मु० खुरसी पो० खोदरा तह० मुंगेली बिलासपुर	
मु० बेंदरकापा पो० सिलतरा मुंगेली बिलासपुर	
मु० परसदा पो० रतनपुर तह० जिला बिलासपुर	रिहा
मु० दलदी पो० कुतलापुर तह० पण्डरिया बिलासपुर	
मु० पो० रेलवे कालोनी तारबाहर बिलासपुर	
ग्रा० कोकिखर्री पो० सीरमौना तह० कटघोरा जिला बिलासपुर	
ग्रा० गातापार पो० भालूखोंधरा तह० लोरमी बिलासपुर	
ग्रा० लोदहा थाना खरसीया जिला रायगढ़	
ग्रा० छतौना पो० व तह० कोटा जिला बिलासपुर	
मु० पो० बरेला तह० मुंगेली बिलासपुर	
ग्रा० धौंराकुड़ी पो० सीउड़ तह० जांजगीर बिलासपुर	
मु० पो० चैतमा पाली बिलासपुर	
ग्रा० पो० पथरीया तह० मुंगेली बिलासपुर	
ग्रा० खाड़ापानी पो० फुलवारी तह० लोरमी बिलासपुर	
मु० पो० खजरानी तह० सक्ति बिलासपुर	
मु० पो० करसवानी डभरा सक्ति बिलासपुर	रिहा
मु० पो० अचानकपुर चकरभाठा बिलासपुर	रिहा
मु० गातापार पो० भालूखोंधरा लोरमी बिलासपुर	
मु० पो० बांकीमोंगरा कोरबा बिलासपुर	रिहा
मु० पो० मझगांव सेमरिया जिला सतना	रिहा
मु० जरहवा सक्ति बिलासपुर	
मु० पो० चोरभट्ठी थाना जरही शहडोल	रिहा
मु० पो० कुटीखार मस्तुरी बिलासपुर	रिहा
मु० पो० हरदीबाजार कुसमुण्डा बिलासपुर	रिहा
मु० पो० कुटेला पंचपेड़ी बिलासपुर	रिहा
मु० पो० नवापारा पाली बिलासपुर	

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

रोल न
विषय
शाला

क्रमांक	दिनांक	नाम व पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्टि
34	7-3-98 से	पंचराम S/o कोलेशराम	23	4थी	कृषि	28-1-98
35	14-3-98	भागीरथी S/o सुखरू	34	अनपढ़	कृषि	20-2-97
36	तक	ईश्वरदास S/o कमीनदास	35	8 वीं	कृषि	7-9-97
37		कुनवा S/o ललवा	32	अनपढ़	कृषि	10-1-98
38		सहसराम S/o जिवराखन	26	7 वीं	कृषि	10-1-98
39	31-3-98	आलूराम S/o लैनू	50	अनपढ़	कृषि	27-3-98
40	से	हरिनामसिंह S/o दिरपालसिंह	36	8 वीं	कृषि	17-8-96
41	15-4-98	हरप्रसाद S/o दुखनलाल	35	8 वीं	कृषि	7-3-98
42	तक	उमेंद सिंह S/o हीरासिंह	40	अनपढ़	कृषि	13-11-97
43		अशोक S/o जयलाल	24	5 वीं	कृषि	4-10-97
44		श्यामलाल S/o कोलाई	42	साक्षर	कृषि	9-6-96
45		बलदाऊ S/o शिवाधीन	42	12 वीं	व्यवसाय	13-12-97
46	28-4-98	सुरेश S/o मनीराम	25	4थी	मजदूरी	12-4-98
47	से 13-5-98	परदेशी S/o छोटूराम	26	8 वीं	कृषि	4-9-97
48	तक	जगदीश S/o ज्ञानदास	25	12 वीं	कृषि	12-4-98
49		मान सिंह S/o बहोरन	42	8 वीं	नौकरी	7-5-98
50		गांड़ाराम S/o ननकीराम	65	अनपढ़	कृषि	17-1-98
51		रामावतार S/o विक्रम	26	अनपढ़	मजदूरी	2-9-97
52		रघराम S/o बुलकू	28	3री	कृषि	31-1-98
53		भूखऊ S/o जगदेव	45	4थी	कृषि	20-3-98
54		रमेश S/o सुखाराम	22	8 वीं	कृषि	2-7-98
55		अच्छेराम S/o मनीराम	62	अनपढ़	कृषि	27-12-97
56		त्रिवेणीप्रसाद S/o मंगरू	28	7 वीं	कृषि	2-12-97
57		रामलाल S/o संतराम	45	अनपढ़	मजदूरी	7-4-98
58		कृपाशंकर S/o लक्ष्मीप्रसाद	30	5 वीं	कृषि	3-2-98
59		संतकुमार S/o अजमेरसिंह	25	6 वीं	कृषि	17-3-98
60	14-5-98	कायादास S/o पचकौंड़	65	अनपढ़	कृषि	10-8-9[illegible]
61	से	चंदराम S/o छोटूराम	30	8 वीं	विद्यार्थी	2-4-98
62	25-5-98	सत्यप्रकाश S/o रैदास	17	8 वीं	मजदूरी	12-3-98
63	तक	गयपाल S/o [illegible]वती	17	3री	मजदूरी	7-3-98

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

वार्षिक परीक्षा 1998

कक्षा :-

रोल नं०

दिनांक

विषय

प्रश्न पत्र

शाला

जेल प्रविष्ट	वार्ड नं.	पता	रिहा/जेलक्र०
28-1-98	12	मु० पो० सेतौना कोटा बिलासपुर	
20-2-97	12	मु० पो० चिंगराज सरकंडा बिलासपुर	
7-9-97	12	मु० पो० भोजपुरी हिर्री बिलासपुर	
10-1-98	3	मु० कनेरी पो० पिरइया बिल्हा बिलासपुर	रिहा
10-1-98	3	मु० कनेरी पो० पिरइया बिल्हा बिलासपुर	रिहा
27-3-98	7	मु० पो० उजियारपुर बरमपुर लोरमी बिलासपुर	
17-8-96	7	मु० पो० नवागांव डींडोरी लोरमी बिलासपुर	
7-3-98	7	मु० ~~के०~~ भुन्डा पो० गनियारी बिलासपुर	
13-11-97	7	मु० सरही पो० पेन्ड्रा बिलासपुर	रिहा
4-10-97	7	मु० पो० बहेराकुड़ा कोटा बिलासपुर	
9-6-96	7	मु० पो० बस्ती बगरा गौरेला बिलासपुर	
13-12-97	7	मु० पो० उरतुम सरकंडा बिलासपुर	
12-4-98	8	मु० पो० खोंगाकोनी बिलासपुर	
4-9-97	8	मु० पो० मस्तुरी बिलासपुर	रिहा
12-4-98	8	मु० पो० पलाड़ीकला बाराद्वार सक्ति बिलासपुर	
7-5-98	7	मु० पो० हिर्रीमाइंस ~~चकर~~ चकरभाठा बिलासपुर	
17-1-98	8	मु० पो० गढ़ कटघोरा बिलासपुर	
2-9-97	8	मु० पो० लोरमी बिलासपुर	
31-1-98	8	मु० पो० चकरभट्ठी जैजेपुर बिलासपुर	
20-3-98	8	मु० पो० केंदा कोटा बिलासपुर	
2-7-98	8	मु० पो० भैरा कोटा बिलासपुर	
27-12-97	8	मु० पो० मुकता मालखरौदा बिलासपुर	
2-12-97	8	मु० पो० पतेराडोला गौरेला बिलासपुर	
7-4-98	8	मु० पो० देवरमाल कोरबा बिलासपुर	
3-2-98	8	मु० पो० राजपुरा कोटा	
17-3-98	8	मु० पो० झिनपुरी पसान बिलासपुर	
10-8-97	16	मु० पो० गतवा थाना जांजगीर बिलासपुर	
2-4-98	14	मु० पो० देवरमाल कोरबा बिलासपुर	
12-3-98	16	मु० पो० बांकीमोंगरा कोरबा बिलासपुर	
7-3-98	16	मु० पो० भरारी थाना कोटा बिलासपुर	रिहा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

क्रमांक	दिनांक	शिविरार्थी व पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	कार्ड नं.
64	14-5-98	गुरुप्रसाद S/o श्यामचंद	18	6 वी	टेलर	24-11-97	16
65	से	संतोषकुमार S/o श्रीजराम	20	10 वी	विद्यार्थी	16-7-97	16
66	25-5-98	मनोजकुमार S/o श्रीराम	18	10 वी	मजदूरी	15-4-98	16
67	तक	बंशीलाल S/o द्वारिका	21	8 वी	कृषि	3-2-98	16
68		रामलाल S/o हीरासिंह	33	3 री	कृषि	25-8-98	03
69	26-5-98	अचलराम S/o तिरथराम	60	8 वी	कृषि	20-5-98	14
70	से	भागीरथी S/o जन्तु	55	3 री	कृषि	12-9-97	14
71	9-6-98	पिंकू सुरेश S/o मन्नूलाल	19	8 वी	दुकानदारी	6-11-97	15
72	तक	अंजोरी S/o सुखराम	45	5 वी	मजदूरी	22-5-97	15
73		संतोष S/o टीकाराम	22	1 ली	मजदूरी	21-4-98	15
74		श्रीशंकर S/o रतनु	55	अनपढ़	कृषि	25-10-97	15
75		अवधराम S/o रामदयाल	40	5 वी	मजदूरी	18-3-98	15
76		मिलाराम S/o दादुराम	40	अनपढ़	कृषि	13-11-97	15
77		रमाकांत S/o जिवराखन	22	5 वी	मजदूरी	23-7-97	15
78		द्वारिका S/o लरहासाहू	54	5 वी	कृषि	27-5-97	15
79		बेगाराम S/o केशर साहू	50	3 री	कृषि	23-8-96	15
80		महेन्द्र चौबे S/o श्रीरामचंद	48	8 वी	नौकरी	27-4-98	14
81	13-6-98 से	भरतकुमार S/o गणेशराम	35	8 वी	नौकरी	13-6-98	15
82	29-6-98	सौखतप्रसाद S/o गरीबाकाछी	60	अनपढ़	कृषि	19-6-98	14
83	तक	रामसाय S/o बलदेव	60	-//-	मजदूरी	2-5-98	14
84		चैतराम S/o सुखरन	55	-//-	मजदूरी	21-3-98	14
85		ननकुराम S/o चतुरसिंह	75	-//-	कृषि	1-5-98	14
86		रामचरण S/o इन्दराम	60	-//-	कृषि	31-3-98	14
87		मंगलूराम S/o महेशराम	75	-//-	कृषि	31-5-98	14
88		बुधेराम S/o चैतराम	40	-//-	कृषि	10-12-97	14
89		बिसाहूराम S/o जनकराम	65	-//-	कृषि	2-4-98	14
90		चोटीराम S/o ननजतिया	50	-//-	मजदूरी	10-7-97	14
91		छोटेलाल S/o मुरतसिंह	62	3 री	कृषि	11-3-98	14
92	3-7-98	सुरेशकुमार S/o पंजुमल	38	8 वी	कृषि	8-7-98	1
93	से	रफीक S/o गफूर खान	40	12 वी	कृषि	8-7-98	1
94	16-7-98	शिवसिंग S/o हरीसिंग	35	2 री	कृषि	28-6-98	1
95	तक	लक्ष्मणप्रसाद S/o टीकाराम	30	3 री	मजदूरी	7-7-98	1

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

वार्ड नं.	पूरा पता	रिहा/जेल ट्रां.
16	मु॰ रामभाठा पो॰ थाना डभरा बिलासपुर	
16	मु॰पो॰ मंड़मंद थाना कोरबा बिलासपुर	रिहा
16	मु॰पो॰ थाना सक्ती बिलासपुर	
16	मु॰ पो॰ कुटीपाली थाना डभरा बिलासपुर	
03	मु॰ नवापारा पो॰ जटगा थाना बांगो कटघोरा बिलासपुर	
14	मु॰ पो॰ बैगाकापा थाना लोरमी बिलासपुर	रिहा
14	मु॰ पो॰ बीजाभाठा थाना कुवड़ा बिलासपुर	
15	मु॰ पो॰ टिकरापारा मन्नू चौक सीटीकोतवाली बिलासपुर	
15	मु॰ पो॰ पैरहा (बुढ़ेली) थाना पथरिया बिलासपुर	
15	मु॰ पो॰ तालदेवरी थाना जैजैपुर बिलासपुर	
15	मु॰ पो॰ कलमी थाना रायगढ़ रायगढ़	रिहा
15	मु॰ पो॰ मड़वापाली थाना चन्द्रपुर बिलासपुर	
15	मु॰ पो॰ जमड़ी खुर्द थाना पेन्ड्रा बिलासपुर	
15	मु॰ पो॰ परसदा थाना चकरभाठा बिलासपुर	
15	मु॰ पो॰ कोड़ाभाठा थाना पामगढ़ बिलासपुर	
15	मु॰ चूनापाली पो॰ सालहेघोरी, लोरमी बिलासपुर	
14	मु॰ पो॰ चांपा थाना रेलवे चाम्पा बिलासपुर	
15	मु॰ पौसरी पो॰ दगौरी थाना हिर्री तह॰ बिल्हा बिलासपुर	रिहा
14	मु॰ पो॰ पतईडीह थाना मस्तुरी बिलासपुर	रिहा
14	मु॰ पो॰ विजयनगर थाना कापू रायगढ़	
14	मु॰ पो॰ मड़वापाली थाना चन्द्रपुर बिलासपुर	रिहा
14	मु॰ पो॰ जूना बिलासपुर थाना सीटी कोतवाली बिलासपुर	रिहा
14	मु॰ पो॰ खरवानी थाना जैजैपुर बिलासपुर	
14	मु॰ पो॰ खम्हरीया थाना कोरबा बिलासपुर	रिहा
14	मु॰ पो॰ डोंकाचाका थाना पथरिया बिलासपुर	
14	मु॰ पो॰ देवरमाल थाना कोरबा बिलासपुर	
12	मु॰ पो॰ कैंथा थाना जैजैपुर बिलासपुर	
14	मु॰ पो॰ भालूमाड़ा थाना कोतमा शहडोल	
1	मु॰ पो॰ जूना बिलासपुर थाना सि॰ को॰ बिलासपुर	
1	मु॰ पो॰ — ״ — ״ — ״ — ״	
1	मु॰ सकतपुर पो॰ डोड़ी थाना डग जिला झालावाड़ (राजस्थान)	
1	मु॰ पो॰ सक्ती थाना सक्ती जिला जांजगीर	

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

क्र.	दिनांक	शिविरार्थी व पिता का नाम	आयु	शिक्षा	पूर्व में व्यवसाय	जेल प्रविष्ट	वार्ड नं.
96	3-7-98	सुखनन्दन S/o जगन्नाथ	25	12वी	कृषि	8-7-98	1
97	से	~~मोहरिक~~ बहोरन / जिवराखन	42	अनपढ़	मजदूरी	9-7-98	1
98	16-7-98	अजयकुमार S/o मनराखन	22	5वी	कृषि	6-7-98	1
99		फुलीराम S/o जिवराखन	50	अनपढ़	कृषि	7-7-98	1
100	तक	अनिल गोस्वामी S/o तिलक	35	—"—	मजदूरी	8-2-96	1
101		मोहनलाल S/o ठाकुरराम	35	10वी	दुकानदारी	6-7-98	1
102		लखनराम S/o केशवराम	55	6वी	कृषि	6-7-98	1
103		मातु सुकदेव S/o जोसेफ	34	11वी	कृषि	12-7-98	1
104	17-7-98	मनीष S/o मनीराम	18	10वी	विद्यार्थी	20-2-98	15
105	से	मन्तराम S/o अम्मे	32	अनपढ़	मजदूरी	17-3-98	6
106	5-8-98	तिजराम S/o फूलमलाल	32	अनपढ़	कृषि	21-6-98	6
107	तक	देवनारायण S/o परमानन्द	40	11वी	नौकरी	25-4-98	6
108		गनपतदास S/o शंकरदास	32	5वी	कृषि	17-6-98	6
109		परमानन्द S/o मेहत्तर	35	अनपढ़	मजदूरी	21-6-98	6
110	10-8-98	जनमेजय S/o हरिनारायण	28	12वी	कृषि	3-8-98	8
111	से	कन्हैया S/o प्रह्लाद	40	5वी	कृषि	6-8-98	8
112	26-8-98	तारनदास S/o सुखराम	35	4थी	मजदूरी	6-7-98	8
113	तक	सुरेशकुमार S/o दुलारी	30	8वी	कृषि	21-8-98	8
114		फुलदास S/o जोगीदास	55	अनपढ़	मजदूरी	18-7-98	8
115		पेरीराम S/o मकुन्दा	45	अनपढ़	मजदूरी	18-7-98	8
116		उवारनलाल S/o सुखरा				18	
117		भकला S/o मेहत्तर	50	4थी	कृषि	18-7-98	8
118		राजु यादव S/o भूरवा	30	अनपढ़	मजदूरी	23-7-98	8
119		गुलाब S/o नत्थुराम	30	~~[illegible]~~ अनपढ़	मजदूरी	9-3-98	8
120		दुखीराम S/o मोहन	44	2री	कृषि	18-7-98	8
121		शत्रुहन S/o भोलाप्रसाद	29	12वी	कृषि	21-2-98	8
122		रामलाल S/o संतराम	45	अनपढ़	कृषि	7-4-98	8
123		जगतारन S/o सुखराम	26	12वी	कृषि	18-7-98	8
124	27-8-98	चिरौंजीलाल S/o छोटेलाल	45	अनपढ़	कृषि	30-6-98	14
125	से 18-9-98	बिसन S/o इतवारी	28	4थी	कृषि	30-6-98	14
126	तक	पिलादाऊ S/o गंगाराम	66	3री	कृषि	16-8-98	14
127		मिलन S/o बुल्लू	65	अनपढ़	मजदूरी	27-5-98	14
128		सेरवराम S/o सीटू	60	अनपढ़	कृषि	14-2-98	14
129		गोपाल S/o इजारी	45	अनपढ़	मजदूरी	1-5-98	14
130		[illegible]	75	अनपढ़	मजदूरी	28-11-97	14

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

...ख	वार्ड नं०	पूरा पता	रिहा/जेलग्रा०
-98	1	मु. मुंगाडीह थाना पाली जिला कोरबा	
-98	1	मु.पो. अमसेना थाना हिर्री जिला बिलासपुर	
-98	1	मु. पो. अकोला थाना मस्तुरी जिला बिलासपुर	
-98	1	मु.पो. अमसेना थाना हिर्री जिला बिलासपुर	
-96	1	मु. रामगढ़लारी पो. बड़कीलारी थाना रामगढ़ पोजेन्ड जि. हजारीबाग (बिहार)	
-98	1	मु.पो. सलवाना थाना हिर्री जिला बिलासपुर	
-98	1	मु.पो. चाटापारा थाना सिविललाइन बिलासपुर	रिहा
-98	1	मु.पो. खरखरनटोली थाना कुनकुरी जिला जसपुर	
-98	15	छोटीकोनी पो. कोनी थाना कोनी जिला बिलासपुर	
3-98	6	मु. नयापारा पो. थाना चकरभाठा तह. जिला बिलासपुर	
-98	6	मु.पो. पोता थाना मालखरौदा तह. सक्ती जिला बिलासपुर	
4-98	6	मु.पो. थाना चरभाठा तह. जिला बिलासपुर	
-98	6	मु. ओपीया पो. थाना जैजेपुर तह. सक्ती जिला बिलासपुर	
-98	6	मु.पो. थाना हिर्री तह. जिला बिलासपुर	
6-98	8	मु.पो. सिटीकोतवाली बिलासपुर	
8-98	8	मु.पो. शंकरनगर कोरबा बिलासपुर	
7-98	8	मु.पो. हथनीकला थाना तह मुंगेली बिलासपुर	
-9-98	8	मु. पो. डोमसरा थाना कुण्डा, मुंगेली, बिलासपुर	
-7-98	8	मु.पो. भौंसर, पथरिया बिलासपुर	
7-98	8	मु. रंजना पो. थाना पाली तह. कटघोरा बिलासपुर	
-7-98	8	मु. नवागांव पो. थाना तह. मुंगेली बिलासपुर	
-7-98	8	मु.पो. झोपड़ापारा तारबाहर बिलासपुर	रिहा
-3-98	8	मु.पो. लालपुर गौरेला बिलासपुर	
-7-98	8	मु.पो. तालामुडवा थाना कुकदुर पंडरिया बिलासपुर	
-2-98	8	मु.पो. कुधुरताल, लालपुर मुंगेली, बिलासपुर	
-4-98	8	मु. कुसमाल पो. देवरमाल अगा कोरबा ~~बिला~~ बिलासपुर	
7-98	8	मु.पो. हथनीकला थाना तह. मुंगेली बिलासपुर	
-6-98	14	मु.पो. आमाखोला थाना गौरेला जिला बिलासपुर	
-6-98	14	मु.पो. मोहतरा थाना लालपुर जिला बिलासपुर	
-8-98	14	मु.पो. बुंदेली थाना मालखरौदा जि. जांजगीर चांपा	
-5-98	14	मु.पो. निरवरवन थाना तखतपुर बिलासपुर	
-2-98	14	मु.पो. पिहरीद थाना मालखरौदा बिलासपुर	
-98	14	मु.पो. [illegible] बिलासपुर	
11-97	14	मु.पो. नवाडीह थाना कोनी बिलासपुर	

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मूल्यांकन

जिवन विद्या शिविर

21/10/98 से ...

जब मैं शुरु जेल आया बहुत ही उदास था अपने आपको बिलकुल अकेला समझता था। और मैं अकेला बैठकर सोचा और विचार किया कि न कोई मेरा है और नहीं मैं दिनों दिन दुख के अथाह सागर मे डुबता जा रहा था कि उसी बीच मे हम पहले जिवन विद्या नही जाने थे तो हमारे से कई प्रकार के गलती हो जाता था। ~~अगर~~ जिवन विद्या बहुत अच्छा ज्ञान विद्या है। ये जिवन विद्या को हम बाहर में नही जानते थे। तो हमे जेल में एक गुरु देव मिल गया तब वह जिवन विद्या बताया तब हमने जाना। जब गुरु देव जिवन विद्या हमें सिखाया और बताया तो हमने जान लिया और सुन लिया है। और इसके अधार पर एवं इसके नियम पर चलेंगे तो हमसे कभी भी गलती नही होगा। जिवन विद्या एक ऐसा विद्या है जिसको हम कभी भी नही भूलेंगे। और दुसरों को भी जिवन विद्या सिखायेंगे और बतायेंगे जिवन विद्या बहुत अच्छा विद्या है। ये हमारे मन में बदलाव आ गया। जिवन ज्ञान का विद्या है।

नाम अयोध्या प्रसाद गिरी
ग्राम उमरिया थाना पथरिया
जिला बिलासपुर (म.प्र.) -

मुल्यांकन

दिनाँक
२६-१०-९८

जीवन विद्या शिविर शिक्षा प्रद एंव सुरवी जीने कि विद्या है हमारे विचार में जीवन विद्या अच्छा लगता है। और अच्छा लगा। मुझे सुख और शांति मिला। मेरे समझ के अनुसार सुख से जीने का तरीका सबसे ज्यादा समझदारी है। जीवन विद्या शिविर मे अनगीनती शिक्षा मिला जिसे किसी वस्तु से नही किया जा सकता तुलना। मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया है।

मेरे समझ में सबसे ज्यादा कोई भी व्यक्ती का आदर करना ही हमार करतब्य है।

मुरारी सिंह S. मारवन सिंह
वार्ड नं. 7
भैसमुड़ी वाले। जिला जाँजगीर
(मध्य प्रदेश)

करणदास (पि० श्री धरमदास)

जीवन विद्या शिविर को समझने के पहले मेरे व्यवहार को आज मैं सोचता हूँ तो मेरे व्यवहार से बुरा व्यवहार किसी का भी नहीं रहा होगा लगता है- मैं निम्नलिखित गलत व्यवहार पर चलता था।-

1. मैं तमाम प्रकार से के नशे में लिप्त था।
2. मैं गाली, गलौच तथा अपशब्द बोलता था।
3. बातों-बातों पर क्रोध करता था।
4. लोभ से लिप्त था (कामलोभ, मदलोभ तथा धनलोभ)
5. द्वेष के भाव अत्यधिक था।
6. दूसरों पर शासन करना चाहता था।
7. दूसरों से भेद-भाव करता था।
8. मैं चिन्ता करता था।
9. रूप, बल, पद तथा धन को स्थायी है, समझकर स्थायी करना चाहता था।
10. मैं अत्यधिक भ्रमित था।

—— ००० ——

जीवन विद्या शिविर को समझने के बाद मेरे व्यवहार में परिवर्तन निम्नलिखित हुआ है-

1. मैं किसी भी प्रकार से नशा नहीं करता क्योंकि नशा स्वास्थ के लिए हानि कारक है, ये समझदारी को जीवन विद्या से जानकर मेरे में उतारा हूँ।
2. मैं गाली, गलौच तथा अपशब्द नहीं बोलता, क्योंकि सुनने वालों को बहुत खराब लगता

P.T.O.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

है. यदि दूसरे ~~लोगों~~ लोग गाली, गलौच तथा अपशब्द बोलते हैं तो मुझे बुरा लगता है. ये समझदारी मेरे में समझ आया है।

3. अब मैं क्रोध नहीं करता हूँ, क्योंकि क्रोध करना अक्षमता के प्रतिक देना है।

4. लोभ मैं नहीं करूंगा —

(अ) ~~काम~~ कामलोभ नहीं करूंगा क्योंकि मानव में मानवीयता मानव सम्बन्ध सात ही है. अधिक सम्बन्ध मानने से सही निर्वाह सम्बन्ध में नहीं करते हैं अर्थात उस सम्बन्ध के साथ दुरूपयोग होता है जो अमानवीय व्यवहार है जिसके कारण झगड़ा-लड़ाई होता है।

(ब) मदलोभ नहीं करूंगा, क्योंकि घमड़ करने से लोगों को ~~दिखा~~ (स्वयं को श्रेष्ठ तथा दूसरों को नेष्ठ) दिखाने का भाव होता है जिस भाव से अनेकों प्रकार से हानि होता है।

(स) धनलोभ नहीं करूंगा, क्योंकि लालच दिन-प्रतिदिन बढ़ते रहता है इस भाव में क्रूरता तथा हीनता तो रहता है ही, हीनता स्वभाव अत्यधिक होता है जो स्वयं के तो बैरता बढ़ता है. साथ-साथ आगामी कई पीढ़ीयों में भी बैर को जन्म देते रहता है।

उपरोक्त लोभ को मैं जीवन विद्या समझकर खुब अच्छी तरह से जानता हूँ, अब अंसग्रह के भाव को अपनाया हूँ।

५. मैं द्वेष के स्थान पर स्नेह के भाव रखता हूँ। क्योंकि स्नेह से मैत्री बढ़ता है।

६. मैं दूसरों पर शासन नहीं करूंगा क्योंकि मैं स्वयं के अधिकार को जानता हूँ. इसी तरह सभी का अपना-अपना अधिकार है कोई भी व्यक्ति किसी के दबाव में नहीं रहना चाहता है।

७. मैं किसी भी प्रकार के भेद-भाव नहीं करूंगा, क्योंकि हम शरीर के आधार पर ही अलग-अलग हैं लेकिन जीवन के आधार पर बिलकुल ही समान हैं, ये समझ को जीवन विद्या समझकर स्वयं अपनाया हूँ।

८. मैं अब चिन्तन करता हूँ, क्योंकि चिंतन करने से निरंतर सुख का अनुभव होता है इसे मैं जीवन विद्या से जाँचकर समझा हूँ तथा इसे अपनाया हूँ, हालांकि यहाँ मैं निरंतर सुखी नहीं हूँ।

९. रूप, बल, पद तथा धन में अस्थायी गुण है, इसे स्थायी करने पर ही लोग दुखी होते हैं, मैं इसे स्थायी बिलकुल ही नहीं करूंगा क्योंकि ये सब चीज हम जहाँ रहते हैं वहीं उपलब्ध हो जाता है

१०. देवी, देवता, भगवान, हस्तरेखा तथा राशिफल के विषय में निर्भ्रम हो गया हूँ।

① श्री गनेशराम

समझदारी में सुधार

मन चंचल होता है। मन एक रफ्तार गाड़ी की तरह है, इसमें ब्रेक जरूरी है। ब्रेक नहीं लगाने पर कहीं न कहीं आकस्मिक दुर्घटना हो जाती है, इसलिये मन में ब्रेक जरूरी है, मैंने मन में ब्रेक लगाने को सीखा। वृत्त, चित्त, बुद्धि, आत्मा मिलकर मन का ब्रेक है; यही मेरे समझ में आया। इसके अनुसार से मेरे व्यवहार में नि॰ लि॰ सुधार हुआ।

① नशीले पदार्थ का सेवन छोड़ देना, मांस खाना छोड़ देना।
② नल में लाइन से पानी लेना।
③ किसी को गाली न बकना, सबको एक ही व्यवहार से आदर करना।
④ दैनिक अखबार पढ़ना, मासिक पत्रिका पढ़ना।
⑤ दूरदर्शन से प्रसारित फिल्म न देखना, सभी व्यक्तियों से प्रेम व्यवहार करना। जेल में दिया जवाबदारी को सही ईमानदारी से निभाना।

इस प्रकार का परिवर्तन सभी मनुष्यों में देखना चाहता हूं। इसके लिये हमेशा प्रयत्नशील रहता हूं।
माननीय जेल अधीक्षक डा॰ के॰के॰ गुप्ता के प्रेरणा से इतना सब सुधरने का अवसर प्राप्त हुआ।

X [दिनांक 15।2।97 से 25।1।98 तक का परिश्रम।

प्रार्थी
श्री गनेशराम

कार्यवाही के लिए

जिवन विद्या शिविर

[21·10·98 से 26·10·98 तक]

हरनारायण सिदार

मेरा अनुभव

जब मैं शुरु जेल आया बहुत ही उदास रहता था अपने आपको बिलकुल अकेला महसुस करता था एकांत में बैठकर यही सोचता कि न मैं किसी का हुं और न कोई मेरा है

मैं दिनों दिन दुख के अथाह सागर में डुबता जा रहा था कि उसी बीच में तारनहार के रुप में पुज्नीय बाबा-
ए. नागराज जी यहाँ आये उन्होंने हम सबके बीच जिवन विद्या रुपी नांव छोड़ कर चले गये -

सच में जिवन विद्या एक दर्पण का रुप है मानव अगर चाहे तो इससे अपना जिवन संवार सकता है समस्या का सही निराकरण और जिवन का आत्मीक शुख प्राप्त कर सकता है

अब मैं पहले से खुश हुं और आगे भी खुश रहुंगा और दुसरों को भी खुश रखने का भरसक प्रयास करुंगा मैं पुज्नीय बाबा जी का हृदय से अभारी हुं जिन्होने जन-जीवन का सही अर्थों में व्याख्या करते हुये सही मार्ग दर्शन के लिये जिवन विद्या को उजागर किया।

हरनारायण सिदार
सर्किल जेल बिलासपुर

दिनांक 26-10-98

हरप्रसाद

X [मूल्यॉकन

1 - मै अपने चाहत को समझा (सुख)।
2 - निरंतर सुख से जीने को समझा।
3 - जो गलती हुआ है हम से वह अंनजान से हो गया।
4 - पूरा शीविर को समझा और दूसरो को भी समझा सकता हूँ।
5 - जो भी मेरा व्यवसाय है उसी में संतुष्टि रहूगा।
6 - अपने व्यवस्था को समझ कर सुख से जीऊंगा।
7 - विचार को गलती की ओर नही जाने दूगा।
8 - अपना पन या पराया पन मै भेद नही होगा।
9 - समाज मे गल मेल बना कर जीऊगा।
10 - किसी मानव की क्रूरता को अपने सर्वोच्च मूल्य (प्रेम) से दूर करूगा।
11 - इस जीवन विद्या से जुड़ा रहूगा।
12 - बाहर नीकलने पर इसका चर्चा करूगा तथा शीविर लगाकर सुख से जीने को समझाऊंगा।
13 - अंधकार को उजेला करने के लिए अपने गुरू का आज्ञा पालन करूगा। (जो मुझे सुख से जीने की समझ बताया है)
14 - अपने स्वभाव मै ~~धीरता~~ वीरता उदारता लाया।
15 - अपने ज्ञानेन्द्रियो से दूसरों को बूरा नजर से नही देखूगा।
16 - ~~च~~ चलना, बोलना बैठना मै सुधार आया।
17 - यह शीविर निरंतर ~~चलना~~ लगाना चाहिए मुझे बहुत ही अच्छा लगा।

सालिकराम S/o बरतरिया

जीवन विद्या के पहले मेरे व्यवहार को सोचता हूँ तो काफी गंदा व्यवहार रहा जो निम्नलिखित है —

1. मैं नशा पान करता था।
2. मैं स्वयं के बात पर हठ करता था।
3. मैं पहले नाराज हो जाता था।
4. मैं पहले चिन्ता करता था।
5. मैं बहुत भ्रमित रहता था।
6. मैं बहुत लालची था।
7. मैं जुआ खेलता था।
8. मैं व्यभिचारी था।

जीवन विद्या शिविर के बाद मेरे व्यवहार में परिवर्तन हुआ है. जो निम्नलिखित है —

1. मैं किसी भी प्रकार के नशा बिलकुल ही नहीं करता हूँ।
2. मैं किसी भी व्यक्ति के बात सुनने के बाद सोच समझकर स्वीकार तथा अस्वीकार करता हूँ अर्थात हठ नहीं करता हूँ।
3. अब नाराज नहीं होता हूँ।
4. मैं अब चिन्ता नहीं करता हूँ।
5. अब मेरा भ्रम बहुत कम हो गया है।
6. अब मैं कोई भी चीज के लिए लालच नहीं करूँगा, क्योंकि स्वयं के सम्पत्ति को जानने लगा हूँ तथा पारिवारिक सम्पत्ति को भी जानने लगा हूँ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

7. अब मैं जुआ नहीं खेलूँगा, क्योंकि धन की बरबादी होती है इस बात के समझ मेरे में आ चुका है। अर्थात इस बात को मैं जीवन विद्या के द्वारा जानता हूँ।

8. अब मैं व्यभिचारी कर्म नहीं करूँगा, क्योंकि जीवन विद्या शिविर से मैं मानव के सात सम्बन्धों को खुब अच्छी तरह से जानता हूँ। जो मेरे से उम्र में बड़ी है उसे माता के सम्बन्ध से स्वीकारूँगा, जो हमउम्र के है उसे बहिन सम्बन्ध में स्वीकारूँगा तथा जो मेरे से छोटी है उसे पुत्री सम्बन्ध में स्वीकार लूँगा।

अतः जीवन विद्या शिविर के पहले मैं अन्याय को न्याय समझकर गलती करता था। अब जीवन विद्या को समझने के बाद न्याय समझ में आया है. जिसे समझकर जीवन के व्यवहार में अपनाया हूँ।

जेल में बंदी द्वारा लिखा एक गीत

~~जागृति गीत~~

शरीर से माने अलग-अलग,
जीवन को जानो एक है।
सम्बन्ध को पहचानो,
तो हम सब मानव एक हैं॥

मान के चलने वाले,
हर पल धोखा खाये।
कभी सच कभी झूठ,
कभी सुख से रहना पाये॥

न्याय को ढूंढा बाहर,
परिवार में मिलता न्याय।
व्यवहार में हो मानवता,
तो सब को मिलता न्याय॥

वर्षों से सुख हेतु मानव,
कम-कम करता आया।
प्रिय-हित-लाभ में ही,
सुख को ढूंढता आया॥

o

अशोक घृतलहरे
(~~एक बंदी कवि~~)

आयाम-गीत

जीवन विचार होगा बनगे, नागराज पतवार।
ज्ञान तोर खेवइया मानव, समुद्र हे बीच धार॥

—०—

टेक— नइपाइन कोनो ज्ञान, काकरही ग बखान, बिना जाने सब मानथें।
जान के मानले, माने पहचानले चाहत की समधान...।

पद— न्याय-अन्याय खोजेंव, पायेहव धार म,
कई बरस बितगे, अतके उमर म,
जान के मानले - - - - - - ।

पद— धर्म-अधर्म खोजेंव पायेहंव स्वराज म,
तेला हम कहां पाई, नइये समाज म,
जान के माने ले - - - - - ।

पद- सत्य-असत्य खोजेंव, पोहत स्वभाव म,
ज्ञान जरूरी हवय, मोर देश गांव म,
जान के माने ले - - - - - ।

लक्ष्य गीत

टेक ① मानवीय व्यवस्था नियम न्याय धर्म हो
स्वराज्य है हमारा हममें हि सब अभय हो ॥

① पद — समाज में व्यवस्था स्वभाव मूल्य क्या हो ।
स्वयं समाधान परिवार में समृद्धि,
स्वराज्य है हमारा हमें ही सब अभय हो

② पद — समाधान समझदारी व्यवस्था की समझ हो,
समाज में अभय हो प्रकृति में सह अस्तित्व हो ॥
स्वराज्य है हमारा हम में ही सब अभय हो।

③ पद — मानव का लक्ष्य क्या है स्वराज्य में व्यवस्था
स्वराज्य है हमारा हम ही सब अभय हो

④ पद — मानव ही मानवीय का संस्कृति का आधार है,
मानवत्व ही मानवीय संस्कार का आधार है,
स्वराज्य है हमारा हम ही सब अभय हो ॥

अस्तित्व में व्यवस्था गीत

②

टेक सबके मारग मानव बता देय (नागराज)
जीवन सफल बनादेये ना जीवन ल सफल बना
के नागराज जीवन सफल बना देय ना ॥

① पद — ज्ञान ही शून्य है शून्य ही ज्ञान है, २
अनंत इकाई ज्ञान में क्रिया शील, २
ज्ञान ने व्यापक सत्ता के दर्शन करा देय बाबा मोर
जीवन ल सफल बना देय ना ।

② पद — व्यापक एक है इकाई अनंत है, २
पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञान अवस्था है, २
ज्ञान ने जीवन विद्या के सफल करा देय नागराज जीवन....
ल सफल बना देय ना ।

③ पद — भूमि एक है राष्ट्र अनेक है, २
मानव की जाति एक कर्म अनेक है, २
ज्ञान ने प्रकृति व्यवस्था के सार बता देय नागराज जीवन.

④ पद — मानव के धर्म एक मत अनेक है, २
ईश्वर एक है, देवता अनेक है, २
ज्ञान ने अस्तित्व के व्यवस्था समझा बता देय बाबा मोर
जीवन ल सफल बना देय ना ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

प्रकृति - गीत

ये प्रकृति के चार अवस्था है
सुख देने के लिए. सुखी मानव के लिए

पहली अवस्था हवा पानी माटी पथरा
दूसरा अवस्था पेड़-पौधा हराभरा कचरा
ये प्रकृति के चार _ _ _ _ ।

तीसरा अवस्था पशु-पक्षी जीव जन्तु
चौथा अवस्था ज्ञान मानव जानो तुम
ये प्रकृति के चार _ _ _ _ _ ।

प्रकृति ने अपने को. चारों में बाँट दिया
ज्ञान अवस्था मानव. नियम को कहा किया
ये प्रकृति के चार _ _ _ _ _ ।

परिस्थिति - गीत

मानव छह: स्थिति परिस्थिति में जीता है
दिन में काम करता है. रात में आराम से सोता है

पहला स्वयं मे जीना, दूसरा शरीर में जीना
दूसरा शरीर में जीना
तीसरा परिवार में जीना, चौथा समाज में जीना
चौथा समाज में जीना
पांचवा प्रकृति मे जीना, छठवाँ अस्तित्व में जीना है
छठवाँ अस्तित्व में जीना

अशोक
खुतलहरे

जीवन - गीत

टेक- जान मानव जान, अपने जीवन को जान।
जीवन क्या है, कितना अलग है, शरीर से न मान॥

पद— जीवन का मतलब है, जीम्मेदारी लेना।
शरीर को अपना खाना पानी पिलाना॥

पद- स्वतः क्रिया करता है क्षय होने वाला शरीर।
मन-वृति-चित्त-बुद्धि-आत्मा अक्षय बल॥

पद— शरीर के लिए आहार, आवास साधन हो।
जीवन की चाहत है निरंतर सुख हो॥

— o —

जीवन-गीत

टेक— जान मानव जान, अपने जीवन को जान।
उपदेश नहीं मेरे समझ को बताना है॥

पद— ये संसार दो बातों में टिकी हुई है।
पहले मैं चाहता क्या हूँ, दूसरा उपाय क्या है।
उपदेश नहीं मेरे — — —।

पद- सुख निरंतर जीवन को चाही।
सुविधा शरीर को सीमित में चाही॥
सुविधा में आहार, आवास, साधन ही चाही

पद- शरीर है स्वतः क्रिया, जीवन में जवाबदारी

गुरु बिदाई-गीत

टेक- कभू-कभू जेल म, आते जाते ~~रहीहौ~~ रहीयो गुरु जी ।
तुंहला नई भुलावन हमन, हमला भन ~~भुलाहौ~~ भुलाईहो गुरुजी

पद- जइसे आप समझे हवव, ओइसने समझाइहौ ।
एक बार नहीं ये ला, बार-बार बताइहौ ।।
जीवन विद्या जेल म 2 आके पढ़इहौ गुरुजी
तुंहला नई — — — — — ।

पद- गुरु म प्रमाणिकता हो, शिष्य म जिज्ञासा ।
गुरु हे पढ़ाला, शिष्य ज्ञान पाने वाला ।।
जिज्ञासा पूरा हो 2 आप हो पूर्णता गुरु जी
तुंहला नई — — — — — ।

पद- गुरु कहे जिज्ञासु ल, सुनले जीवन विद्या ।
व्यवसाय में समृद्धि हो, व्यवहार में सामाजिकता ।।
विचार में समाधान 2 अनुभव म सुख गुरु जी
तुंहला नई — — — — — ।

दुर्गा अशोक चौहान

(1) अन मोल सता सही रस्ता बता संगवारी,
अन करना इच्छा दिललगी मोला बीपत परे हे भारी।

1. कोनो मोर नईये सहारा
होगे हव मैं बिचारा,
जीवन अंधियार होगे,
बिपत के मैं हव मारा - - - - -

2. दाई ददा भाई छुटगे,
रोवत हव आज मैं हो,
का पाये मोला सता के
बैरी समाज तैंहा - - - - -

3. तय मोला नई सताते
कछु सही रस्ता बताते
नई बनते मैं अपराधी
निर्दोष मोला पाते
अब करौं मैं का, तय मोला बता संगवारी।

(2) अन रोना दाई मोर बड़ महंगा हे आंसु के तोर
दाई मोर सूरता तोर आथे रोज सूरता तोर

तोर कोरा म बड़ सुख पायेव
तोला सुख नई देवें
लहु के आंसु तोर गीरथे हे
जा कोरा म कांटा बिछा देवें
→ दाई फूटहा करम हे मोर - बड़ महंगा हे - - - - -
दुख अऊ बिपत काट के दाई
तय ह मोला बड़े करे
मोर मुंह म चारा डाले
दाई तय ह भूख मरे
→ कब लागा छुटिहव तोर - बड़ महंगा हे - - - - -
पढ़ा लिखा के सपना साजे
बेटा ला साहेब बनाहुं
चौथे ऊमर के बनही सहारा
सुख के दिन पहाहुं
→ तोर सपना देव तोड़ बड़ महंगा हे - - - - -

मेरा अनुभव

मैं जेल में आज से डेढ़ साल पहले आया, उस समय मैं बहुत घबराया हुआ था। मुझे जेल नाम शब्द से बहुत भय लगता था। जेल में आने के बाद मुझे बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा। मैं और मेरे परिवार के दो भाई मेरे साथ जेल आये थे। उस समय मुझे बहुत दुख हुआ था। जब मैं जेल में करीबन तीन माह हो चुका था, तब मेरा मुलाकात एक शिक्षक से हुई, जिसने मुझे जीवन विद्या के बारे में बताया। जब मैं शुरू में जीवन विद्या पढ़ने के लिए बैठा तो, मुझे बहुत अच्छा महसूस किया। लेकिन बीच में मेरा मन इन सभी चीज से ऊब गया तथा मैं कुछ और सोचने लगा। लेकिन कुछ दिन बाद सभी आदमीयों को एक साथ बैठकर वार्तालाब करते सुना तो मुझे लगा कि ये सभी आपस में बैठकर जीवन विद्या के बारे में बात में बात करते रहते है ये सभी मुर्ख है या मैं ही मुर्ख हूँ जो इन लोगों के बात को ध्यान से नहीं सुनता, तो फिर मेरा ध्यान जीवन विद्या की ओर लगने लगा तथा मैं फिर सभी के साथ बैठकर बाते सुनने लगा तब फिर जाकर मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया तब से मैं लगातार जीवन विद्या शिविर में बैठकर जीवन विद्या सिखता हूँ. और उसे अनुभव करता हूँ। अनुभव से मुझे अच्छा लगता है, मुझे ज्यादा किसी पर गुस्सा नहीं आता ना ही किसी भी चीज का फिकर करता हूँ। मुझे इस जीवन विद्या से यह अनुभव होता है कि हम किसी भी मनुष्य से दब कर नहीं रहना चाहते, तो उसे या किसी भी मनुष्य को दबाना क्यों चाहते हैं। हम दूसरों से अच्छा व्यवहार चाहते है तो हम क्यों दूसरो से गलत व्यवहार करते है। और इस जीवन विद्या सिखते-सिखते एक चीज मैंने ऐसा अनुभव किया जो कि मेरे जीवन का पहला अनुभव है लगता है। मैंने अनुभव किया कि यदि आप किसी भी को यदि दिल जान से चाहते हैं और कभी किसी वजह से आपके मन में उनके प्रति बुरा व्यवहार उत्पन्न हो गया, और आप व्यवहार को अपने मन में रख लेते है, तो भी उससे किसी भी तरह कभी-न-कभी लड़ ही जावोगे।

राजकुमार अग्गूर
शंकर नगर बिलासपुर
(म.प्र.)

मनोज कुमार सोनवानी -(आई टीआई कोनी) यह शिविर को मुझे समझने के बाद मेरे मे यह परिवर्तन हुआ कि आत्मा संतोष और सुख शान्ति महसूस होने लगा और दूसरो के प्रति प्यार आदर व्यावहार को समझने का तरीका भी मालूम हुआ और इसके अतिरिक्त परिवार समाज मे भी सही ढंग से समझ कर समझाकर जीने का तरीका भी मालूम हुआ। मेरा यह प्रयोजन है कि बाहर निकलने के बाद अपने संस्थान मे इस बात को आगे बढ़ाऊँगा।

प्रार्थी.
मनोज कुमार सोनवानि
ग्राम आई टिआई कोनी बिलासपुर
(म.प्र.)

जीवन विद्या शिवीर दिनाँक 21/10/98 से 26/10 पुस्तक

जीवन विद्या शिवीर से हमें यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि मुझे इस जीवनविद्या से इस जीवन सत्यपूर्ण है इससे मुझे इस जीवन में मुझे शान्ती मिली। अपने विचार एवं सिद्धांत से प्राकृतिक एवं समाज परिवार से निरंतर सुख से जीना चाहता हूँ अपनी स्वभाव एवं विचार को पवित्र बनाकर समाज एवं परिवार को मार्ग दर्शन देते हुए ईश्वर मानव से जुड़ना चाहता हूँ।

प्रार्थी
भैयाराम कुर्रे
ग्राम- दयालपुर (लोरमी)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक 26-10-98 नाम उदराजसिंह गोंड़ ग्राम नवापारा
थाना बांगो जिला बिलासपुर
बिलासपुर (म०प्र०)

मूल्यांकन

—×—

मैं जीवन विद्या अच्छा लगा अगर हमे जानते नही मानते है अनेकों अगर जानकर माने तो जीवन को सुख मिलेगा मै निरतर सुख से जिना चहता हु और घर, परिवार से जीना चहता हु और गाव वालो परिवार से मिल कर जीना चहता हु
मै अपने शरीर को एक साधन की तरह उपयोग करना चाहता हु कि जीवन विद्या से मै पुर्ण रूप से समझ गया और इससे
मै आने पुरे समस्या का समाधान भी पूरा समझ मे आ गया। आशा करता हुँ कि
मै आज से जीवन विद्या को आधार मान करूंगा।

प्रार्थी

उदराज सिंह S/o शिवमंगलसिंह
ग्राम - नवापारा
पो० आ० जटगा
थाना - बांगो
जि० - कोरबा
(म०प्र०)

Date 21.10.98 से 26.10.98 तक

जिवन विद्या शिविर

मुल्यांकन

21·10·98 से 26·10·98 तक

मै पहले हमेशा चिंतीत रहता था अपने आपको बिलकुल अकेला महसुस करता था एकांत में बैठकर यही सोंचता की न मैं किसी का हुं और न ही कोई मेरा है मैं दिनों दिन दुख के अथाह सागर में डुबता ही जा रहा था मेरा मन किसी भी चीज में नही लगता था

मैने जिवन विद्या के बारे सुना और उसका अध्ययन किया कि शरीर और दोनों अलग-अलग है शरीर का सुख एक देह मात्र जीवन के लिये है और जिवन का सुख निरंतर है पहले मैं मान कर चलता था अब मैं जानकर और समझ कर चलता हुं

सच में जिवन विद्या एक दर्पण का स्वरूप है मानव अगर चाहे तो अपना जिवन सार्थक बना सकता है समस्या का सही निराकरण और जिवन का आत्मीक सुख प्राप्त कर सकता है

अब मैं पहलेसेखुश हुं और आगे भी खुश रहना चाहूँगा साथ में दुसरों को भी खुश रखने का प्रयास करुगा मानव जिवन के लिये ये जिवन विद्याजानना बहुत ही जरुरी है।...

हरनारायण सिकार

मूल्यांकन

जब मैं शुरू जेल आया बहुत ही उदास था अपने आप को बिलकुल अकेला समझता था और मैं अकेला बैठकर सोचता कि न कोई मेरा है और नहीं मैं किसी का हूँ और मैं दिनों दिन दुख के सागर में डूबता जा रहा था ठीक उसी तरह नागराज कि तरह पूज्य नियमाचार ए. नागराज कि यहां आने का उपदेश सुना और यहां आकर देखा कि जीवन विद्या रूपी नाव को छोड़कर चला गया। सच मे जीवन विद्या एक दर्पण के रूप है मानव अगर चाहे तो उस से अपने जीवन सवार सकता है समस्या का सही निराकरण और जीवन का असली सुख प्राप्त कर सकता है हूँ

अब मैं पहले से अत्यंत सुखी हुआ हूँ जीवन विद्या पढ़ने के बाद मेरे मैं समझता समा गया और बड़े और छोटे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहि इसको समझा किस तरह अपना जीवन चलाना है और दुसरो का हित करना ही निरंतर सुख समझा हूँ।

नाम राजकुमार माथुर ग्राम - पंचबहरा पारा हिरदा
थाना नायतपुर जिला बिलासपुर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनाँक 21-10-98 से 26-10-98 तक

जीवन विद्या शिविर

जीवन विद्या शिविर से हमें यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि इस जीवन विद्या को धारण करना ही सर्वश्रेष्ठ है इसके बिना मानव जीवन अधूरा है। जीवन विद्या शिविर से यह समझ आया कि मनुष्य के साथ ताल मेल बनाकर जीना चाहिए तभी निरंतर सुख मिल सकता है मैंने अपने क्रुरता दीनता को छोड़कर मनुष्य के साथ भाई चारा का व्यवहार रखूँगा मैंने जीवन विद्या शिविर पहले बार किया हूँ ~~ह~~ और इस शिविर में सदा दिन भाग लेते रहूँगा मैं अपने ~~र~~ परिवार को इस जीवन विद्या के आधार से ही मैंने परिवार ~~को निरंतर सुख र~~ के साथ निरंतर सुख से जीना चाहता हूँ। जीवन विद्या ~~शिविर से~~ के आधार से अंत जानकर उपयोग करता हूँ मानना बदल सकता है। ऐसे ऐसे शिक्षा इस जीवन विद्या के अन्तर्गत अध्ययन किया सदउपयोग करने की कामना मेरे जीवन में प्रतीत हुआ है मैं सत-सत बार नमन करता हूँ उस महान पुरुष का जिन्होंने इस दुर्लभ जीवन विद्या की सोध किया साथ ही आभारी हूँ इस सहयोगी शिक्षकों से इस विद्या के प्रति दिशा प्रेरित किया ऐसे ही शिविर बार बार लगाना चाहिए।

धन्यवाद

रामायणदास मानिकपुरी
दिनाँक 26-10-98
बिलासपुर

दिनांक 26.10.98

जीवन विद्या शिविर मूल्यांकन

(1) जीवन विद्या शिविर के दौरान मुझे ये अनुभव हुआ कि इस जीवन विद्या को धारण करना ही मनुष्य के लिये सर्वश्रेष्ठ है इसके बिना मानवजीवन अधुरा है।

(2) यह शिविर मुझे सबसे उत्तम तथा मनुष्य को किस स्थिति में में जीना है और किस तरह जीना है यह जीवन विद्या पढ़ने पर अनुभव हो रहा है कि मनुष्य को सबसे तालमेल बनाकर जीना चाहिये। किसी से कोई प्रकार का झगड़ा झंझट, मारपीट न किसी के लिये बुराई करना नही ही किसी को दुख पहुंचाना, सबको अपना ही जानकर एक बराबर समझना है जीवन विद्या के अनुसार चलना है।

(3) हम सभी सुख ही चाहते हैं मगर ये सुख कैसे मिले। जब तक हम अपने स्वंय को ही सुख नही दे पारहे है तो दूसरो के बारे में सोचना ही व्यर्थ है हम जीवन विद्या के अनुसार बताये गये स्थिति, परिस्थिति, धर्म नियम सत्य व्यवस्था के अनुसार चल कर अमल करेंगे। तभी निरंतर सुख का अनुभव होगा।

(4) इस जीवन विद्या शिविर को धारण नहीं किया था। और इससे पहले हम जो भी कार्य करते थे उससे हमें संतुष्ट नहीं मिलता था। हम उस समय मानकर चलते थे और अब आगे हम जानकर चलेंगे।

(5) इस जीवन विद्या के पहले हम जो भी कार्य किये हैं उन सब कार्य में हमें क्षणीक सुख ही दिखाई ~~दिया~~ है इसके पहले हम मांस भी खाते थे, लेकिन हम अनजान थे और ऐसे कई प्रकार से किसी को मारना, पीटना तथा लड़ाई झगड़ा भी करते थे लेकिन उस समय हम अनजान थे और अब हमें सुज्ञान होने का रास्ता अपने आप में तैयार कर रहे हैं।

नाम - मुन्नू उर्फ फाल्गुनी रौतिया ‌ अखिल जेल बिलासपुर (म.प्र.)

(6) ये जीवन विद्या को पढ़ने से हमें अनुभव हुआ है कि हमें सभी के साथ किस तरह का व्यवहार करना है या किस तरह अपने जीवन को साकार करना अपने ही वश में है

(7) समाज में जीना, परिवार मे जीना, स्वंय मे जीना, प्रकृति मे जीना, शरीर में जीना तथा अस्तित्व में जीना ही मनुष्यों का उद्देश्य बनता है इसके पहले भी इस दुःस्थिति परिस्थिति मे जीता था। लेकिन मालूम ही नहीं था कि हम दुःस्थिति परिस्थिति में जी रहे है

(8) इसके पहले हम किसी भी कार्य को मानकर करते थे। जीवन विद्या को पढ़ने पर हम जानकर करेंगे। और इस जीवन विद्या को जितनी भी जल्दी हो सके आगे बढ़ाने की कोशिश करेगें। मैं तो इस जेल में रहते हुये भी इस जीवन विद्या में अमल करना शुरु कर दिया हूं। और रोज ही जीवन विद्या पढ़ता हूं।

(9) यह जीवन विद्या मुझे अत्यन्त शुद्ध लगा, और इस जीवन विद्या पर ही हम चलेगें, तो किसी भी प्रकार का किसी कोई परेशानी नही होगा। ये मुझे अनुभव हो रहा है इस जीवन विद्या को पढ़ा, और आगे बढ़ना चाहता हूं। मैं तो सिर्फ एक शिविर किया हूं। और मैं इस शिविर का समर्थन करता हूं कि ये जितनी भी जल्दी फैलने की कोशिश करें उससे कहीं बढ़-चढ़ कर फैले।

(10) मैं इस जेल मे जीवन विद्या का अनुभव किया, और यहां से छुटने के बाद मैं अपने परिवार में अमल इस जीवन विद्या का प्रभाव डालना शुरु कर दूंगा। और हो सके तो अपने गांव के भी और बहुत से लोगों को बताऊंगा। हमारे गांववालों को अच्छा लगे, तो उन लोगो को भी जीवन विद्या का मार्ग दिखाऊंगा। और मेरा प्रयास जारी रहेगा। मैं यही चाहता हूं कि जीवन विद्या शिविर में मैं भाग लेता ही रहूं।

दिनांक 26-10-98

मुल्यायंकन

जीवन शीबीर अच्छा लगा अगर हमें जानते नहीं मान ते हैं अनेकों अगर जान कर मनें तो जीवन को सुख मिलेगा
मैं निरंतर सुख से जीने के लिये दो । ही बातों का अध्यान किया हूं तो सुख पाने की उपाय सुविधा ही समझ आया है मैं नियम को समझकर जीता हूं तो मुझे इस जीवन के लिये सुख पाता हुं मैं अपने शरीर का एक साधन की तरह उपयोग करना चाहता हुं और कोई दूसरे व्यक्ति के लिये हित का काम करना को सुख समझता हूं मैं जीवन विद्या पढ़कर निरंतर सुख को पाना समझा हुं अपने चाहत को जाना जीवन में क्रिनता दिनता क्रुरता था उसको बाहर कर दिया दूसरो के चिज को अपना समझूंगा

नाम उदाराम ग्राम देवरमाल
जिला - कोरबा

यह शिविर से मुझे न्याय अनियाय समाज में और परिवार में मिला और मुझे बड़ो छोटो के प्रती सही व्यावस्था समझ में भी आया और इस विधा से जो क्रोध आता रहा वो भी इसे समझने के बाद हमारे में परिवर्तन हुआ बाहर निकलने के बाद अपने परिवार तथा समाज को समझाऊंगा।

प्रार्थी
श्री शालिकराम जोशी
ग्राम खपरी जिला बिलासपुर

दिनांक 26-10-98

नाम - रमेश कुमार बंजारे - ग्राम - [illegible]
थाना - कोटा, जिला - बिलासपुर

मूल्यांकन

मैं निरंतर सुख से जीने के लिये दो ही बातों का अध्ययन किया हूँ तो सुख पाने की उपाय सुविधा ही समझ आया मैं नियम को समझकर जीता हूँ तो मुझे न्याय धर्म सत्य कि अनुभव होता है यही मेरे लिये निरंतर सुख है।
मै अपने शरीर को एक साधन की तरह उपयोग करना चाहता हूं और कोई दूसरे व्यक्ति के लिये हित का काम करना को सुख समझता हूं ?
(a) मैं जीवन विद्या पढ़कर निरंतर सुख को समझा। अपने चाहत को जाना जीवन में हिनता दीनता क्रुरता था उसे बाहर कर दिया दूसरो के चिज को अपना समझुगाँ तथा दूसरो को भलाई करुगा अपने ज्ञानेन्द्रिय से दूसरों को बुरा नजर से नही देखुँगा किसी से बात करना होतो मीठे स्वर से बात करुगाँ अर्थात किसी के जीवन को नही दुखाऊगां। जो मै कमाता हुं उसी से संतुष्ट रहुगा अपने द्वारा किसी भी मानव तथा अपने परिवार को दुख नही दूंगाँ मेरे जीवन में चलना बोलना बैठना ये सभी प्रकार का वातावरण में सुधार हुआ। रमेश कुमार बंजारे

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मूल्यांकन

जीवन विद्या शिविर शिक्षा प्रद एवं सुखद जीवन जीने कि विद्या है इसमें अनगिनीत शिक्षा मिला जिसकी तुलना किसी वस्तु से कि नहीं किया जा सकता है तुलना अमूल्य है। इस विद्या को पढ़ कर मेरे जीवन में काफी बदलाव आया है। जैसे किसी प्रकार किन नसा पत्ती करना और किसी को क्रोध करना किसी को मारना किसी को गाली गलौच करना इसी प्रकार मेरे में बदलाव आया है

इस शिविर में चार आयाम सराहनीय रहा जानना मानना जानना पहचानना और निर्वाह करने कि क्षमता आ गई है। पहले ऐसा नहीं था फिर सात सबन्ध पढ़ा उसमे में भी सही पाया इस सात सबन्ध में मानव का रिस्ता नाता सभी जुड़ा है। और मेरे समझ आठवा सबन्ध व्यौरकरना है। फिर आगे अध्यन किया तो भाग्य को समझा पहले हम लोग भाग्य ईश्वर का लिखा हुआ समझते थे लेकिन आज यह जीवन विद्या का अध्यन किया तो पत्ता चला कि ऐसा नहीं है हम जैसा करता है वैसा उसका भाग्य वैसा बनता है आदमी किसी भी चीज को सही उसको जैसा करता है वैसा उसका भाग्य बनता है।

और आगे मनुष्य के प्रकार पढ़ा मनुष्य पांच प्रकार का होता है उन पांचो प्रकार में मैं कौन सा प्रकार में आता हूं ये अपने में ~~बनक~~ जांचने से पत्ता चला और उसमे दूबरी स्वा स्वाभाव जो कुछ भी सचाई को ग्रहण करने का प्रयास किया हूं और बुराई छोड़ने का प्रयास किया है और जीवन विद्या शिविर ~~के~~ लगता ही रहना चाहिये और विद्या को पढ़ कर मेरे जीवन में बदलाव भी आने लगा है।

नाम फोचा राम नागवंशी
उम्र २८वर्ष ग्राम पिता-धीरन साय
ग्राम खवाड़ामाचा
पो० आ० कापरो
तह० पत्थलगांव
जिला- रायगढ़
(म.प्र)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मूल्यांकन वहीद खान

वहीद खान S/o

जीवन विद्या शिविर शिक्षाप्रद एवं सुखी जीवन जीने की विद्या है इसमें अनगिनत शिक्षा मिला जिनकी तुलना किसी वस्तु से नही किया जा सकता तुलना से अमूल्य है इस विद्या के आधार पर विचार, व्यवहार, धूम्रपान, एवं गलत कार्य न करने मे काफी हद तक बदलाव आया जैसे किसी मानव के प्रति घृणा, मुह से अपशब्द निकालना दबाव एवं डराने की कोशिश करते थे साथ ही धूम्रपान करते थे इस शिविर के अन्तरगत मेरे जिवन के अंदर शांती और जानकारी हुवी की मैं एक मानव हूं इस दुनिया में जितने भी ~~इस दुनिया में जितने भी~~ जिव नाम पशु पक्षी एवम मानव सभी मेरे जीवन की तरह दिखाई देता है

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal.

मूल्यांकन दिनांक 21-10-98-26-10-98

① मेरे व्यवहार पहले मैं बच्चों या कोई अदवायों के झगड़ा करने से या कोई वस्तु को बिगाड़ने से मैं बदले के भावना रखता अपने अब में बहुत गुस्सा आता है और जीवन विद्या ग्रहण करने से ये समझ आता है कि जो भी गलती होता है नासमझ के कारण होता है

② मेरे व्यवहार में जीवन विद्या के समझने से जीवन को समझा कि शरीर को मानकर चला अब समझ आया कि शरीर + जीवन = मानव है

③ अपने परिवार में या समाज में कैसे व्यवहार करना या चलना ये समझदारी से चलने के लिये समझ आया

④ मेरा समझ आया कि मानव को प्रकार एक समझता कि अब जीवन विद्या के आधार पर समझा कि मानव चार प्रकार का है

⑤ मैं समझता कि मनुष्य का जीवन और पशु को एक जीवन समझता अब समझ आये पशु या मनुष्य जीवन अलग है इसमे कल्पना करने के शक्ति है

⑥ मैं मूल्य के बारे में पहले समझता कि एक वस्तु का लेने देने है पैसे समझता अब समझ आया कि (18) प्रकार मूल्य व्यवहार में और समाज में स्थापित मूल्य है माता पिता या पुत्र या पुत्री बड़े या छोटे या बराबरी के प्रति क्या जाता ये मूल्य को आचरण में उतारने से व्यवहार में समाजीक व्यवसाय में स्वालम्बी व्यवहार में मूल्य समाज में मूला है इसमे सुखी होता है

दुर्लभ विद्या को शोध करके हर मानव तक पहुँचाने का कोशीश किया अगर यह विद्या का प्रचार प्रसार हो गया तो शायद कोई ही मानव सुखी जीवन जीने से वन्च पाये इसके साथ मे अपने गुरुजनो को प्रणाम करता हूँ कि इस विद्या को समाज तक पहुचाने के लिये मुझे आगे आने का मौका दिया शिक्षा ग्रहण किया।

[signature] 26.10.98

(1) अस्तित्व मे व्यवस्था सत्ता के नाम से जाने जाते है शुन्य व्यापक पारदर्शी परगामी अखण्ड पूर्ण ईश्वर अनादि उजो अनेको प्रकार से जाने जाते है ये समस्त आत्मा

नाम गोकुल।

मूल्यांकन

जीवन विद्या शिविर
21.10.98 से 26.10.98 तक

रविशंकर कुर्रे S/o श्री धनाऊराम

जीवन विद्या शिविर शिक्षा प्रद एवं सुखी जीवन जीने की विद्या है इसमे अनगिनत शिक्षा मिला जिनकी तुलना किसी वस्तु से नही किया जा सकता तुलना मे अमुल्य है। इस विद्या के आधार पर अतिविचार, व्यवहार, धूम्रपान, एवं गलत कार्य मे काफी हद तक बदलाव आया जैसे :- किसी मानव (नकसे) के प्रति घृणा, मुह से अपशब्द निकालना दबाने एवं डराने की कोशीश करते थे साथ ही धूम्रपान करते थे तो अब धूम्रपान से घृणा होने लगी जहां तक 75%. आदतस्वविद्या से सुधर गया। इस शिविर मे जीवन मे चार आयाम सराहनिय रहा जिसमे जानने, मानने, पहचानने एवं निर्वाह करने की क्षमता आ गई पहले ऐसा नही थी फिर सात संबंध देखा पढ़ा समझा सही पाया इस सात संबंध मे मानव का सभी रिस्ता नाता जुड़ा हुआ है। आठवा संबंध है भी तो वो है ब्रैरकराने का फिर प्रारब्ध या भाग्य तो महत्वपूर्ण रह आज जान कर कार्य करते है दुष्परिणाम निकलने पर उसी को भाग्य समझते थे या मेरे भाग्य मे यही लिखा था कहते थे ऐसा नही है। दुरूपयोग किया तो दुरभाग्य, एवं सदउपयोग किया सौभाग्य होता है। फिर मानव के प्रकार मे मानव, दृष्टि, विषय, स्वभाव समझा अतिउत्तम रहा साथ ही जीवनचक्र समझा परमाणु यौ पदार्थ अवस्था से जीवअवस्था होते रचनाक्रम के अनुसार मानव की उत्पत्ति हुई समझा और जानने मे सही पाया इसके बाद नौ स्थापित मूल्य और नौ शिष्ट मूल्य समझा सही पाया बहुत अच्छा रहा। पांच अभय बल पांच अभय शक्ति समझा इसमे भी काफी बदलाव आया जिसमे पांच क्रियाओ मे क्षणिक सुख मिलता है और शेष पांच क्रियाओ मे निरंतर सुख का अनुभव होता है जहां तक हमे पहुचना है। इस हद तक पहुचाने मे जीवन विद्या शिविर सार्थक सिद्ध होगा और ऐसे शिविर बारबार लगना चाहीये मै मेरे ओर सत सत बार नमन करता हूं उस महान ज्ञानी पुरूष को कि इस दुर्लभ विद्या को शोध करके हर मानव तक पहुचाने का कोशीश किया अगर यह विद्या का प्रचार प्रसार हो गया तो शायद कोई ही मानव सुखी जीवन जीने से वन्च पाये इसके साथ मे अपने गुरुजनो को दण्डवत प्रणाम करता हूं। को इस विद्या को समाज तक पहुचावाने के लिये मुझे आगे आने का मौका दिया शिक्षा ग्रहण दिया।

रविशंकर
26.10.98
बिलासपुर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मूल्यांकन

दिनांक 21-10-98.
26-10-98

(1) मैं व्यवहार पहले मैं बच्चे या कोई सदस्य को झगड़ा कर देने से या कोई वस्तु को विनाश से बदले के भावने रखता था अब वह कुछ परिवर्तन आया है जो गलती होता है तो नासमझ दारि से होता है

(2) व्यवहार में समझ में जीने के लिये समझदारि से सुखी होना जरुरी है
(3) मैं व्यवसाय में समझ कर निर्वाह कर दिन ही उचित नियम है
(4) विचार में अच्छा या कोई शब्दों को या चिंतन करने से समाधान हो जाने से मैं आनन्द होता हूं
(5) मैं अनुभव किया कि अस्तित्व में तीनों नियम को अनुभव किया तो बहुत सुखी होता हूं
(6) एक और व्यापक इसके अलावा दूसरा कोई चीज नहीं है
(7) ज्ञान ही शून्य और शून्य ही ज्ञान है जब अनुभव करने से समझ में आता है
(8) संपृक्तता, प्रकृति, सह अस्तित्व चिंतन मनन करने से आनन्द होता है
(9) मैं कोई काम को मैं हो जाये पहले अपने सोचता था दूसरा का ख्याल नहीं करता ये समझ में आता कि अभि-का काम एक हित है
(10) सर्किल जेल बिलासपुर में जब से जीवन विद्या को साधन कुमार भैया जी प्रचार कर रहा है तब से इसि में जुड़ा हूं

(11) जीवन विद्या समझ में जो आया है उसको एक दूसरे आदमी के पास में चर्चा करते रहूं जीवन विद्या आगे ऊंचाई स्तर में चलाये जाये

मनोरंजन साव

जीवन विद्या शिविर

नाम - रामेश्वर प्रसाद पटेल पिता जोधीराम पटेल
ग्राम - सोन (मनवा) थाना - मस्तूरी, जिला - बिलासपुर

जीवन विद्या से हमें सुखी जीवन, अच्छे समाज निर्माण तथा मौलिक विचार को प्रेरित किया है। जिससे की हम प्राप्त करके अपने जीवन में आने वाले समस्याओं और आवश्यकताओं का सही सही अनुमान कर के उसे अर्जित करने का उचित तरीका प्रदर्शित हुआ है इससे आचार विचार व्यवहार व समाज सेवा करके विश्व के मानव जीवन को विकसित करने का उद्देश्य कोण खुल कर सामने आया है। हमने जीवन विद्या ग्रहण करके अन्य सामाजिक बुराई को दूर कर हमारे साथ साथ हमारे आस पास के सभी लोग दूर कर सामाजिक अनुरूप हो सकते हैं और निरंतर अपने कर्तव्य पर निष्ठा पूर्वक रह कर अपने भविष्य तथा समाज कल्याण करके ~~एक~~ संसार को सुखी बना सकते हैं हमने देखने से पाया कि जीवन विद्या का सम्पूर्ण विश्व का समाज कल्याण के लिये नितांत आवश्यक है इस लिये मैं जीवन विद्या शिविर में भाग लेकर अपने भविष्य के साथ साथ सारे समाज के भविष्य को मद्दे नजर रखते हुये ~~और~~ एक सफल निर्माण की ~~कल्पना~~ कल्पना करूँगा तथा बाहर जा कर मैं अपना बहुमूल्य समय जीवन विद्या के अंतर्गत आने वाले व्यवहारी शब्दों का प्रयोग तथा ~~संगठ~~ संगठन से फैलाऊँगा जिससे की मनुष्य अपना भविष्य सुधार लिखने में सक्षम हो सके और एक दूसरे के ~~सुख सुखेन~~ दुख में काम आ सके आदर्श लोक से आदर्श समाज का निर्माण केवल जीवन विद्या शिविर से हो सकता है। हम संकल्प करते हैं कि बाहर जाकर जीवन विद्या शिविर लगायेंगे और सच्चे समाज निर्माण करके सुखमय जीवन हमारे साथ साथ ~~सम्पूर्ण~~ संसार को सुखमय बना दें मैं हमारा सम्पूर्ण योग रहेगा। और यहाँ पहले जिला जेल था बाद में आदर्श जेल तथा फिर सर्किल जेल बना जेल परिवार में क्रमशः यह परिवर्तन जीवन विद्या के कारण हुआ है।

आप का रामेश्वर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या जानकारी

1. जीवन विद्या शिविर के पहले शिविरार्थियों के व्यवहार कैसे रहा ?
2. जीवन विद्या शिविर के बाद शिविरार्थीयों के व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ?
3. जीवन विद्या गीत (छत्तीसगढ़ी व हिन्दी में)
4. जीवन विद्या के शिविरार्थियों का नाम -
5. जीवन विद्या के शिविरार्थियों की जानकारी - कितना रिहा हुँ तथा कितना वर्तमान में मौजूद है।

नागराज

जीवन विद्या (मूल्यांकन)

डी० एल० भारद्वाज, (शिक्षक) सर्किल जेल बिलासपुर (म० प्र०) —

क्र० 1- जीवन विद्या का शिविर इस जेल में दिनांक 15.2.97 से श्री साधन कुमार एवं श्री गणेश बागड़िया जी के द्वारा प्रारंभ किया गया था। जिससे मैं जीवन विद्या को समझ कर मुझे यह एहसास धीरे-धीरे होने लगा कि, वास्तव में मानव को (जागृति) समझदार होना आवश्यक है। जो स्वयं, परिवार, समाज, प्रकृति के साथ भागीदारी निभा कर जी सके, इसी में मानव का जीवन सुफल हो सकता है।

प्र०-2 जीवन विद्या को सबसे पहले स्वयं, परिवार, समाज, शासन स्तर में स्थापित कर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में लागू करना आवश्यक होना प्रतीत होता है। जिससे मानव में जागरूकता आ सके। तथा मानव-मानव बनकर जी सके!

(हस्ताक्षर)
1/8/98
शिक्षक
सर्किल जेल बिलासपुर
(म० प्र०)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक
1-8-98

जीवन विद्या मानव दर्शन को समझने से इन्सान में मानवता बढ़ता है, बुद्धि में विकास होता है। इस विद्या को टी.वी या ग्राम पंचायत या शिक्षा, यह तीनों के माध्यम से शहर एवं देहात में पहुँचाना आवश्यक है, ताकि नासमझी, अशिक्षा के कारण से माने हुये बातों को लेकर चलते हैं, इसलिये जीवन विद्या मानव दर्शन को सभी समाजों को पहुँचाना अति आवश्यक है ताकि जीवन-विद्या के मूल उद्देश्यों को जाना जा सके।

गनेशराम व० जीवराखन

(1)

दिनांक 1-8-98

प्रेणता (नागराज)

सम्भूदयाल भारतीय

1 — मेरा व्यवहार में परिवर्तन हुआ है पहले मैं मान के चलता था जीवन विद्या को समझने के बाद मैं समझदारी और जवाब दारी के साथ रहता हूँ मैं अधिकारी तथा कर्मचारी के साथ सम्बन्ध के अनुसार व्यवहार करता हूँ। तथा कैदी एवं बन्दि के साथ भी सम्बन्ध के अनुसार व्यवहार करता हूँ इसप्रकार व्यवहार कर के मैं सुखी रहता हूँ।

क० 2 — जीवन विद्या के पहले मैं अपने आप को नहीं जानता था मानता था शरीर को ही मानता था अब मैं जानने लगा हूँ कि मैं क्या हूँ और शरीर क्या है। मैं के मतलब होता है जीवन, जीवन का अर्थ होता है जवाब दारी लेना किसका शरीर का शरीर का मतलब होता है स्वतः क्रिया करना जैसे बाल बढ़ना नाखुन बढ़ना नाखुन कटाना जीवन का काम है, यही जिम्मेदारी है जिम्मेदारी का अर्थ होता है दुसर का वस्तु का जवाब दारी लेना जैसे शरीर दुसर का है इस लिये जीवन इसका जवाब दारी लिया है हम जॉच कर देखते हैं तो पता चलता है कि जैसे मानव की शरीर बिमार पड़ जाता है तो शरीर बिलकुल कमजोर हो जाता है तथा आहार, पानी नहीं खाता पिता है इस लिये कम और पड़ गया होता है तो शरीर उसी का है इसी लिये जीवन इसका जवाब दारी लिया है तथा सुरक्षा करना जीवन काम है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

क्र० 3 — शुभ और लाभ के बारेमें थोड़ा सा ध्यान आकरषित करना चाहता हूँ कि वर्तमान में व्यक्ति, स्तर तथा परिवार, समाज, एवं शासन. स्तर पर चारों व्यवस्था में लाभ चाह रहा है, लाभ का मतलब होता है एक का हानि तो दूसरा को लाभ हानि के मतलब नुकसान, तो इस व्यवस्था को वर्तमान में चारों व्यवस्था ने चाह रहा है तो हानि किसका हो इसलिये यह प्रतित होता है कि लाभ शुभ का पुरक नही है इसको जाच के देखा जाये तो यह समझ में आता है कि लाभ के जगा में स्नेह होगा तो शुभ का पुरक हो सकता है स्नेह का अर्थ है मानवीय पूर्ती कार्य करना।

क्र० 4 — वर्तमान शिक्षा में जो हम समाज में सुख, दुख को बराबर मान के चल रहे हैं, और मानते आरहे हैं। तथा जाचने पर पता लगता है कि कोई मनुष्य दुःख को स्वीकार नही करता है और मनुष्य से पुछा जाय जैसे कोई मनुष्य 100 वर्ष कोई 90 वर्ष जीते है अगर उस मनुष्य का उम्र कहीं 50 45 वर्ष होगया है तो कहा जाय कि आप आधा दिन सुख मे जीये हैं अब आप को इतना दिन दुख सहेगें तो कहता है कि नहीं मतलब एक पल के लिये दुख को स्वीकार नहीं करता तो यह निष्कर्ष होता है कि सुख दुख बराबर नही है सुख नित्य मान है। निरंतर है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

प्रेषता श्री नागराज

क्र० 5 — गलति मनुष्य अनजान में ही करता है जान के करते हैं कहते है जानने वरपता चलता है कि जैसे कांटा को मनुष्य अनजान में गड़ते हैं तो दर्द होता है जो जान के कांटा नही गडते हैं इसी प्रकार गलति करने के बाद मनुष्य को दुख होता है उसे स्वीकार नही करता है,

क्र० 6 — कोई मनुष्य सुखी नहीं दिखता न किसान, कर्मचारी, अधिकारी, न नेता, साधु, सुखी नही दिखता मनुष्य जबतक अपने आप को नही जाचे गा तब तक सुख नही मिलेगा अपने आप का मतलब स्वयं मैं जीवन है। जैसे शरीर तो दिखता है तथा शरीर के माध्यम से व्यक्त होने वाला ही मैं है ~~जैसे शरीर को मनुष्य के~~ मैं को जानने के लिए जीवन विद्या को ग्रहण करना पड़ता है।

क्र० 7 — मानव शरीर तीन प्रकार के है, स्थूल शरीर सूक्ष्म शरीर कारण शरीर स्थूल शरीर पाँच ज्ञानेन्द्रिय पाँच कर्म इन्द्रिय मिलकर बना है ज्ञानेन्द्रिय आँखी श्रवण जिभ, नाक, त्वचा, कर्म इन्द्रिय मुँह, हाँथ, पैर, उत्सर्जन तंत्र, मल तंत्र यह दस इन्द्रिय स्थूल शरीर है सूक्ष्म शरीर मन, वृत्ति, चित्त ~~यह~~ सूक्ष्म शरीर है कारण शरीर बुद्धि तथा आत्मा कारण शरीर है कारण के बिना निवारण नहीं है। शरीर सुविधा ग्राही मन रस ग्राही वृत्ति तत्व ग्राही चित्त गुण ग्राही बुद्धि ज्ञान ग्राही आत्मा अस्तित्व ग्राही इन्द्रिय है। आत्मा मे अनुभव के हिसाब से बुद्धि में बोध, बोध के हिसाब से चित्त में इच्छा, इच्छा के हिसाब से वृत्ति में विचार, विचार के हिसाब से व्यक्त तथा शरीर के द्वारा के कार्य से कारण का निवारण हो सकता है कारण के निवारण

से मन में सुख वृत्ति में शान्ति चित्त में सन्तोष बुद्धि में आनन्द आत्मा में परमानन्द है।

क्र० 8 — मानव के रूप सात प्रकार है तथा सम्बन्ध के हिसाब है ① माता-पुत्र/पुत्री ② पिता-पुत्र/पुत्री ③ भाई-बहिन ④ पति-पत्नी ⑤ साथी सहयोगी ⑥ मित्र ⑦ गुरु शिष्य ⑧ काल तथा समय और ⑨ गति को भी रूप के हिसाब से समझते हैं।

क्र० 9 — मनुष्य को मुख्य रूप से इस बात की समझदारी की आवश्यकता है कि वह जड़ शरीर तथा चेतन्य जीवन का संयुक्त रूप है। शरीर को आहार, आवास साधन की जरूरत है जीवन को सुख की चाहत है हम जाचकर देख सकते हैं कि अगर कोई मनुष्य को अच्छा खिला पिला दिया जाय खिलाने के बाद उसका विश्वास नहिं किया जाय तो दुख होजाता है। इसी प्रकार जीवन को आहार के रूप में आदर, सम्मान, स्नेह, विश्वास किया जाय तो जीवन सुखी रहता यही जीवन का आहार के रूप मे है। इसी को हर मनुष्य की जीवन चाहता है।

क्र० 10 — सपंत्ति के बारे में थोड़ा सा ध्यानाकर्षण। स से सपंत्ति और स से समाज तो यह जाचने की बात है सपंत्ति समाज की है सपंत्ति जड़ है और मानव की शरीर भी जड़ तो जड़ जड़ की है इसको हम जाचकर जैसे हम अपने ही संपत्ति को बेचने के लिये लेजाते हैं तो परगट होता है और बेच के जरूरत के पुरता को परगट रखते हैं और बाकि को छिपालेते है और किसको छिपाते है संपत्ति को किसके भय से समाज के तो यह सिद्ध होता है कि वह उसका इसीका है। संपत्ति दूसरे प्रकार की है

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

① आहार, ② आवास, ③ अलंकार ④ दूरगमन ⑤ दूरश्रवण ⑥ दूरदर्शन तीन संपत्ति समाज की है। जैसे ① दूरगमन ② दूरश्रवण ③ दूरदर्शन इसकी गति समाज में होना चाहिये। ① आहार, ② आवास, ③ अलंकार इसका गति परिवार में होना चाहिये।

क्र० 11 — सुविधा शरीर सापेक्ष है।
सुख जीवन सापेक्ष है।

क्र० 12 — तीनों अवस्थायें एक प्रकार व्यवस्थित दिखाई पड़ती है। जीवन जागृति के बाद मनुष्य में आचरण की निश्चितता दिखाई पड़ती है।

क्र० 13 — धीरता से धारा स्वयं जागृत होकर निष्ठा पूर्वक जीऊँ।

क्र० 14 — वीरता से आश्रम सम्बन्धित को जागृत करूँ।

क्र० 15 — उदारता से धारा जीवन जागृति के लिए तन, मन, धन, रूपी अर्थ का सदुपयोग करूँ।

क्र० 16 — समस्या दो प्रकार की होती है ① बौद्धिक ② भौतिक बौद्धिक समाधान से अनुभूति भौतिक वस्तु की समाधान उपलब्धि से होती है।

प्र० 17 — अनंत रचनाये पाँच कोष गठन भेद के अन्तर्गत वर्गीकृत होती है। इन पाँच कोषों को क्रमशः ① अन्नमय कोष ② प्राण मय कोष ③ मनोमय कोष ④ आन्द मय कोष ⑤ विज्ञान मय कोष की गठन है। अन्न मय कोष ग्रहण और विसर्जन करने वाले अंग को अन्न मय कोष को कहते हैं। प्राण मय कोष प्रेरणा को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने वाली अंग को प्राण मय कोष कहते हैं। मनोमय कोष चयन करने वाले अथवा चुनाव करने वाले अंगों को मनोमय कोष को कहते हैं। आन्द मय कोष सुख अथवा दुख को ग्रहण करने वाले अंग को आन्द मय कोष कहते है। विज्ञान मय कोष विशेष ज्ञान को ग्रहण करने वाले अंग को विज्ञान मय कोष कहते हैं।

प्र० 18 — स्थूल शरीर परिवर्तन शील है जैसे मनुष्य बच्चा रहता है फिर युवावस्था होता है फिर जवान फिर बुढ़ा होजाता है इसी प्रकार स्थूल नेत्र के देखना अधुरा है जीवन के समझना पूरा है जैसे हम इसी नेत्र में देखेरहते है जैसे अपने नाते रिश्ते को देखे रहते हैं फिर उसी को ~~नहीं~~ शरीर जब बुढ़ा हो जाता है तब उसी आदमी को

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कोल्हा नही पहचानते तो हम पुछते हैं कि आप
कौन हैं तो वह बताता है कि मैं आप का भत्रि
पुत्री या कोइ भी रिस्ते के अंतर्गत हो तो हम समझ
जाते हैं उसी प्रकार समझना पुरा है समझने
वाला का परिवर्तन नही होता है उसी को
जीवन कहते हैं।

क्र० 19 — शरीर के द्वारा श्रम और गति होता है जीवन
में क्रिया होता है। इसी प्रकार जीव अवस्था में भी
श्रम गति क्रिया होती है। तथा प्राण अवस्था मे
केवल गति होता है तथा पदार्थ अवस्था में
भी गति होता है। जीव अवस्था में क्रिया इसलिये
है कि उसमें आशा शक्ति के कारण क्रिया
करता है। और मानव में पाँच शक्ति है इसलिये
मानव कल्पना शील है, मानव जो भी कल्पना करें
गा उसको साकार कर सकता है क्योंकि पाँचों शक्ति में
उस कल्पना को सकार करने का क्षमता है मानव उस
शक्ति को जाने, (1) आशा शक्ति (2) विचार शक्ति
(3) इच्छा शक्ति (4) संकल्प (5) अनुभव इसको जानने
के बाद अपने कल्पना को सकार कर सकता है।

क्र० 20 — मानव परिवार अमर है तथा इसमे मानव का जन्म
होना मृत्यु होना निरंतर बना हुआ है।

क्र० 21 — मनुष्य जहर खाते हैं फाँसी लगालेते हैं तथा आग
में जल जल जाते है तो इसमें जब आग से
जलते हैं तो बचाव कहकर पुकारते हैं इसका मतलब
होता है जीवन उसे स्वीकार नही कर रहा है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

इस लिये बचाव करता है इसको जाचना है किसी
बचाव करता है आग तो स्वयं समाया रहता है इसका
मतलब होता है नासमझी के कारण करलेते हैं
इस लिये बचाव करता है यही पर लिखचलेते है कि
इसको क्यो करते हैं अपने सुख को पाने के लिये
इसको क्यो करते हैं अपने सुख को पाने के लिये आतुर हो जाते
दूसर का धर्म को त्यागने के लिये आतुर हो जाते
हैं इसलि मानव की शरीर तना यारा, युक्ति मनुष्य
का नहीं हैं इसी लिये अपने ~~क~~ स्वधर्म को पाने
के लिये कर लेता है ये ना समझी वस करते हैं जबकी
इसका सदुपयोग करते हुवे सुख को पाना है/

क्र०२२ — हिन्द उपसर्ग में अन्तर मे अन्तर्देशी अन्तर्राष्ट्रीय
जाचने पर ठीक है अन्तर्जातीय ~~ठीक~~ ठिक नहीं है इसको
मानके बनाया गया है मानव में अन्तर्जातीय नहीं है
मानव समाज तो एक है र जानने के अन्तर्गत है

क्र० २३ — घटना के पूर्व - रूप को सापेक्ष कारण की कहते हैं
काल - क्रिया की अवधि को काल कहते हैं/

क्र०२४ — जो जितना भ्रम और भय का पात्र है, उसने साधनो
को सुखी होने के लिए उतना ही महत्वपूर्ण समझा है।
जैसे① भय ग्रस्त मनुष्य आयुध एवं आश्रय पर ② लोभ
ग्रस्त मनुष्य संग्रह पर ③ द्वेष ग्रस्त मनुष्य नाश पर
④ अज्ञानी दूसरों को दोष देने पर ⑤ अभिमान ग्रस्त
दूसरों की उपेक्षा, एवं घृणा करने पर ही सुखी
होने का प्रयास करता है। जबकि स्व पात्रता ही सुखी
एवं दुखी होने का कारण है/

क्र० 25 — संरचना पदार्थावस्था के वस्तुओं से ही है प्राणी अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए रचनाएँ आरंभ करते हैं।
अनिश्चित प्रयास की रचना किसी एक निश्चित अवधि तक ही पहुँचती है जिसे हम झाड़ पौधे के रूप में देखते हैं।

क्र०26 — शिक्षा एवं प्रशिक्षण द्वारा केवल व्यवसाय का ज्ञान कराया जाता है, यह मात्र भौतिक समृद्धि के लिए सहायक हुआ है। इसमें सम्बन्ध के बारे में कोई भी बोध नहीं होता शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी मनुष्य परिवार, समाज में सम्बंध स्थापित नहीं कर पाते।

क्र० 27 — अक्षर परिचय (ग) गति चारों ओर गति है हर इकाई में निरंतर गति है अस्तित्व में हर इकाई निरंतर चारों ओर गति हो रहा है।

क्र० 28 — (घ) घनत्व हर इकाई में घनत्व है अस्तित्व में हर इकाई में रूप आयतन गुण की घनत्व है।

क्र० 29 — (च) चेष्टा हर इकाई में चेष्टा है अस्तित्व में हर इकाई में चेष्टा है।

क्र० 30 — (प) पद हर इकाई में पद है।

क्र० 31 — अस्तित्व में हर इकाई में पद है।
(श्र) श्रम हर इकाई में श्रम है
अस्तित्व में हर इकाइयों में हैं।

क्र० 32 — (क) क्रिया हर इकाई
अस्तित्व में क्रिया सिद्ध है।

क्र० 33 (वा) से व्यवस्था स्वयं व्यवस्था, परिवार व्यवस्था, समाज व्यवस्था प्रकृति, व्यवस्था मानवीय व्यवस्था अस्तित्व में व्यवस्था अस्तित्व में हर इकाई एक निश्चित व्यवस्था है।

क्र० 34 — (ज्ञ) से ज्ञान, ज्ञान से ही अस्तित्व है, ज्ञान नित्य निरंतर [illegible] विद्य मान है, तथा ज्ञान ही शून्य नियम व्याप्त पूर्ण, अखण्ड अगोचर अपरिपक्वी असीम, तथा ज्ञान ही महा कारण है।

साम्भूदयाल भारतीय
आजीवन सजा वार्ड
नम्बर 4 आदर्श
सरकिल जेल बिलासपुर

दिनांक 31.7.98

नाम हरप्रसाद सेवक

जीवन विद्या पढने से जीवन मे परिवर्तन

(1) ज्ञान बुद्धि न्याय धर्म सत्य ये बात को जानते हुए मानव समाज मे निरंतर सुखी से जीना।

(2) आज्ञा का पालन करना (दिव्यमानव के बताए गए सत्य बात का)।

(3) स्वयं विश्वास करना या दूसरों को विश्वास दिलाना।

(4) अपना स्वयं के आडम्बर को छोड कर वन्दना या गुण गान करना।

(5) अपना तथा पराया पन मे (अनन्यता) भेद न होना।

(6) बीडी सिकरेट पीना छोड दिया (जीवन विद्या पढ कर समझा की यह मानव का सेवन नहीं है)।

(7) मेरे जीवन मे हीनता दीनता क्रूरता था उसे बाहर कर दिया।

(8) दूसरों का चीज को किसी प्रकार की चोरी नहीं करूंगा अपने ही समाज की तरह ~~अपना~~ समझूंगा तथा भलाई करूंगा।

(9) अपने ज्ञानेन्द्रीय द्वारा किसी को बुरा नजर नहीं देखना।

(10) किसी से बात करना तो उसकी आत्मा को दुख न पहुंचे।

(11) व्यवस्था के अनुसार खाना, पीना, सोना, चलना, रहना, इस जीवन को मिलता है उसमे संतुष्ट रहना (जीना)।

(12) मेरे जीवन मे बोलना, चलना, बैठना, खाना, ये सभी प्रकार वातावरण मे सुधार ~~आम~~ हुआ।

(13) अपने जीवन से अनुभव कर 9 गाना (छत्तीसगढ़ी) मे लिखा हूँ

(14) जीवन विद्या पढ कर मुझे बहुत ही सुख मिला और पढ़ता रहूंगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(15) मैं बाहर निकलूगा तो इसका चर्चा करूगा (परिवार मे समाज मे) तथा शिविर लगाऊगा।

(16) यह मुझे बहुत ही अच्छा लगा और पढ़ता ही रहूगा। अर्थात इस जीवन मे कभी नही भूलगा।

॥ इस के पहले नाशा खाता पीता था मन हमेशा चिन्ता में डुबा रहता था दिमाक में हर समय कई बाते आता था अतः अन्धकार लगता था ॥

जीवन विद्या एक परिचय

जीवन विद्या शिविर मे मैने भाग लिया मुझे काफी सुख अनुभव हुआ जिसे हम या अन्य लोग मानते आरहे है इससे हानि या लाभ का फल हेतु अज्ञानता रहता है परन्तु जीवन विद्या शिविर से यह ज्ञान मिला कि पहले हम जाने फिर माने / तत्पश्चात यह अमूल्य ज्ञान मिला कि जीवन अमर है जीवन साधक है और शरीर उसका साधन है हर मनुष्य जीवन सुख चाहता है और निरन्तर सुख चाहता है। एवं घर गांव समाज मे कैसे व्यवहार रहा जाय जिसके बावत भी ज्ञान मिला जिसको हम जानकारी या मान्यताएँ नही समझते थे वह इस शिविर मे मालूम हो गया एवं हर वर्ग के लोग धर्म कर्म पर लड़ाई या देवी देवता हेतु करते है, जो इस शिविर से यह भी ज्ञान हुआ कि मनुष्य के ही कई प्रकार है जो राक्षस मानव, मानव, देव मानव, दिव्य मानव का रूप है। वही अन्य धर्मो के भिन्नता व्यक्ति के रूप है। अतः मै विद्या के अनुरागी गुरुजी श्री नागराज जी एवं अन्य सहयोगीयों का आभारी हूं और भविष्य मे कामना करता हूँ कि शिविर का प्रचार व प्रसार होवे मुझसे भी जहां तक बन पड़ेगा प्रचार करुंगा /

वार्ड क्र० १६
सर्किल जेल
बिलासपुर

राजाराम / मुकुन्द राम
मु० गुनापाली थाना लोरमी
बिलासपुर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक
31-7-98

जीवन विद्या से ज्ञान

जीवन विद्या के विद्यार्थी अचलराम साहू पिता रथराम साहू कैदी

मै अपने जीवन के अन्तरगत मे प्रथम श्रेणी बिलासपुर
कारागार के अन्तरगत बैरक क्रमांक 14 मे कारा-
गार मे आमंत्रित करके के अन्तरगत श्री नागराज
जी के मार्ग दर्शन पर जीवन विद्या शिविर मे
भाग लिया।

पापा जिसे हम मानते चले आ रहे है।
यह अज्ञानता का प्रतीक है। अब जीवन विद्या को
अन्तरगत यह सिख मानव के लिए प्राप्त हुई
जो चिरस्थायी है। वह आने वाले समृद्ध समुदाय
के लिए भी मार्ग दर्शन का कार्य है कि पहले
जानो तब मानो जीवन को जानकर जीवन
अमर है। जीवन के अन्तर्गत निरन्तर सुख
समुदाय समाज परिवार के अन्तर्गत चाहता है
जो सुखधाम है। इससे ही ज्ञान प्राप्त हुआ
सामा हारी मांसाहारी मानव पशु मानव राक्षस
मानव देव मानव दिव्य मानव के निराकार
सम्भि है।

आपसी भेदभाव स्नेह पूर्ण सौहार्द पूर्ण व्यवहार
से मानव २ से सम्बन्ध स्थापित करना यह
हमारे जीवन का बहुमूल्य सुख प्राप्त हुआ
इसके लिए श्रीमान कारागार अधिक्षक
जिलाधिस एवं शिविर प्रचारक आभारी है।

नाम - अचलराम साहू S/. रथराम
साहू मु. पो. बेलगाना थाना बिलासपुर
त. कोटा जी बिलासपुर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक 31-7-98

जीवन विद्या से लक्ष्य प्राप्त

जीवन विद्या मानव के अखंड समाज परिवार एवं समाज के रहने का प्रत्यक्ष लक्ष्य का ज्ञान कराने वाली साधारण सी कुन्जी है।

मैं स्वयं में सोचने का उपयोग एवं सिविर में अध्ययन करने से काफी बदलाव महसूस कर रहा हूँ जिसे मैं मानता चला आ रहा था, जीवन विद्या के ज्ञान से यह आत्म बल प्रदान हुआ है मानते तो सभी लोग हैं, परन्तु किसी व्यक्ति या वस्तु को जानकर मानना और ही बात या उसके मूल्य को जान जाना है। जीवनविद्या के प्रणेता श्री नागराजजी एवं उनके सहयोगियों का मैं स्वयं में आभारी महसूस करती हूं। जीवन विद्या आने वाली परम्परा एवं विगत परम्परा से लगी हुई है, इससे जीवन अमर आपसी भेद भाव रहित सहज शरीर जीव आत्मा का ज्ञान बोध, तत्व का ज्ञान कराती है। मनुष्य जो धर्म कर्म की लड़ाई करते चले आ रहे हैं, इसलिए यह महसूस होता है या आलोक ज्ञान प्रदान हुआ है कि सभी मनुष्यों में भेदभाव रखते या करते हैं उनको जीवन का ज्ञान नहीं है जैसे परमात्मा, ईश्वर, अल्लाह या इन मान्यताओं करते हैं वही जीवन विद्या के ज्ञान से दिव्य प्रत्यक्ष है।

अतः जीवनविद्या से मुझे काफी समझदारी महसूस हुआ एवं भविष्य में कामना करता हूँ कि इसका प्रचार प्रसार होवे व जन जन तक गुरु जी की वाणी पहुंचाया और इस हेतु श्री मान जेल अधीक्षक महोदय जी जिलाधीश महोदय एवं शिविर प्रचारक का आभारी हूँ।

कैदी महेन्द्र चौबे S/O श्री
रामचन्द्र चौबे
[illegible]
केन्द्रीय जेल बिलासपुर

P.T.O.

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या ज्ञान कराती,
जीने की है राह बताती।
नियम संयम से रहना सीखो,
भेद भाव मिटाना सीखो॥

जीवन को पहले जानो, तब इसको मानो भाई,
जीवन सदा अमर है, जीवन के असला मानो भाई।
जीवन हमें ज्ञान कराता स्वतंत्रता, जीवन लक्ष्य बताता,
जीवन विद्या निर्मल कुंजी, जीवन अमर लक्ष्य बताता॥

जीवन विद्या से ज्ञान मिला है,
सत्य अहिंसा ज्ञान मिला है।
मानव मानव का अधिकार,
सदा मिलाओ अपना व्यवहार॥

जीवन विद्या के परिवार में समाज मूलक का ज्ञान जानो
ज्ञान सका, शिक्षा संस्कार स्वास्थ्य संयम मानो,
समझदारी लक्ष्य अपना, व्यवसाय अनुभव जानो
मानव मानवता से राक्षसी पशु देव दिव्य जानो।

कैदी महेन्द्र चौबे / श्री रामचन्द्र चौबे
गाजीपुर (उ॰ प्र॰)
जिला जेल बिलासपुर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मनरारवनभाव

[1] मैं ~~कभी~~ किसी के मदद में कम जाता ये नहीं होगा

[2] पहले लालच बहुत करता ऐसा नहीं करूंगा

[3] किसी कार्य में पहले करलू और कोई दूसरा बादे

[4] मैं व्यवहार पहले मेरे बच्चे या कोई संस्था को इगाण करने से या कोई वस्तु को बिगाड़ने से मैं बदले के भावना रखता अपने आप में बहुत गुस्सा आता है और जीवन विद्या ग्रहण करने से ये समझ आता है कि जो भी गलती होता है नासमझ के कारण होता है

[5] संसार होवाले पहली हुई है, मैं चाहता था हु उसे पाने का उपाय क्या है, चाहत के नाम से अनेकों गलती कर रहे हैं ये जीवन विद्या मैं समझ आया कि चाहत क्या है

[6] मैं अने प्रकार के जाति समझ रहा कि अब समझा कि मनुष्य कि जाति एक है अनेकों धर्म मान रहे हैं कि मानव का धर्म एक है क्या है सुख है

[7] अस्तित्व में नियम [3] प्रकार का है प्रकृति या समाजीक या बौद्धिक तीन नियम से चौथा नहीं है प्रकृति या अवस्था ① पदार्थ ② प्राण ③ जीव ④ ज्ञान समाजीक अवस्था मे ① नियम ② न्याय ③ धर्म ④ सत्य बौद्धिक एक है तीनो नियम को जानने के लीये बौद्धिक ज्ञान है जीवन विद्या के अध्ययन करने से ज्ञान प्राप्त हुआ

⑧ मैं मुल्य के बारे मे पहले समझता कि एक वस्तु का लेन देन है ऐसा मै समझता, अब समझ आया कि [18] प्रकार मुल्य व्यवहार में और समाज में स्थापित मुल्य है मात पिता या पुत्र या पुत्री बड़े या छोटे या बराबर के प्रति क्या जाता ये मुल्य को आचरण में उतार ने के व्यवहार मे समाजीक व्यवहार मे स्थलभी व्यवहार मे समाज मे मुल्य है इसमे मुख्य व्यवहार में मुल्य समाज मे मुल्य होता है

[9] प्रारब्ध या भाग्य को जानना मैं इसको पहले जानता कि भाग्य को कोई दूसरा लीखता, आपको समझाता लेकिन भाग्य को स्वयं लीखता है अपने आप लीखता है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

10 मानव के प्रकार को एक समझता लेकिन मानव के प्रकार ⑥ प्रकार के हैं ये जीवन विद्या के अध्ययन करने से समझ आया कि मानव के प्रकार पांच हैं लेकिन समझ में नहीं रहा इसलिये लेकिन मानव एक है

11 सम्बन्ध के बारे में पहले समझता कि अनेकों प्रकार का सम्बन्ध मानते हैं इसी कारण सगण्य संकट होता है जीवन विद्या अनुकरण करने से समझ आया

12 सम्बन्ध का मालुम हुवा 7 सम्बन्ध से ① सम्बन्ध और है कि प्रकृति के 4 अवस्था के साथ उपयोगिता सम्बन्ध है इसमें मुख्य होता है

13 अस्तित्व में व्यवस्था सत्ता के नाम से जाने जाते हैं शून्य व्यापक पारदर्शी पारगामी अखण्ड पूर्ण ईश्वर अनादि ऊर्जा इन के प्रकार से जाने जाता है 4 अवस्था प्राणावस्था जीव ज्ञान चारों अवस्था में समाया है इसके बिना पल भर कोई अवस्था नहीं रह सकते हैं

14 संसार सत्ता और परमाणु अणु रसायन प्राणकोशिका मेरे समझ से कोई दुसरा रचना कार है वे अपने समझता रचना का रचना परमाणु अणु रसायन प्राणकोशिका को चलाया पेड़ पौधे कीड़ा मकोड़ा पशु पक्षी मनुष्य शरीर का रचना किया चारों अवस्था का रचना इनकी द्वारा से समझ आया जीवन विद्या सर्व श्रेष्ठ है आगे ऊंचाई में स्तर में चलाये जाये

श्री मान्य महोदय नागराज जी द्वारा कार्यक्रम चलाया गया है समझने में बहुत आभारी हूँ दिनांक 2-8-99

दिनांक

कार्यकर्ता व० पंचकाऊ जाति पनिका ग्राम गतवा थाना व तहसील जांजगीर जिला बिलासपुर पेशक खेती किसानी

जीवन विद्या सीबिर

मैं अपने परिवार में रह कर अर्थात समाज में रह कर इस जीवन में सुख शांति नही मिला उसी के कारण सारी जिन्दगी गलत काम गलत व्यवहार गलत वाणी सुजते करते रहे। जिसके आधार पर आज इस जेल के चार दिवारी में नाना प्रकार के दुख झेलना पड़ रहा है। उसके साथी-साथ थोड़े से मौका जेल के अन्दर जिवन विद्या का संगम हमको मिला उसके आधार पर अपने बुद्धी के आधार से इस संसार के सुख इस वर्ष ऐसेव एक सपना के सामान है। सीबिर का आधार पर अब इस जिवन में ओ सुख शांति कहाँ मिलेगा कैसे मिलेगा। इस चीज को अपने आत्मा के अन्दर जानना है। और जान करके उसी में बचे हुए जीवन को उतारना है जो सही कर्म है। उस कर्म में सही व्यवहार सही वाणी में जहाँ तक के बन पड़े वहाँ तक के अपने जीवन को उतारना है। अब यही में ~~मिलने का~~ सुख शांति मिलने का आभास हो रहा है।

दिनांक

जीवन विद्या-

चन्द्रराम पटेल बल्द छोडु लाल पटेल- ग्राम देवरमाल -
थाना - कोरबा जिला- बिलासपुर (म. प्र.)

जीवन विद्या मानव अधिकार एवं समाज के रहने के ज्ञान धारायें है मैं स्वस्थ शिविर का एवं शिविर के उपयोग में अध्यापक के पढ़ाने पर मुझको ऐसा मालूम पड़ा जिसें मैं मानव चला आ रहा था जीवन विद्या के ज्ञान में आत्म प्रदान हुआ परन्तु किसी व्यक्ति को पहले हम मानते थे ऐसे समझ में आया जानकर मानना है जीवन विद्या के बारे में पता चला और जीवनविद्या के बारे में परिवार के साथ या समाज के साथ बड़े बड़े कठनाई में रह सकते है और हमें व्यवसाय के बारे में पता चला तो शुभ व्यवसाय मिला और विचार में सुख अनुभव हुआ और जीवन विद्या के बारे में ये पता चला कि मानव सम्बंध में जो मांस खाता है और नशा करता है न समझ के कारण मांस खाता और नशा करता है। जीवन विद्या के बारे में पता च जीवन विद्या के अनुसन्धी श्री नागराज जी एवं उनके सहयोगि का मैं आभारी महसुस करता हु जीवन विद्या आने वाली परंपरा एवं विगत परंपरा में हमेशा लगा रहूंगा जिससे जीवन पाकर आपतो मेरे साथ रहन सहन शरीर जीव आत्मा का ज्ञान बोधक तत्व का ज्ञान करती है। मनुष्य जो धर्म कर्म कि लड़ाई करते आ रहे है। दूसरे यह महसुस होता है या आत्म ज्ञान प्रदान हुआ है कि सभी मनुष्य मेरे गांवमें आ रहे है। वह जीवन का अज्ञान है। जिसेजोपरमात्मा में या ईश्वर में जिन्हे वही जीवन विद्या के ज्ञान के दीपं है जीवन विद्या से मुझे काफी समझदारी महसुस हुआ जिसे मैं समाज के कामना या परिवार के कामना करते रहुगा और यह लक्ष्य गुरुजी के वाणी तक पहुचावुगा -

दिनांक
31-7-98

पुस्तक
जिवन विद्या के लक्ष्य है।

जिवन विद्या बड़ा अनमोल है। इसे हम पाकर मै और मेरा शरीर सुद्ध हो गया जो चीज को हम खोज रहे है। उसको हमारे जिवन पाकर शान हुवा और चाहत होने से मै सत्य को जान कर ज्ञान लिया कि इससे सब कुछ बना हुवा है। इसी ने जिवन और आत्मा को बनाया है। और सब संसार बनाया है। इसी ने गंगा जमुना और तिरबेनी बही है। उसी प्रकार जिवन विद्या हमारे लिये और सब मानवों के लिये गंगा बह गया है। जो मनुष्य उस गंगा मे डुबकी लगाना है सो लगा सकते है। मेरा जीवन पाया है और जिवन अमर काया के रुप मे है। ये जिवन मे चार स्थान का जिव प्रवेश किया है। पशू पक्षी और उखमज जरायज और मानव है।

मानो शरीर पाकर जिवन विद्या को पढ़ कर अपना जिवन सफल बनाये। और सत्य को अपनायो। सब मानव से प्रेम भाव से निभावे और अपने परिवार मे सही से सलाह कर के रहे और गाँव मे अच्छा से भाव रखे और अच्छा से ज्ञान बतावें क्योकि किशी से दुसमनी नही रखने के इच्छा ~~नही रखे~~ अपने जिवन मे नही लाना। क्योकि ये सब पाप है जिवन के अंदर धर्म और कर्म के सिद्धांत या दया रखने का उपाय रखे। हमारे गुरुजी नागराज हम को अच्छा ज्ञान पढ़ाया उसे मै बारबार ~~अभी~~ आधारिक हू और उसकी सहयोगी को बार बार निवेदन है। ये जिवन विद्या हमारे परंपरा चलेगा और सब हमारे बच्चो ने पढ़ेगा। ~~धन्यवाद~~

धन्यवाद

चिन्तामणी ग्राम मालूखोंदरा
तसील लोरमी जिला
बिलासपुर (म.प्र)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

श्री गणेशाय: नमः

हे सरस्वतीमाता हमारी पढाई लिखाई सफल करें। मे

(1) जीवन विद्या के पढने लिखने सुनने में हमको बहुत ही जीवन के बारे में परिवर्तनतथा सुधार हुआ है।

(2) मै और जीवन विद्या में भाग लेता रहूँ गा।

(3) जीवन बिद्या मेरे को बहुत अच्छा लगा और लगता है।

(4) जीवन विद्या के अदयनकरने में मेरे को सुख और शाँति मिला

(5) जीवन और विद्या अलग अलग है कहकर मेरे को अभी ज्ञान हुआ है।
क्यो कि जीवन एक आत्मा है।
विद्या बुद्धी ज्ञान है।

(6) जैसे :- भूखलगना प्यासलगना पैसाब लगना इत्य आदि को जीवन बतलाता है। यह सत्य है।

(7) मैं चिन्ता के कारण पूरा जीवन विद्या के बारे में पूरा समझ नहीं पया हूँ और पढना चाहता हूँ।

प्रेषक :- मुरारी सिंह क्षत्री
तहसील जांजगीर
ग्राम भैंसमुड़ी
विचार धीन बन्दी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक 15-2-97 से आज तक जीवन विद्या शिविर में भाग लेने वालों के नाम व पिता का नाम

१. सेवकराम S/o होरीलाल
२. करणदास S/o धरमदास
३. राजू राजकुमार S/o बिहारी
४. शिवराम S/o फिरतूराम जेलस्थानांतर
५. रामगोपाल S/o डोकरीराम रिहा
६. रामप्रसाद S/o बेचनसिंह
७. लक्ष्मीनारायण S/o कुंवरसिंह
८. संतोष कुमार S/o पुसऊ रिहा
९. बेदूसिंह S/o गोवर्धनसिंह जेलस्था०
१०. अमितकुमार S/o कोदुराम रिहा
११. शंकरगिरी S/o जगदीश जेलस्था०
१२. रमेश S/o बोधीराम
१३. भूपाल S/o छेदूराम जेलस्था०
१४. गनेशराम S/o जिवरारवन
१५. जगनिवास S/o नंदूप्रसाद रिहा
१६. रामानन्द S/o रामनाथ रिहा
१७. राजकुमार S/o राजाभाऊ जेलस्था०
१८. बिक्रम बहादुर S/o बृज बहादुर रिहा
१९. मधुसूदन S/o रामसहाय रिहा
२०. आनंददास S/o सुन्दरलाल जेलस्था०
२१. राजेन्द्र S/o बुधराम रिहा
२२. राजेन्द्र S/o तुलसीप्रसाद जेलस्था०
२३. राजेश S/o गयासिंह रिहा
२४. गोपालदास S/o लालदास
२५. महेशराम S/o बृन्दाबन रिहा
२६. नरोत्तम S/o जेठूराम
२७. शोभाराम S/o फिरतूराम
२८. मोहन S/o दसदुरा रिहा
२९. गणेशराम S/o राजकुमार
३०. सेतराम S/o यादराम रिहा
३१. शंभूदयाल S/o बुधराम रिहा
३२. चरण S/o वजनराम जेलस्था०
३३. करमचन्द S/o पारसनाथ
३४. जूनास S/o कोमल रिहा
३५. रामसिंह S/o रूंगुसिंह
३६. जानसिंह S/o सुकलाल जेलस्था०
३७. ईश्वर S/o सेतराम
३८. नरेश S/o जीवनलाल
३९. संतोष ध्रुव S/o मेंधुराम
४०. दयाराम S/o हीराराम
४१. अनिल S/o लक्ष्मीनारायण
४२. अंजोरी S/o रंगलाल रिहा
४३. राजसिंग S/o बलदेवसिंह
४४. विरेन्द्रसींह S/o संतमसींह रिहा
४५. बलराम S/o जगदीश रिहा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

९

४६. मुरारीसिंह S/o माखनसिंह　　४७. नरेश कुमार S/o रामलाल
४८. सीताराम S/o दरसराम रिहा　　४९. अर्जुन S/o जगन्नाथ
५०. संतम्सीह S/o रानिमसीह रिहा　　५१. राजेन्द्र S/o सहसराम
५२. चन्द्रकुमार S/o मेहरामन रिहा　　५३. दर्शनदास S/o अनुपदास
५४. मनोज S/o भागीरथी रिहा　　५५. भागीरथी S/o महाबीर
५६. बल्लू S/o जियालाल रिहा　　५७. मनराखन S/o भागबली
५८. विनोद S/o रामकुमार रिहा　　५९. शिवराम S/o भागवत रिहा
६० रामसुजान S/o रामदीन रिहा　　६१. अर्जुन S/o चनाराम रिहा
६२. अशोक S/o सत्यनारायण रिहा　　६३. मोतिलाल S/o लैनदास रिहा
६४. रविकुमार S/o विजय कुमार जेलस्था०　　६५. सुरेश S/o कालीकाप्रसाद रिहा
६६. लक्ष्मण S/o जालिमसिंह जेलस्था०　　६७. संतोष S/o शंकर रिहा
६८ प्रकाशचन्द S/o चरमदास　　६९. चंदा S/o भावसिंह
७०. पुनीराम S/o सरगुजिहा रिहा　　७१. सतीश S/o मुरली रिहा
७२. हरिशचन्द्र S/o पुनीराम रिहा　　७३. संतोष S/o बाबूलाल
७४. रमेश S/o हेमसिंह रिहा　　७५. बसंत S/o लालदास
७६. बिहारी S/o मंगलू　　७७. सीताराम S/o बैजू
७८. मनोज S/o नागेप्रसाद रिहा　　७९ भगत S/o समारू रिहा
८०. शिवकुमार S/o बुदुल रिहा　　८१. पुरुषोत्तम S/o श्यामकुमार
८२. पुरुषोत्तम S/o नत्थु रिहा　　८३. राजाराम S/o मुकुतराम
८४. उमेंद S/o बाबूदास रिहा　　८५. शिवशंकर S/o श्रीकेशन रिहा
८६. मेंदुराम S/o ईसराम रिहा　　८७. धुरी S/o सालिकराम रिहा
८८. मनीष S/o शिव रिहा　　८९. जुगराम S/o रघुनाथ रिहा
९०. परदेशी S/o गोपीनाथ

९१. रोहितकुमार S/o धरमदास रिहा	९२. रामाधार S/o गरीबा रिहा
९३. राजूमांझी S/o दासीमांझी रिहा	९४. श्रीराम S/o कुद्सेन रिहा
९५. अवधेशसिंह S/o चन्द्रभान रिहा	९६. धरमदास S/o कुम्हार
९७. कुवंरसिंह S/o कुम्हार	९८. जेठूराम S/o कुम्हार
९९. लक्खुराम S/o हीरालाल रिहा	१००. देवीलाल S/o चौरसाव
१०१. रामबली S/o कोदनराम	१०२. रामे S/o सरवना जेलट्रा०
१०३. कुलास S/o रामाधीन रिहा	१०४. चैतराम S/o कुम्हार
१०५. पुसऊ S/o बराती रिहा	१०६. गोफे S/o बोधनिया
१०७. नारायण S/o दशरथ	१०८. मोहितराम S/o बड़सइत रिहा
१०९. गनपत S/o तुलसी रिहा	११०. लक्ष्मण S/o पंचराम रिहा
१११. तीजराम S/o गरहजलाल रिहा	११२. सालिक S/o दुखीराम
११३. जागेश्वर S/o व्यासीराम	११४. बुधारी S/o पीलूराम रिहा
११५. सरवनलाल S/o मल्लूराम रिहा	११६. अंजोरदास S/o फुंदरू रिहा
११७. रामगोपाल S/o पुनीराम रिहा	११८. नरेन्द्रकुमार S/o जीवलाल
११९. हरिभाऊ S/o अमृत रिहा	१२०. ~~बेनी~~ बेनीराम S/o रतनु रिहा
१२१. उदराजसिंह S/o शिवमंगल	१२२. बग्गूराम S/o रामाधार
१२३. भुनेश्वरसिंह S/o चमारसिंह रिहा	१२४. संतोष S/o जयंतमसीह रिहा
१२५. पवन S/o श्यामसुन्दर	१२६. अजितराम S/o दुखीराम
१२७. राजन S/o सहसराम रिहा	१२८. सीतल S/o नीलकंठ रिहा
१२९. धरनीधर S/o धनीगिरी रिहा	१३०. रामनाथ S/o मुकुन्दा रिहा
१३१. कौशल S/o बीरबल रिहा	१३२. रज्जन S/o बंशीलाल रिहा
१३३. पुनीलाल S/o आत्माराम जेलट्रा०	१३४. जगन्नाथ S/o सीताराम रिहा
१३५. रामायणदास S/o परसनदास	

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

१३६. जनकराम S/o इतवारी
१३७. राधेश्याम S/o हीराम
१३८. उधोराम S/o जिवरारवन जेलप्रे०
१३९. परमेश्वर S/o लखनसिंह रिहा
१४०. छत्तरदास S/o भुकुकलाल रिहा
१४१. नरबदवा S/o चोटी रिहा
१४२. सुखराम S/o गंगाराम रिहा
१४३. नारायणसिंह S/o बिशाली रिहा
१४४. हरप्रसाद S/o होरीलाल रिहा
१४५. पवनसिंह S/o पुसऊसिंह रिहा
१४६. सनतराम S/o टहंकुराम
१४७. मंगलदास S/o धरमदास रिहा
१४८. बलकराम S/o रमसाय रिहा
१४९. सिकन्दर S/o दाऊमार्टिन रिहा
१५०. अंगदराम S/o भागवत रिहा
१५१. पिताम्बर S/o कुंजराम रिहा
१५२. राजकुमार S/o बहोरन रिहा
१५३. बड्डाकुमार S/o रामलाल
१५४. विजयकुमार S/o टीकाराम
१५५. बरन S/o नारायण
१५६. गयाराम S/o दुकलू
१५७. ईश्वर S/o हीराराम
१५८. बेगराम S/o केशार
१५९. सजोराम S/o खोराराम रिहा
१६०. बोधनसिंह S/o कातिकराम रिहा
१६१. केदारसिंह S/o कातिकराम रिहा
१६२. दिलहरण S/o बहोरिक
१६३. भागवत S/o परदेशी रिहा
१६४. गोफेलाल S/o भरोसा
१६५. रमेशगुप्ता S/o मन्नूलाल रिहा
१६६. महेन्द्रसिंह S/o कल्याणसिंह
१६७. सीताराम S/o सहाराम रिहा
१६८. बुद्धरसिंह S/o प्यारेसिंह जेलप्रे०
१६९. ललितप्रसाद S/o धीराजी रिहा
१७०. रमेशगुप्ता S/o श्यामलाल
१७१. प्रमोदगुप्ता S/o मन्नूलाल रिहा
१७२. गोकुला S/o अजित
१७३. दशरथ S/o घासीराम रिहा
१७४. अशोक S/o पीलालाल
१७५. ध्रुवकुमार S/o पुरूराम रिहा
१७६. बृजलाल S/o मंगलूराम रिहा
१७७. गयाराम S/o दुकलू
१७८. गणेशशर्मा S/o रमेश्वर
१७९. समारूलाल S/o तिरिथराम रिहा
१८०. नारायण S/o जेठूराम

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

१८१. रहसलाल S/o अंजोरा	१८२. उबारन S/o फूलदास
१८३. भागवत S/o पुकदास	१८४. आत्माराम S/o हरप्रसाद
१८५. राजकुमार S/o मुनीराम रिहा	१८६. मनोहर S/o डेरहा
१८७. बुच्चुराम S/o बोड़र रिहा	१८८. कुवांरु S/o तिहारी रिहा
१८९. सरजूराम S/o कृपालसिंह रिहा	१९०. छेदीलाल S/o प्रहलाद रिहा
१९१. श्यामचंद S/o देवप्रसाद	१९२. मंगरु S/o शिवधन रिहा
१९३. रामअवध S/o हरसूंगी रिहा	१९४. कुंजराम S/o सुन्दरवा रिहा
१९५. भजनलाल S/o अघारीराम	१९६. हेमसिंह S/o करनसिंह जेल स्था.
१९७. गजेन्द्र S/o जगन्नाथ रिहा	१९८. संतोष साहू S/o कुवंरसिंह
१९९. विष्णुप्रसाद S/o बिसल रिहा	२००. चिन्तामणी S/o पहारु
२०१. फत्तेराम S/o दुकलू	२०२. लोमस S/o बिसाल रिहा
२०३. सालिकराम S/o बरवरिया	२०४. भुजबल S/o नन्दू
२०५. चिरंजीव S/o नरसिंह रिहा	२०६. मथुरा S/o अजित
२०७. संतोष S/o पालन	२०८. मनहरण S/o फिरंगी रिहा
२०९. गंगाराम S/o अवधराम	२१०. बेदराम S/o प्रेमलाल रिहा
२११. पुनदास S/o चंदरमन	२१२. महेश्वर S/o बसी[illegible] ~~रिहा~~
२१३. गोवर्धन S/o बिहारीलाल रिहा	२१४. शत्रुहन S/o कुंजल
२१५. जगदीशप्रसाद S/o त्रिवेणी यादव रिहा	२१६. समेलाल S/o भगरु
२१७. ~~[illegible]~~ कन्हैया S/o सालिकराम	२१८. पंचराम S/o कलेशराम
२१९. बंशी S/o रामलाल	२२०. गुहाराम S/o भूखनराम
२२१. धर्मपाल S/o लभ्भू रिहा	२२२. बेदराम S/o धनाराम
२२३. रंजन S/o धरमदास	२२४. फलेश्वर S/o सरयू रिहा
२२५. शंकर S/o रामफल रिहा	

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

P.T.O.

२२६. भागसिंह S/o मतंग २२७. अजयसिंह S/o जलेश्वर रिहा
२२८. रंजन S/o रामावतार रिहा २२९. छेदराम S/o डेराराम
२३०. बृजभूषण S/o सुखदेवराम रिहा २३१. विनोद S/o रामायण रिहा
२३२. शैलेन्द्र S/o गंगाराम रिहा २३३. दाऊलाल S/o बुधराम रिहा
२३४. रामदास S/o चुरऊ २३५. भागीरथी S/o सुखरु
२३६. ईश्वरदास S/o कमीनदास २३७. मुनवा S/o ललवा रिहा
२३८. सहसराम S/o जिवराखन रिहा २३९. आजूराम S/o लैनू
२४०. हरिनामसिंह S/o धीरपालसिंह २४१. हरप्रसाद S/o दुखनलाल
२४२. उमेदसिंह S/o हीरासिंह रिहा २४३. अशोक S/o जयलाल
२४४. श्यामलाल S/o कोलाई २४५. बलदाऊ S/o शिवाधन रिहा
२४६. सुरेश S/o मनीराम २४७. परदेशी S/o छोटूराम रिहा
२४८. जगदीश S/o शानदास २४९. मानसिंह S/o बहोरन रिहा
२५० गाडाराम S/o ननकीराम रिहा २५१. रामावतार S/o विक्रम
२५२. खराम S/o कुन्नू रिहा २५३. भूरवऊ S/o जगदेव
२५४. रमेश S/o सुखाराम २५५. अच्छेराम S/o मनीराम रिहा
२५६. त्रिलोकीप्रसाद S/o झगरू जेलट्रा० २५७. रामलाल S/o संतराम जेलट्रा०
२५८. कृपाशंकर S/o लक्ष्मीप्रसाद २५९. संतकुमार S/o अजमेरसिंह
२६०. कायादास S/o पचकौड़ २६१. चंदराम S/o छोटूराम
२६२. सत्यप्रकाश S/o रेशम २६३. गचपाल S/o ईतवारी रिहा
२६४. गुरुप्रसाद S/o श्यामचंद २६५. संतोषकुमार S/o व्हीजयराम
२६६. मनोजकुमार S/o श्रीराम रिहा २६७. बंशीलाल S/o द्वारिका रिहा
२६८. रामलाल S/o हीरासिंह २६९. अचलराम S/o तिरिथराम
२७०. भागीरती S/o जनतु रिहा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

२६१. पिंकू e सुरेश S/o मन्नूलाल	२६२. अंजोरी S/o सुरबाराम
२६३. संतोष S/o टीकाराम रिहा	२६४. हरिशंकर S/o रतनु
२६५. अवधराम S/o रामदयाल रिहा	२६६. भिलाराम S/o दादूराम
२६७. रमाकांत S/o जिवराखन रिहा	२६८. द्वारिका S/o लरहासाहू
२६९. ~~महेन्द्र चौबे~~ S/o श्रीरामचंद चौबे	२७०. भरतकुमार S/o गणेशराम रिहा
२७१. सौंपतप्रसाद S/o गरीबा काठले रिहा	२७२. रामसाय S/o बलदेव
२७३. चैतराम S/o सुबरन रिहा	२७४. ननकूराम S/o चतुरसिंह रिहा
२७५. रामचरण S/o इन्दराम	२७६. मंगलूराम S/o महेशराम रिहा
२७७. बुधेराम S/o चैतराम	२७८. बिसनुराम S/o जनकराम
२७९. चोटीराम S/o नन्जतीया	२८०. छोटेलाल S/o सुरतसिंह
२८१. सुरेश बंधवानी S/o पंजुमल	२८२. रफीक S/o गफूर खान
२८३. शिवसिंह S/o हरिसिंह	२८४. लक्ष्मणप्रसाद S/o टीकाराम
२८५. सुखनन्दन S/o जगन्नाथ	२८६. बहोरन S/o जिवराखन
२८७. अजयकुमार S/o मनराखन	२८८. पुनीराम S/o जिवराखन
२८९. अनिलगोस्वामी S/o तिलका	३००. मोहनलाल S/o ठाकुरराम
३०१. लखनराम S/o कंगलुराम रिहा	३०२. मालु e सुकदेव S/o जोसेफ
३०३. मनीष S/o मनीराम	३०४. मन्तराम S/o इम्मे
३०५. तिलराम S/o पदुमलाल	३०६. देवनारायण S/o परमानन्द
३०७. गनपतदास S/o शंकरदास	३०८. परमानन्द S/o महेत्तर
३०९. जन्मेजय S/o हरिनारायण	३१०. कन्हैया S/o प्रहलाद
३११. तारनदास S/o सुखराम	३१२. सुरेशकुमार S/o दुलारी
३१३. पुरनदास S/o ~~जीवन~~ जगीदास	३१४. पेशीराम S/o मुकुन्द
३१५. उबारन लाल S/o सुखरा	३१६. भगला S/o महेत्तर
३१७. राजू यादव S/o भूरवा	३१८. गुलाबा S/o नत्थुराम
३१९. दुखीराम S/o मोहन	३२०. शत्रुहन S/o भोलाप्रसाद

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

३२१. रामलाल S/o संतराम जेल्स० ३२२. जगतारन S/o सुखराम
३२३. चिरौंजीलाल S/o छोटेलाल ३२४. बिसन S/o इतवारी
३२५. पिलादाऊ S/o गंगाराम ३२६. मिलन S/o बुल्लू
३२७. सेखराम S/o सीटू ३२८. गोपाल S/o हजारी
३२९. नरेशकुमार S/o जगतराम

जीवन विद्या शिविर

जानकारी:→ दिनांक 15-2-97 से आज तक 329 व्यक्तियों का शिविर हुआ जिसमें 162 रिहा हो चुका है तथा 167 व्यक्ति इस जेल में निरुद्ध हैं।

(15) आत्माराम S/o हरप्रसाद :→ जीवन विद्या शिविर में तीन बार भाग ले चुका हूँ मुझे यह जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा, इनके द्वारा मुझे परिवार के साथ समाज के साथ जीने का और न्याय और में चलने का सुन्दर समझदारी आया। और आगे शिविर लगना चाहिए।

(16) भुरवऊ S/o जगदेव :→ जीवन विद्या शिविर ठीक लगा न्याय समझना हूँ।

(16) संतकुमार S/o आलमोरसिंह :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा समाज व्यवस्था, शक्ति व्यवस्था - व्यवहार, अध्ययन बल तथा दोलित को समझना. सम्बन्धों को समझा हूँ और शिविर लगना चाहिए तथा मैं फिर से शिविर में भागलूंगा।

जीवन विद्या

मैं पंचप्रकाश जाटले वल्द श्रीलाल जाति सतनामी ग्राम पताईडीह पुलिस चौकी पचपेड़ी पो. आ. पचपेड़ी जिला बिलासपुर की रहने वाला हूँ

मुझे जीवन विद्या पाकर बहुत आनन्द हुआ कि मैं जीवन विद्या में किस प्रकार की अमल डाला हूँ और मुझे जीवन विद्या सुनकर कुछ जानकार हुए हैं

(1) जीवन विद्या में पांच तत्वों की बारे में जानकार हुआ हूँ

(2) अनन्त तत्व की रहन की बारे में जानकार हुआ हूँ

(3) इस पांच तत्व किस प्रकार से रहती है मैं जानकार हुआ

(4) कौन तत्व किसकी सहारे पर आधारित है और कौन सा तत्व अपने आप स्वयं आधारित है

(5) जीवन निरंतर गमन को किस प्रकार सम्पन्न करता है

(6) मानो जीवन धरती जीवन और पशु जीवन को आहार की बारे में मुझे जानकार हुई

(7) मानो जीवन के निरंतर ज्ञान सम्पन्न रहने का उपाय

प्रथम मास जिला कुमार गुरुजी जो पहिले [illegible] आगे के लड़ों को [illegible] नाम ईश्वर को अपनाने में देखा तो यह माना जीवन को सुलभता है

(8) मानो जीवन में जीवन विद्या पाकर धर्म अधर्म की बारे में जानकार हुए हैं

9 मानो जीवन में अब मुझे ज्ञान प्राप्त हुई है कि मैं [illegible] किसी प्रकार की [illegible] किसी [illegible] प्रेम भावना रखकर जो लोग [illegible] में पड़े हैं इस विधि को मुझे जीवन विद्या पाकर सब जान गई

(10) अबकी मेरे गुरु जी से प्रार्थना है कि मेरी लिखी [illegible] आप पढ़ कर [illegible] अगर मैं कुछ मानो जीवन में किसी प्रकार की त्रुटि होगी [illegible] माफ करेंगे [illegible] गलत [illegible] पढ़ा लिखा नहीं हूँ [illegible]

पंचप्रकाश जाटले ग्राम पताईडीह

दिनांक - 28-4-98 से
13-5-98 तक

वार्ड नं० - 8 -

① सुरेश S/o मनीराम :-> जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा शरीर, स्वयं, परिवार-समाज, प्रकृति तथा अस्तित्व में जीना को समझा और शिविर यहाँ लगना चाहिए मैं और शिविर में भाग लूंगा।

② परदेशी S/o छोटूराम :-> जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा मैं चारों स्थिति/परिस्थिति को समझा (स्वयं, शरीर, परिवार, समाज, प्रकृति तथा अस्तित्व) समझा हूँ मानव के पांच प्रकार को समझे और मानवीय बहुत सहज आचरण बनाना चाहता हूँ, संसार दो बातों पर टिकी है को समझा, जीवन के पांच बल तथा शक्ति को समझा हूँ, जो समझा हूँ उसे दूसरों को भी सीखाना चाहता हूँ। शिविर और लगना चाहिए और मैं शिविर में भाग लूंगा।

③ रमेश S/o सुखराम :-> जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा मैं परिवार, समाज में जीना समझा तथा मैं अपने चाहत और पाने के उपाय को समझा हूँ। जीवन के अक्षय बल तथा शक्ति को समझा, अस्तित्व में जीना समझा हूँ और शिविर लगना चाहिए तथा मैं शिविर में भाग लूंगा।

④ अच्छेराम S/o मनीराम :-> जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा शरीर, परिवार, समाज में जीना समझा हूँ तथा शरीर के सभी इन्द्रियों को समझा हूँ। जो मैं समझा हूँ, उसे अपने शब्द में औरों को समझाऊंगा और शिविर लगना चाहिए तथा मैं शिविर में पुनः भाग लूंगा

⑤ जगदीश S/o ज्ञानदास :-> जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा पांच कर्मेन्द्रियों तथा पांच ज्ञानेन्द्रियों को समझा जीवन के पांच अक्षय बल तथा शक्ति को समझा हूँ, स्वयं, समाज, परिवार, प्रकृति में जीना समझा हूँ। संसार दो बातों में टिकी है को समझा हूँ, शरीर तथा जीवन में अन्तर समझा, मानव के पांच प्रकार को समझा, न्याय धर्म में चलना सीखा सम्बन्धों को समझा और यहाँ शिविर लगना चाहिए तथा मैं शिविर में भाग लेना चाहता हूँ। और जो समझा हूँ, उसे औरों को समझाऊंगा।

⑥ हरप्रसाद S/o दुखवलाल :-> जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा मैं शिविर किया तो मेरा क्रूरता दूर हो गया शरीर तथा जीवन में अन्तर को समझा

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

परिवार, समाज, प्रकृति में जीना सीखा हूँ पांच ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय के बारे में समझा तथा स्व-परिवार समझा, मानव के पांच प्रकार, सत्ता के समझ, मानव सम्बन्धों को समझा, जीवन चक्र को समझा, मैं अपने लक्ष्य को पाना चाहता हूँ। और शिविर लगना चाहिए तथा मैं फिर से शिविर में भाग लूँगा।

(7) मानसिंह S/o बहोरन :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा दो दिन शिविर में रहा, पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, तथा ज्ञानावस्था को समझा तथा स्थिति के पूरकता को समझा, जीवन चक्र को समझा हूँ जीवन जागृति को पाना चाहता हूँ। शिविर लगना चाहिए और शिविर में भाग लूँगा।

(8) त्रिवेणी प्रसाद S/o झगरू :→ जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा परिवार व्यवस्था को समझा और शिविर लगना चाहिए तथा मेरे दिमाग विचलित होता है जिससे शांति करना चाहता हूँ, कुछ राहत मिला।

(9) गाड़ाराम S/o ननकीराम :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा ~~मैं केवल पांच दिन शिविर~~ परिवार, समाज, प्रकृति में जीना सीखा हूँ तथा उक्त को व्यवस्था समझा हूँ। शिविर नहीं लगना चाहिए। जेल से निकलना चाहता हूँ

(10) रामलाल S/o सेतराम :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा मैं केवल पांच दिन शिविर किया हूँ परिवार व्यवस्था, समाज तथा सम्बन्धों को, न्याय को समझा हूँ, समृद्धि समझा, शिविर लगना चाहिए।

(11) रामावतार S/o विक्रम :→ जीवन विद्या शिविर ठीक लगा शरीर, परिवार, समाज में जीना समझा हूँ और शिविर लगना चाहिए तथा मैं फिर से शिविर में भाग लूँगा।

(12) कृपाशंकर S/o लक्ष्मीप्रसाद :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा परिवार, समाज, प्रकृति, शरीर में जीना सीखा चार दिन ही तो शिविर किया हूँ और शिविर लगना चाहिए और मैं जीवन विद्या शिविर में भाग लूँगा।

(13) रघुराम S/o बुलकू :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा जानना-मानना को सीखा परिवार व्यवस्था को समझा और शिविर लगना चाहिए तथा और मैं भाग लूँगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक 22-10-98 से

जीवन विद्या शिविर 21/10/98 से 26-10-98 तक

① रमेश्वर S/o सुखाराम - 7
~~② कार्तिक S/o - 8~~
② चन्द्रराम S/o छोटू - 14
③ महेन्द्र चौबे S/o रामचन्द्र - 14
④ चिन्तामणि S/o पहारू - 14
⑤ जीवन S/o मनवा - 5
⑥ ✓रविशंकर S/o धनऊ 12 B
⑥ ✓छोटा S/o धनिनसाय 12 B
⑦ वहीद खान S/o मो० अली 12 B
⑧ ठण्डाराम S/o देवप्रसाद 8
⑨ रोहित S/o रघुनन्दन 12 B
⑩ ✓मनीष S/o मनीराम 16
⑪ राजकुमार S/o छुकुलाल - 16
⑫ उदराजसिंह S/o शिवमंगलसिंह - 8
⑬ मुरारीसिंह S/o माखनसिंह - 7
⑭ आत्माराम S/o हरप्रसाद - 8
⑮ मनोहर S/o डेरहा - 8
⑯ ✓रामायण S/o परसनदास - 5
⑰ ✓हरप्रसाद S/o दुखन लाल - 7
⑱ मोहनराम S/o ननकूराम - 6
⑲ ✓मनराखन S/o भागबली - 7
⑳ सालिकराम S/o बरतरिया - 3
㉑ तिलककुमार S/o मुक्ताराम - 3
㉒ अशोक कुमार S/o पीलालाल - 7
㉓ भेलाराम S/o मोतिराम - 5
㉔ हरप्रसाद S/o होरीलाल 8
㉕ हरनारायण S/o तीरथराम - 16
㉖ शिवरतन S/o दुकलहा 12 B
㉗ गनेश S/o जिवराखन - 7
㉘ गोकूला S/o अजीत - 7
㉙ करण S/o ~~बुधराम~~ धरमदास - 3
㉚ रमेशर S/o बोधीराम - 3
㉛ केशन्द S/o फुनऊ - 7
㉜ रामनिहोर S/o पंचमसिंह 7
㉝ कामदास S/o [illegible] 16

दिनांक 22-9-98 से
वार्ड नं० 12 B जीवन विद्या शिविर - 9-10-98 तक

① वहीदखान S/o मो. अली → ये शिविर मुझे अच्छा लगा मैं अपने बारे में पहले सोच नहीं पाता था ये शिविर से पता लगा कि मैं मानव हूँ और ऐसा मुझे विश्वास है, कि मनुष्य को आपसी सहयोग एवं परिवार मे. सामंजस्य बनाकर ही उन्नति कर सकता है, जीवन विद्या शिविर से मुझे अनुभव मिला कि इस विद्या से ही मनुष्य का सर्वांग उन्नति होगा शिविर में आने के पहले मेरे सारे सोच गलत थे। यहां से निकलने के बाद बल्कि अभी से मैं अपने सारी बुराई को छोड़ता हूँ एवं जीवन विद्या के अनुसार ही जीवन यापन करूंगा। मैं पहले नाराज होता था अब नहीं होता हूँ, आहार को सीमित समझने के बाद जो मिलता है उसी पर ही संतोष रहता हूँ, इसके पहले असंतोष रहता था शिविर और लगना चाहिए मैं पुनः भाग लूंगा।

② फोचाराम S/o चिरनसाय :→ ये शिविर मुझे अच्छा लगा, मुझे ये ~~शिविर~~ सिख मिली कि मैं स्वयं और परिवार में ही सही जी सकता हूँ मैं अस्तित्व मे. व्यवस्था. मानव के प्रकार, न्याय को समझा, जो समझा हूँ औरों को समझाऊंगा, ये शिविर पुनः लगना चाहिए मैं पुनः भाग लूंगा।

③ फालगुनी S/o लखनलाल :→ ये शिविर अच्छा लगा, पहले मैं गाली गलौच करता था अब समझ में आया, गाली गलौच अमानवी व्यवहार है। मैं अब गाली नहीं दुंगा। पहले मैं सुख शांति से जीना चाहता था लेकिन कैसे सुख, शांति मिलेगा। मुझे अब (शिविर) सुख. शांति में जीने के उपाय मालूम हो गया एवं स्वयं में, अस्तित्व मे. परिवार मे. जीना चाहूंगा एवं न्याय को भी समझा। ये शिविर ~~फुर~~ पुनः लगना चाहिए एवं मैं फिर से शिविर में भाग लूंगा।

④ रविशंकर S/o धनाऊराम :→ ये शिविर अच्छा लगा, शिविर शिक्षा-प्रद एवं प्रेरणा दायक रहा, इस शिविर से पता चला एक मानव में कौन ~~से~~ कौन से गुण होना चाहिए मैं अब इन्हीं गुणों के आधार पर चलूंगा। यहीं रहते तक शिक्षा ग्रहण करूंगा एवं बाहर निकलने के बाद इस शिविर का (जीवन विद्या) प्रचार ~~एवं~~ करना चाहता हूँ, यहां पर मैं परिवार, समाज, प्रकृति व्यवस्था को समझा एवं जाना। ये शिविर पुनः लगना चाहिए मैं फिर भाग लूंगा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

दिनांक
27-8-08 से
18-9-08 तक

जीवन विद्या शिविर क्र० नं. 14

① मेलहु चौबे S/o श्री रामचन्द्र चौबे मेरा दूसरा शिविर है जीवन विद्या शिविर में सूरज सिंह मिला कि स्वयं को जानना जीव अमर है जीवन चक्र कैसे है, मानव का संम्बन्ध मानव कितने प्रकार के होते हैं, तथा शाकाहारी मांसाहारी मानवीय कृति समाज, परिवार के बारे में जानकारी प्राप्त हुई शिविर निरंतर लगते रहना चाही।

② चिन्ताराम S/o अघनराम मेरा तीन शिविर हुआ जीवन विद्या से मानव जीवन शाकाहारी में श्रेष्ठ सहय को मानना सत्य से इन्सान धर्म होता है इसी जीवन विद्या संसार में हमारे जीवन को दिया है उजाला पाकर के अपना जीवनसुख प्राप्त हो सके शिविर लगते रहना चाहि।

③ चन्द्रराम S/o कोदुराम मेरा तीसरा शिविर है, जीस जीवन विद्या को सुन कर तो जीवन का प्रकाश मिला था और समाज के बारे में मानव धर्म के बारे में शरीर के बारे में सम्बंध को जानकर परिवार में तो सुख उपकार मिलेगा और इस जीवन विद्या को पाकर मानव बनने का प्रयास करूंगा।

④ चिरंजीलाल S/o छोटेलाल मेरा पहला शिविर है मैं थोड़ा सा सान समझा परिवार समाज में कैसे जीते हैं समझ में आया।

⑤ अम्बालराम S/o विश्वराम मेरा तीसरा शिविर है मैं जीवन विद्या सेमिनार सुख से जीने के लिये समाज बताता है जागृति व शरीर मानव मांसाहारी का शाकाहारी के बारे में समझा चेद-चौथा को समझा।

⑥ किसन S/o ईतवारी मेरा पहला शिविर है जीवन से सुख मिलता है मुझे अच्छा लगा।

⑦ विलासु S/o गंगाराम मेरा पहला शिविर है मैं जीवन विद्या शिविर से आदमी को सत्य धर्म से अपना जीवन व्यतीत करने का मार्ग बताता है।

⑧ मिलन S/o बुधु मेरा पहला शिविर है मैं परिवार, समाज, शरीर को समझा जीवन को समझा शिविर और लगाना चाही।

⑨ सेवाराम S/o सिधु मेरा पहला शिविर है मैं जीवन, शरीर को अलग-अलग समझा परिवार समाज मानव को समझा जीवन विद्या शिविर और लगाना चाही।

⑩ गोपाल S/o हजारी मेरा पहली शिविर है मैं जीवन, शरीर परिवार, समाज को समझा जीवन-चक्र जीव को समझा, जीवन विद्या शिविर और लगाना चाही।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(11) नेखकुमार S/o जगतराम मेरा पहली शिविर है जीवन विद्या से परिवार, समाज, को समझा जीवन विद्या हर मानव में अती आवश्यक है जिससे सभी सुख से जी सकें।

(12) चौवेलाल S/o सुरतसिंग मेरा दूसरा शिविर है जीवन विद्या से सुख से जीने के लिये समझ बताता है परिवार, समाज में तालमेल बनाकर जीने के लिये समझ बताता है।

(13) रामचरण S/o इन्द्रराम मेरा दूसरा शिविर है मैं पेड़ पौधा जीव जन्तु को समझा जीवन, शरीर, त्वचा ज्ञानइन्द्रिय कर्म इन्द्रिय को समझा, परिवार, समाज, को समझा और शिविर लगाते रहना चाहीं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर दिनांक 5-7.98 से 16-7-08

जीवन विद्या शिविर सहित 8 मैं

---------×

दिनांक 10.8.08 से 26.8.08 तक

① जनमेजय S/o हरी नरसिंह → जिवन विद्या बहुत अच्छा लगा जीवन के व्यवस्था समझ में आया और सतता, ज्ञान जीवन को सुख शांत हुआ शरिर को आहार चाही और अन्य शिविर में भाग लेना चाहता हु मै हायर सेकेन्डी किया हु।

② कन्हैया S/o प्रह्लाद → जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा जीवन में मानव के साथ सम्बंध को समझा जीवन को समझा प्रकृति परिवार, समाज को समझा शांकाहारी और मांसाहारी को समझा अस्तित्व के व्यवस्था को समझा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हु मै सातवी पढ़ाहु।

③ तारनदास पात्रे S/o सुरथराम → जिवन विद्या बहुत ज्ञान के बात है जीवन को सुख चाही शरीर को आहार, शिमित में चाही प्राण अवस्था, पदार्थ अवस्था को समझा मैं जीवन विद्या को अच्छा तरिका से समझना चाहता हु मैं पाचवी पढ़ा हु।

④ सुरेशकुमार S/o दुलारी → जिवन विद्या शिविर बहुत बढ़िया लगा, जीवन को समझा प्राण अवस्था को समझा प्रकृति को समझा मैं और भाग लेना चाहता हु।

⑤ पुरनदास S/o जीवन → विद्या बहुत अच्छा लगा शिविर निरंतर लगते रहना चाही मैं किसानी करताहु।

⑥ केशोराम S/o मकुन्द → जीवन विद्या ठिक लगा मैं जीवन को समझा।

⑦ ख्वारनलाल S/o सुरथरा → मेरा दुसरा शिविर है। जीवन शरिर आत्मा साधन अनुभव पेड़पौधा चाँद सुरज धरती को समझा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(8) धकलाS/o महेत्तर → जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा जीवन शरीर परिवार समाज को समझा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हु।

(9) राजुयादव S/o सुरवा → जीवन विद्या मुझे समझमे थोड़ा सा आया।

(10) कुलाल S/o नत्थूराम → मेरा दूसरा शिविर है, शरीर परिवार समाज को समझा।

(11) दुखीराम S/o मोहन → जीवन विद्या मे मैं थोड़ा समझा।

(12) सन्तोहन S/o भोलाप्रसाद दुबे → जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा मैं सुख सुविधा परिवार समाज प्रकृति अस्तित्व कर्मइन्द्रिय ज्ञान इन्द्रिय को समझा मैं अमर सेकेन्डी किया हु।

(13) रामलाल S/o संतराम → शिविर बहुत बढ़िया लगा मैं जीवन को समझा समाधान, परिवार समाज को समझा मैं नवमी पढ़ा हु।

(14) जगतारन S/o सुखराम → शिविर अच्छा लगा जीवन प्रकृति समाज परिवार मानव के प्रकार को समझा मूल्य, ज्ञान, सत्य को समझा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हु मै बारवी किया हु।

(7) परमानन्द S/o मेल्लार मेरा पहला शिविर है मैं जीवन विद्या से हेता जो हमारे शरीर में पाँच इन्द्रियाँ है उन्हें किस प्रकार से चलाना है हमारे जीवन का उत्पत्ति किस प्रकार हुआ इसीको तथा जीवन चक्र को समझने से मालूम होता है।

(8) पुन्दास S/o चंदरमन दास मेरा दूसरा शिविर है। मैं जीवन सब से मानव तथा जीव अवस्था, प्राणं अवस्था से सम्बन्ध स्थापित कर जीने के लिए समझ में आया।

(9) सहुहन S/o कुन्जल मेरा दूसरा शिविर है मैं जीवन को समझने से ही स्वयम. शरीर. परिवार, समाज. प्रकृति तथा संसार समझ में आता है। जिससे मानव को निरंतर सुख से जीना समझ आता है।

पार्ट नं० 6 में

दिनांक 17-7-98 से 5-8-98 तक

जीवन विद्या शिविर

① महेतर S/o चालिया यह मेरा तीसरा शिविर है मैं समाज को तथा जीवन परिवार प्रकृति से सम्बन्ध स्थापित कर जीवन जीना समझ मे आता है।

② मन्तराम S/o सम्मे यह मेरा पहला शिविर है मैं जीवन, तथा राज नीति धर्म नीति को समझा जीवन विद्या से ही मानव का जीवन मे विकास दिखता है।

③ तिजराम S/o पकुमलाल यह मेरा पहला शिविर है मैं धर्म नीति. तथा नियम न्याय. परिवार. समाज जीवन. समाज समझ मे आता है।

④ दिलहरन S/o बलोरिक यह मेरा तीसरा शिविर है मैं धर्म जीव प्राण अवस्था. ज्ञानावस्था. तथा परिवार व्यवहार से जीना समझ मे आता है

⑤ देवनारायण S/o परमानन्द यह मेरा पहला शिविर है मैं मनुष्य की प्रकार पाँच है जिसको समझा राज नीति तथा धर्म नीति जीवन तक को समझा मांसाहारी साकाहारी परिवार समाज प्रकृति तथा अस्तित्व के बारे मे समझ आया।

⑥ गनपत दास S/o शंकर दास मेरा पहला शिविर है मैं जीवन मे सुख मिलना परिवार मे चोरी नही करुंगा नही करुंगा सांकाहारी मार पिट किसी से नही करुंगा सांकाहारी मांसाहारी को समझा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर -
दिनांक 16-7-98 से 30-7-98 तक

① चन्दराम पटेल S/o छेदूराम पटेल → मैं जीवन विद्या के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त हुआ है अस्तित्व व्यवस्था, धर्म, नियम, स्वयं में जीना, परिवार, समाज, प्रकृति व्यवस्था आदि को समझकर जीना सीखा। जीवन विद्या के पहले मेरा व्यवहार था किसी के लिए समय-समय पर नाराज हो जाता था। जो अब बिलकुल नहीं है, ये मेरा चौथा शिविर है इसे मैं समझकर चलते रहूंगा तथा समाज को भी अपने जो कुछ भी समझा हूं, उसे बांटता रहूंगा।

② रमाकान्त S/o जियारखन → मैं जीवन विद्या के सम्बन्ध में ~~सिखा~~ सिखा समाज व्यवस्था, परिवार व्यवस्था स्वयं में व्यवस्था, अस्तित्व व्यवस्था, नियम, न्याय को समझकर जीना सीखा तथा जीवन विद्या सिखने के पहले मैं नासमझ के कारण किसी के लिए क्रोधित हो जाता था, अब नहीं होता हूं. पहले मैं द्वेष या घृणा का भाव रखता था, अब नहीं है। इस विद्या को दूसरे को भी समझाऊँगा।

③ मनीष S/o मुनीराम :→ मैं जीवन विद्या समझकर मेरे में यह परिवर्तन हुआ कि पहले क्रोध करता था वह नहीं ~~हुआ~~ है, दूसरे का बुराई करता था, वह अब नहीं करूँगा, सभी से मित्रता के भाव पर जीना सिखा कोई भी गलत रास्ते पर चलरहा है उसे समझाना सिखा नियम, न्याय, धर्म, स्वयं का व्यवस्था को परिवार के सम्बन्धों को, समाज व्यवस्था को प्रकृति व्यवस्था को, अस्तित्व व्यवस्था को समझकर जीना समझा।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

वार्ड नं. 1

जीवन विद्या शिविर दिनांक 3-1-98 से 16-1-98 तक

① सुरेशकुमार वाधवानी S/o पेनुमलवाधवानी → शिविर बहुत अच्छा लगा ज्ञान को समझा शिविर और लगाना चाहिए मैं और भाग लेना चाहता हूँ।

② रफिकखान खांन S/o गफ्फूर खांन → शिविर बहुत अच्छा लगा प्रकृति को समझा पदार्थ अवस्था को समझा जीव अवस्था प्राण अवस्था ज्ञान अवस्था को समझा मैं और शिविर लेना चाहता हूँ।

③ ~~शिवर~~ शिवसिंग S/o हरिसिंग → जीवन विद्या शिविर अपने को अच्छा लगा शरीर को समझा जीवन को समझा परिवार मानव समाज को समझा मानव जमना को समझा शिविर और लगाना चाहिए।

④ लक्ष्मणप्रसाद S/o श्री शिवराम → शिविर अच्छा लगा परिवार समाज जो भी चिज करते हैं नासमझी से करते हैं जिससे दुख होता है प्रकृति को समझा स्वा. शरीर जीवन को समझा मैं और शिविर लेना चाहता हूँ।

⑤ सुखनंदन S/o जवनलाल → शिविर अच्छा रहा जिवन, शरीर को समझा मनुष्य नासमझी से गलति करते हैं जीवन विद्या को समझने के बाद अपना सही रास्ता मेंचलने के लिये समझदारी शांकाहारी, मांसहारी के बारे में समझा प्रकृति को समझा पदार्थ, प्राण, जीव ज्ञान को समझा जीवन विद्या शिविर लगाना चाहिए मैं और भाग लेना चाहता हूँ।

⑥ बहोरन S/o जगिरारथन → शिविर ठिक लगा मैं जीवन को समझा शरीर को समझा शिविर लगाना चाहिए।

⑦ अजयकुमार S/o महारथन लाल शिविर अच्छा लगा जीवन शरीर पदार्थ, प्राण जीव - ज्ञान अवस्था को समझा मैं गलत किया जो ना समझी से होता है मुझसे गलति सब नहीं होगा चाँद सुरज को समझा शिविर और लगाना चाहिए जीवन विद्या शिविर हर गांव तथा हर जेल में शिविर लगाना चाहिए।

⑧ पुनीराम S/o जगिरारथन → जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा मैं पदार्थ अवस्था प्राण जीव. ज्ञान. अवस्था और जीवन शरीर को अलग-अलग समझा प्रकृति में व्यवस्था को समझा मानव सम्बंध को समझा न्याय को समझा मांसाहारी तथा शांकाहारी को समझा शिविर और लगना चाहिए

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

यै मेरा तीरा शिविर है।

⑨ अनिल गोस्वामी S/o तिलका गोस्वामी → शिविर अच्छा लगा मैं पहले अवस्था प्राण. जीव ज्ञान अवस्था और जीवन शरीर को अलग-अलग समझा प्रकृति में व्यवस्था को समझा मानव सम्बन्ध को समझा प्राण को समझा मांसाहारी तथा शाकाहारी को समझा शिविर और लगना चाहिए।

⑩ मोहन लाल S/o ठाकुरराम → शिविर बढ़िया लगा जीवन शरीर परिवार समाज. को समझा मानव सम्बन्ध को न्याय को समझा मानव के प्रकार को समझा मैं और शिविर लेना चाहता हूँ।

⑪ लखनराम S/o केशवराम नायक वाड़ → शिविर अच्छा लगा मैं जीवन शरीर. प्राण. जीव. ज्ञान को समझा और शिविर लगना चाहिए।

⑫ मधुसुकदेव S/o श्री जोसेफ → शिविर मेरे को बहुत अच्छा लगा मैं मानव को समझा जीवन. शरीर. परिवार. समाज. प्रकृति को समझा पदार्थ. प्राण. जीव. ज्ञान को समझा मानव के पाँच प्रकार को समझा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूँ।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

नियम समझने में आया पांच प्रकार मानव समझने में

मूल्यांकन

जीवन विद्या शिविर वार्ड नम्बर 15 में 26-5-98 से 9-6-98 तक लगा

① अचलराम सतु S/o बिरसराम → शिविर अच्छा लगा जीवन, शरीर को अलग अलग समझा परिवार, समाज, व्यवस्था को समझा मैं और शिविर मे भाग लूंगा।

② आभिरती S/o जनकु → शिविर अच्छा लगा मैं परिवार समाज को समझा और प्रकृति को समझा मैं शिविर मे और भाग लूंगा।

③ पिंकु शुरेखा S/o मन्नु लाल → शिविर अच्छा लगा मैं प्राकृतिक नियम और शरीर जीवन को अलग समझा।

④ अजोरी S/o सुरुराम → अच्छा लगा मैं प्रकृति नियम सामाजिक नियम और बौद्धिक नियम को समझा मैं और शिविर मे भाग लूंगा।

⑤ संतोष S/o तिकाराम → शिविर अच्छा लगा मैं और शिविर मे भाग लूंगा

⑥ हरिशंकर S/o रतनु → शिविर अच्छा लगा प्रकृति नियम को समझा जीवन शरीर को अलग अलग समझा परिवार मे व्यवस्था को समझा।

⑦ अवधराम S/o राम दयाल → शिविर अच्छा लगा शरीर जीवन को अलग अलग समझा मैं समझ गया।

⑧ राजाराम S/o मुकुत राम → शिविर अच्छा लगा जीवन शरीर को समझा प्रकृति को समझा समाज परिवार को समझा मैं और शिविर मैं भाग लेना चाहता हुँ

... शिविर और आभारी

⑨ बेनराम S/o बेशर :→ शिविर अच्छा लगा जीवन शरीर को समझा परिवार समाज को समझा मानव के पांच प्रकार को समझा मानव के सात सम्बन्ध को समझा है और शिविर में भाग लेना चाहता हु।

⑩ मिलाराम S/o कुदुराम :→ शिविर अच्छा लगा जीवन के बारे में समझा मानव के प्रकार को समझा प्रकृति को समझा समाज को समझा है और शिविर में भाग लेना चाहता हु।

⑪ रमाकांत S/o शिवराखन :→ शिविर अच्छा लगा जीवन को समझा परिवार को समझा समाज को समझा मानव के सम्बन्ध को समझा मूल्य को समझा देश स्थिति परिस्थिति को समझा है और शिविर में भाग लेना चाहता हु।

⑫ द्वारिका S/o लखहारामु :→ शिविर अच्छा लगा परिवार को समझा जीवन और शरीर को अलग अलग समझा मूल्य को समझा नियम को समझा जीवन चक्र को समझा है और शिविर में भाग लेना चाहता हु।

⑬ मायादास S/o पचकौड़ :→ शिविर अच्छा लगा मैं जीवन शरीर को अलग अलग समझा मैं पांच कर्म इन्द्रिय पाँच ज्ञान इन्द्रिय को समझा पाँच अवस्था को समझा मैं नियम को समझा ① प्राकृतिक नियम ② समाजिक नियम ③ बौद्धिक नियम को समझा शिविर में और भाग लेना चाहता हु।

जीवन विद्या शिविर वार्ड नं० 16 (सरस्वती) दिनांक 14-5-98 से 25-5-98 तक

① कामदास S/o पचकौड़ :→ जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा, दव स्थिति / परिस्थिति में, स्वयं, शरीर, परिवार, समाज, प्रकृति तथा अस्तित्व में जीना समझा, मानवीय व्यवहार तथा नियम को ठीक-ठीक समझा हूँ। जो मैं समझा हूँ उसे अपने ग्राम में लोगों को समझाऊंगा। और शिविर लगना चाहिए ये मेरा दूसरा शिविर है और भी शिविर में फिर भाग लूँगा।

② चंदराम S/o दलहूराम :→ जीवन विद्या शिविर बहुत ही अच्छा लगा जीवन में व्यवस्था तथा व्यवहार को समझा, शरीर और जीवन दोनों के अन्तर को समझकर मानव का अर्थ समझा, मानव प्रकार को समझा और शिविर हमेशा लगना चाहिए तथा मैं फिर शिविर में भाग लूँगा।

③ सत्यप्रकाश S/o रेशमलाल :→ शिविर अच्छा लगा, जीवन को समझा हूँ। शरीर, समाज, परिवार में जीना सिखा और शिविर लगना चाहिए तथा मैं शिविर में फिर से भाग लूंगा।

④ गचपाल S/o इतवारी :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा, परिवार, समाज, स्वयं, शरीर में जीना समझा, न्याय, नियम मानव के प्रकार समझा, तथा मैं जो समझा हूँ, उसे अपने शब्द से औरों को समझाऊंगा। और शिविर लगना चाहिए तथा मैं फिर से शिविर में भाग लूंगा।

⑤ गुरुप्रसाद S/o श्यामचंद :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा, परिवार, समाज प्रकृति, शरीर तथा स्वयं में जीना सिखा, संबन्धों के विषय में समझा, संसार दो बातों में होती है को समझा (मैं चाहता क्या हूँ तथा उसे पाने का उपाय क्या है) इसके बारे में समझा, मानव के प्रकार को भी समझा, शरीर और

जीवन के अन्तर को समझा हूँ और शिविर लगना चाहिए तब मैं फिर से शिविर में भाग लूंगा।

⑥ संतोष कुमार S/o खीजनराम :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा, जीवन के आयाम जानना, मानना, पहचानना तथा निर्वाह करना को समझा, अपने चाहत तथा उसे पाने का रास्ता समझा हूँ, मैं सुख चाहता हूँ। न्याय समझकर स्वयं में जीना, समाज व्यवस्था को समझा, शिविर लगना चाहिए, मैं फिर शिविर में भाग लूंगा।

⑦ मनोज कुमार S/o श्रीराम :→ जीवन विद्या शिविर बहुत अच्छा लगा, जीवन और शरीर में अंतर, समाज व्यवस्था को समझा, मैं सुख चाहता हूँ, पाने का उपाय है - परिवार, समाज, प्रकृति, स्वयं में जीने से है जिसे मैं समझा हूँ। और शिविर लगना चाहिए तब मैं फिर से शिविर में भाग लूंगा।

⑧ बंशीलाल S/o द्वारिकाप्रसाद :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा, पांच ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय को समझा, समाज, जीवन में जीना सिखा तथा समाज व्यवस्था को समझा हूँ, मानवीय व्यवस्था तथा नियम को समझा हूँ, और शिविर लगना चाहिए, मैं फिर से शिविर में भाग लूंगा।

⑨ रामलाल S/o हीरासिंह :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा, शरीर, जीवन, समाज, में जीना सिखा तथा समाज व्यवस्था को समझा हूँ, शिविर और लगना चाहिए शिविर निरंतर चलना चाहिए, मैं फिर से शिविर में भाग लूंगा।

⑩ सिकन्दर S/o दाऊ मार्टिन :→ ये शिविर मेरा तीसरा शिविर है। मेरे व्यवहार में परिवर्तन हुआ, पहले गाली-गलौच करता था अब

नहीं करता हूं। पहले तम्बाखू खाता था. जो अब छुटगया। पहले बातों - बातों में नाराज होता था. अब सहन की क्षमता हुआ, जो मैं समझा हूं, उसे औरों को भी समझाऊंगा। और शिविर निरंतर चलना चाहिए तथा मैं फिर से भाग लेता रहूं।

(11) हरप्रसाद S/o भूरवन लाल :→ ये मेरा तीसरा शिविर है पहले क्रूरता स्वभाव था, अब नहीं है। पहले ~~बिड़ि~~ बीड़ि पीता था, जिसे छोड़ दिया पहले दूसरे के सामान में लालच करता था, अब लालच बीलकुल नहीं करता हूं। अपने व्यवहार का परिवर्तन करके जीवन विद्या गीत छत्तीसगढ़ी में रचना कर रहा हूं और शिविर लगना चाहिए, फिर मैं शिविर में भाग लूंगा जिससे और योग्यता बढ़ेगा।

मूल्यांकन - वार्ड नं० 14 (गोंडा)
दिनांक 13-6-98 से 29-6-98 तक

① महेन्द्र चौबे S/o श्रीरामचन्द्र चौबे :→ जीवन विद्या शिविर अच्छा लगा जीवन अमर है, शरीर साधन है, जीवन साधक है नियम समझ में आया पांच प्रकार मानव समझ में आया और शिविर में भाग लूंगा।

② चिन्ताराम S/o अवधराम → शिविर अच्छा लगा ये मेरा तीसरा शिविर है, जीवन साधक है जीवन में पांच अक्षय बल है। पांच अक्षय शक्ति है सुख समझ में आया परिवार में जीना समझा और शिविर में मैं भाग लूंगा।

③ रोहितकुमार S/o धरम → शिविर अच्छा लगा परिवार में जीना समझा समाज में जीना समझा प्रकृति को समझा मेरे को शिविर अच्छा लगा ये मेरा दूसरा शिविर है।

④ अरुणकुमार S/o गंगाराम → शिविर बहुत अच्छा लगा जीवन समझ में आया शरीर को अलग-अलग समझा परिवार को समझा समाज को समझा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूँ मैं हरवाले में जेल आया हूँ।

⑤ सोहन प्रसाद S/o गरिबा कावले → शिविर अच्छा लगा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूँ। मैं जीवन शरीर को अलग-अलग समझा समाज, समाज को समझा परिवार को समझा मानव प्रकार को समझा प्रकृति को समझा जीवन-चक्र को समझा जीवन को आजतक खोज रहे थे जिसे आज वो को प्राप्त हुआ हमारे जीवन आज तक अंधकार में थे अब जीवन विद्या पाकर मुझे बहुत प्रकाशित होगई।

⑥ भागीरथी S/o जगतु → शिविर अच्छा लगा शरीर जीवन को समझा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूँ।

⑦ अचलराम S/o तिरथराम → शिविर अच्छा लगा जीवन को निरंतर सुख चाही शरीर को सिमित सुविधा चाही मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूँ शिविर और लगना चाहिए। ये मेरा दूसरा शिविर है।

⑧ राजाराम S/o मुकुन्दराम → शिविर अच्छा लगा जीवन शरीर को अलग-अलग समझा सुख को समझा जो जीवन को चाही सुविधा शरीर को चाही और शिविर लगाना चाहिए ये मेरा तीसरा शिविर है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

(9) रामसाय S/o बलदेव → शिविर अच्छा लगा मुझे समाज में जीना समझ में आया परिवार, समझ में आया शरीर को व जीवन को अलग-अलग समझा। शिविर और लगना चाहिए मैं और भाग लेना चाहता हूँ।

(10) चैतराम S/o सुखरन → शिविर अच्छा लगा समाज को समझा परिवार को समझा जीवन, शरीर, को अलग-अलग समझा मानव के पाँच प्रकार को समझा प्रकृति को समझा।

(11) चन्दराम S/o छेदुलाल → शिविर अच्छा लगा शरीर, जीवन को अलग-अलग समझा ज्ञान को समझा परिवार, व्यवस्था को समझा समाज व्यवस्था को समझा जिसे हम समझ कर भोग अन्धकार में अब नहीं डूबेंगे। शिविर हमेशा लगना चाहिए।

(12) नन्कुराम S/o चतुरसिंग → शिविर अच्छा लगा जीवन को समझा शरीर को समझा, ज्ञान को समझा शिविर निरंतर लगना चाहिए।

(13) रामचरन S/o इन्द्राम → शिविर अच्छा लगा शरीर को समझा ज्ञानेन्द्रिय को समझा परिवार को समझा, समाज को समझा पेड़ पौधा को समझा पदार्थ अवस्था को समझा जीवन को सुरक्षा शरीर त्वचा, मलतंत्र को समझा पशु को समझा शिविर हमेशा लगना चाहिए मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूँ।

(14) मंगलुराम S/o महेशराम → शिविर अच्छा लगा जीवन शरीर को समझा शिविर और लगना चाहिए।

(15) दुखेराम S/o चैतराम → शिविर अच्छा लगा मानव संबंध को समझा मैं अब क्रोध नहीं करूँगा, परिवार को समझा व्यवहार को समझा न्याय को समझा, और शिविर लगना चाहिए मैं और भाग लेना चाहता हूँ।

(16) बिसनुराम S/o जनकराम → शिविर अच्छा लगा समाज को समझा परिवार को समझा जीवन शरीर को समझा प्रकृति को समझा, मानव के पाँच प्रकार को समझा, मानव के साथ सम्बन्ध को समझा और शिविर लगना चाहिए मैं और भाग लेना चाहता हूँ।

(17) चोलीराम S/o नन्जीरपा → शिविर अच्छा लगा जीवन शरीर को समझा, मैं और भाग लेना चाहता हूँ।

(18) छोटेलाल S/o सुरतसिंग → शिविर अच्छा लगा जीवन को निरंतर सुख चाहिए शरीर को सीमित सुविधा चाहिए

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

मांसाहारी शाकाहारी को समझा जीवन चक्र को
समझा मैं और शिविर में भाग लेना चाहता हूँ।

(19) नरसदास S/o कुम्हार → शिविर अच्छा लगा जीवन शरीर को अलग-
अलग समझा परिवार, व्यवस्था, समाज, व्यवस्था
को समझा प्रकृति व्यवस्था को समझा, नियम को
न्याय को समझा मैं और शिविर में भाग
लेना चाहता हूँ तथा शिविर हमेशा लगना चाहिए।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1. गणेश
2. मोहनराम - 26 - ठेकेदार (बिजली) 12वीं - [illegible]
3. भैयाराम -
4. शिवरतन - -
5. पहेलीराम -
6. महेन्द्र मोर्य - 51, एम.ए. [illegible], बाहर से अच्छा लगता है। [illegible] बैठकर अच्छा बोलते हैं सोचते हैं, यह अच्छा लगता
7. [illegible] - 30 - [illegible] - 4 था। [illegible] व्यवहार में निष्ठा। [illegible] आते हैं क्योंकि [illegible] जाते हैं)
8. चिंतामणी - 45 - 5वीं (10 माह से) [illegible]। [illegible] (इन का कार्य।
9. [illegible] - 25 - [illegible] (कुछ दिन से मजदूरी) बाहर पहले अच्छा नहीं लगता था अब यहाँ भी अच्छा नहीं लगता है। बाहर भी [illegible])
(10) राजकुमार - 19 - 10वीं बाहर अच्छा लगता था क्योंकि बाहर [illegible] रहते हैं सबके साथ रहता हूँ
(11) जीवन - 42 - पहला - (5½ माह)
(12) अवधेश कुमार - ~~[illegible]~~ कुंवारा था। (कर दिया नौकरी)
(13) रामेश्वर - 5-6
(14) सीताराम - जोधपुर
(15) श्यामनंदन - 29, B.Sc., [illegible]
(2½ माह)
(16) शिवकुमार - 35 - (अहिंसा)।
(17) [illegible] - [illegible] (मजदूरी), 35. [illegible]
(20) [illegible] - 35 - (5वीं) (97 से [illegible])
21. [illegible] 36 - [illegible] (3 माह) [illegible]
(22) मुरारी - [illegible]
(23) विष्णु प्रसाद - [illegible] ठीक रहता है।

गणेशराम - ~~अब~~ अभिरुचियों का मूल्यांकन (स्वयं द्वारा)

मन चंचल होता है। इसको नियन्त्रित करने की आवश्यकता है। सही समझ के आधार पर मन को नियन्त्रित करना समझ में आया। इस आधार ~~व~~ मुझमें परिवर्तन हुए ~~वो~~ इस प्रकार हैं -

1. नशीले पदार्थों व मांस का सेवन न करना।
2. ~~किसी~~ सबके साथ एक जैसा आदर पूर्वक व्यवहार करना।
3. ~~जो~~ जेल में दी गयी जिम्मेदारियों को इमानदारी से निभाना।

हरनारायण सिदार -

मैं अपने आप को अकेला महसूस करता था और ऐसा लगता था दुनिया में मेरा कोई नहीं है ऐसा सोचकर हमेशा दुखी रहता था। जीवन विद्या शिविर के बाद पता चला कि मैं और मेराशरीर अलग - अलग ~~वस्तु~~ सच्चाई है। शरीर का सुख क्षणिक है और जीवन की समझ से ही निरंतर सुख मिल सकता है। जीवन विद्या से सभी समस्याओं का निराकरण संभव है। अब मैं ~~पहले से~~ सुखी हूं और दूसरों को भी सुखी करने का प्रयास करता हूं।

हरप्रसाद:

21-8-98
27-8

जीवन विद्या

-श्री साधन कुमार भट्टाचार्य

आज का मनुष्य एक अन्धकार में जीवन व्यतीत कर रहा है उसकी यह मान्यता है कि मैं समझदार हूँ परन्तु यदि उससे पूछा जाता कि "मैं" का क्या अर्थ है!- व समझदार होने के लिए किन-किन बातों का होना आवश्यक है इसके लिए "मैं" "अहंकार" के अर्थ को व्यक्त करता है व समझदार के लिए जिन बातों की आवश्यकता है इनके बारे में जानने कि कभी कोशिश नहीं किये और "बोलता है कि मैं समझदार हूँ।

इसका तात्पर्य यह है कि मैं अर्थात "जीवन" जो स्वयं को पहचानने में असमर्थ है वह क्या समझदार हो सकता है? क्या वह दूसरों को समझदार बना सकता है इसी को ही अंधकार में जीवन व्यतीत करने की संज्ञा दिया गया है!

इसी बात को आगे बढ़ाते हुए श्री भट्टाचार्य जी हमें "जीवन विद्या" से अवगत करते हुए बोले कि "सबसे पहले स्वयं अर्थात मैं (जीवन) को समझना यदि आप स्वयं (जीवन) को नहीं समझते है तो आप कभी भी न समझदार कहला सकते और न "सुख" की अनुभूति प्राप्त कर सकते -

मनुष्य का अध्ययन :- 'मैं का अध्ययन'

मनुष्य का पहला लक्ष्य क्या है? "आज लोगों की धारणा है कि "सुख" प्राप्ति ही मनुष्य का पहला लक्ष्य है परन्तु "सुख" क्या है का इनके पास कोई जवाब नहीं है।

इसके सम्बन्ध में भट्टाचार्य जी बताये कि "मनुष्य का पहला लक्ष्य स्वयं पर विश्वास करना" यदि स्वयं पर विश्वास नहीं तो आप कहीं भी

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

न लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे और न ही सुख की प्राप्ति होगी तो हमें जीवन जीने करने का क्या अर्थ है।

२. मनुष्य की आवश्यकताएं क्या है -? इसके लिए लोगों धारणा है कि मनुष्य की आवश्यकताएं अनंत है इस बात को स्पष्ट करते हुए बोले कि मनुष्य की आवश्यकता दो है
(i) भौतिक (ii) अभौतिक
भौतिक आवश्यकता :- शरीर के लिए है
अभौतिक आवश्यकता :- जीवन के लिए क्योंकि वह कल्पना करता है
अभौतिक आवश्यकता को पुनः दो भागों में बांटा जाता है (a) मानसिक (b) बौद्धिक ये दोनों का महत्वाकांक्षा [illegible] है

३. मनुष्य में कितनी क्रिया होती है ? हमारे पास इसका जवाब नहीं रहा ; इसके सम्बन्ध में बताए कि मनुष्य में दो क्रिया होती है
(i) स्वतः (स्वयं) (ii) जानबूझकर करने वाली क्रिया
(i) स्वतः :- ये क्रिया शरीर के लिए इसके शरीर के फेफड़े व धड़कनों की क्रिया स्वतः होता
(ii) जानबूझकर करने वाली क्रिया :- "मन" के अधीन है (जीवन)
(a) द्वारा होता है
ex :- खाना खाना, ये शरीर से नहीं जानबूझकर करने वाली क्रिया है)

इसके हमें जीवन के बारे में यह जान सकते हैं कि
(1) जानबूझकर क्रिया गया कार्य जीवन है
(2) जिम्मेदारी लेना जीवन है

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

① जीवन के विभिन्न कोणों स्वीकार्यता हो
(ii) जीवन शरीर का निर्णय करता है

<u>जीवन (निर्णय करता)</u>

स्वीकार — अस्वीकार -

सुख — दुःख

(आराम

① व्यवसाय (ii) व्यवहार (iii) विचारशीलता

जीवन में कितने प्रकार का कार्य करता है इसमें हमने कभी ध्यान नही दिए हम करते है और हम कार्य करते हैं इसका परिणाम कभी सही व कभी गलत आता है इसके गलत आने का कारण होता है समझदारी कि कमी है क्यो कि कोई भी मनुष्य कभी भी समझदार नही हो सकता जब वह इसमें निम्न बातों को जानने में असमर्थ

① जानना :- ये स्थायी होता है

② मानना :- स्थायी नही है हर समय बदलता रहता है. मन से मानने वाला चीज है सब जगह अलग-अलग होता है।

③ पहचानना :- जानने के बाद मानने के बाद पहचानना

④ निर्वाह करना = जानने के बाद मानना इसके बाद पहचानना इन तीनों को मिला कर समझदारी होती है यह समझदारी ही निर्वाह करना है।

मनुष्य अपना मूल्यांकन कैसे करता है।

मनुष्य कभी भी अपना मूल्यांकन किया नहीं क्योंकि उसे यह मालूम ही नहीं की मूल्यांकन कैसे किया जाता है इसकी क्या विधि है। मनुष्य हमेशा दूसरो का मूल्यांकन किया है जिससे की आज वह दुखी है।

इस संबंध में यह जानकारी दी गई की मनुष्य चार प्रकार से मूल्यांकन कर सकता है।

(1) स्वयं का मूल्यांकन (2) दूसरों का मूल्यांकन
(3) स्वयं के सामने दूसरों का (4) दूसरों के सामने स्वयं का

इन चा० अपना मूल्याकंन व दूसरों के द्वारा किया गया मूल्यांकन जब एक हो तो सुख की अनुभूति होती है।

जीवन में पाँच प्रकार के अक्षय बल व पाँच प्रकार के अक्षय शक्ति है क्रियाशील है।

अक्षय बल	क्रिया	अक्षय शक्ति	क्रिया
1) मन	आस्वादन	आशा	चयन
2) वृत्ति	तुलन	विचार	विश्लेषण
चित्त	चिंतन	इच्छा	चित्रण
बुद्धि	बोध	ऋतंभरा	संकल्प
आत्मा	अनुभव	प्रमाणिकता	प्रमाण

इनकी सामान्य धारणा यह है कि बल व शक्ति एक यह धारणा गलत है।

बल = जो स्थिति इकाई का नाम बल है
शक्ति :- स्थिति के साथ गति है वह शक्ति है।

(1) आस्वादन :- पाँच ज्ञानेन्द्रिया है इन इन्द्रियों से जो अनुभव करते है और हमें अच्छा लगता है उसे आस्वादन कहते है।

(2) स्वीकार व अस्वीकार दोनों हो सकते है।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

इसका संबंध मन से होता है।
आश्वादन 3 प्रकार के होते है।
① रुचि मूलक आश्वादन है। इन्द्रीयों से संबंधित है
② मूल्य मूलक आश्वादन :- इसमें इन्द्रियों का कुछ संबंध नहीं होता जैसे :- सम्मान आदि
③ लक्ष्य मूलक आश्वादन :- मनुष्य का लक्ष्य सुखी होना

② चयन (आशा शक्ति) :→ चयन क्रिया का नाम ही आशा है

③ वृत्ति :- (क्रिया - तुलन) ; हम छः प्रकार से तुलना करते हैं

① प्रिय या अप्रिय :- इंद्रियों से जो आश्वादन है उसे प्रिय या अप्रिय में रखते है।
② हित या अहित :→ शरीर के स्वास्थय के आधार पर
③ लाभ या हानि :→ भौतिक वस्तु या सेवा के आधार पर
④ न्याय या अन्याय :→ व्यवहार के आधार पर
⑤ धर्म या अधर्म :→ जिस चीज से समाधान होता है धर्म है। जिससे समस्या पैदा होती है वह अधर्म
⑥ सत्य या असत्य :→ अस्तित्व के सापेक्ष

④ विचार (विशलेषण क्रिया) :→ किसी चीज का अलग-अलग ~~जानकर~~ तुलना करना करना विशलेषण है। विचार 3 आधार पर चलता है
① क्रिया के आधार पर ② समय के आधार पर ③ निर्णय के आधार पर।

⑤ इच्छा शक्ति (चित्रण क्रिया) :- यह 2 प्रकार के होते है
① चित्र ग्रहण करना ② चित्र रचना

इन ~~[illegible]~~ पांचों को मिलाकर जो बनता है उसका नाम कल्पना है।

हमें मनुष्य के लक्ष्यों के बारे में ~~अ~~ जानकारी मिली
(1) समाधान :- (1) संबंधों को जानना (2) स्वयं को जानना
(3) जीवन को जानना (4) विकास की प्रक्रिया को
जानना।
(2) समृद्धि (3) अभय ~~[illegible]~~ :- इसके 3 प्रकार
बताये गये :-
(1) प्राकृतिक भय (2) पाशवीक भय (3) अमानवीयता का भय
भय के 4 प्रकार :-> (1) प्राण भय (2) धन भय
(3) मान भय (4) पद भय

अक्षय बल व अक्षय शक्ति के सम्बन्ध में यह
जानकारी दी गई की
आत्मा - ↓ प्रामाणिकता 3 - आनंद
बुद्धि - ↓ ऋतम्भरा
चित्त - ↓ इच्छा 3 - संतोष
वृत्ति - ↓ विचार 3 - शांति
मन - ↓ आशा 3 - सुख

(B) आस्तित्व

अस्तित्व का अर्थ "होना" होता है पर हमें
यह मालूम नही है कि प्रकृति इसका भाग (अंश)
व सत्ता जो इसका एक भाग है जिसके पक्ष
मे हमें कोई जानकारी नही

प्रार्थी
अजियान आशा
[illegible] राजधारा बिलासपुर (म.प्र.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

जीवन विद्या शिविर

दिनांक 25/6/97 से 27/6/97 तक इमलीपारा में जीवनविद्या शिविर में निम्न कार्यकर्ता सम्मिलित होंगे।

स्थान - ग्रामसेना संस्था, इमलीपारा, बिलासपुर

दिनांक - 25/6/97 से 27/6/97.

समय - 2 बजे से

कार्यकर्ता का नाम -	25/6/97 से 27/6/97 हस्ताक्षर हस्ताक्षर हस्ताक्षर
(1) विजयालक्ष्मी	Ikseone
(2) उषाकिरण	Sophy
(3) सफीरा फिरदोश	
(4) रंजना भास्कर	25/6/97
(5) नीलकंठ शर्मा	नीलकंठ शर्मा
(6) जसपाल	
(7) शान्तिदास	
(8) प्रजापति	Solanki
(9) विरेन्द्र	
(10) निलासोनी	
(11) सतीश शुक्ला	
(12) सरोज चौरसिया	